@Qpatrika | @qaumipatrika hindi | instagram.com/qaumipatrika

कौमी पत्रिका
राष्ट्रीय दैनिक अखबार

दिल्ली-हरियाणा-पंजाब-चण्डीगढ़-उत्तर प्रदेश से प्रसारित
मंगलवार, 19 अगस्त 2025

VISIT: www.qaumipatrika.in
Email: qpatrika@gmail.com

R.N.I. No. UP-HIN/2007/21472 सम्पादक - गुरचरन सिंह बब्बर वर्ष 18 अंक 279 qaumipatrikahindi 011-41509689, 23315814, 9312262300 गाजियाबाद संवत् 2077-78, पेज (12) मूल्य 3.00 रुपये (हवाई शुल्क 50 पैसे अतिरिक्त)

पंडित नेहरू की सबसे बड़ी भूलों में से एक थी 1960 की सिंधु जल संधि : जेपी नड्डा

एजेंसी
नई दिल्ली। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद भारत ने पाकिस्तान से सिंधु जल समझौता सस्पेंड कर दिया। इसे लेकर भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष और केंद्रीय मंत्री जेपी नड्डा ने कहा कि 1960 की सिंधु जल संधि, पूर्व प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की सबसे बड़ी भूलों में से एक थी, जिसमें राष्ट्रीय हितों को व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं की बलि चढ़ा दिया गया था। जेपी नड्डा ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर पोस्ट कर कहा कि देश को यह जानना चाहिए कि जब पूर्व पंडित नेहरू ने पाकिस्तान के साथ सिंधु जल संधि पर हस्ताक्षर किए थे, तो उन्होंने एकतरफा तौर पर सिंधु बेसिन का 80 प्रतिशत पानी पाकिस्तान को सौंप दिया था, जिससे भारत के पास केवल 20 प्रतिशत हिस्सा रह गया था। यह एक ऐसा फैसला था, जिसने भारत की जल सुरक्षा और राष्ट्रीय हितों को हमेशा के लिए खतरे में डाल दिया था। उन्होंने आगे कहा कि सबसे भयावह पहलू यह था कि उन्होंने यह काम भारतीय संसद से परामर्श किए बिना किया था। इस संधि पर सितंबर 1960 में हस्ताक्षर किए गए थे। हालांकि, इसे संसद में केवल दो महीने बाद नवंबर में और वह भी केवल दो घंटे की औपचारिक चर्चा के लिए रखा गया था।

उन्होंने कहा कि इतिहास को इसे वही कहना होगा जो यह था, नेहरू का हिमालयन ब्लंडर। एक ऐसा प्रधानमंत्री जिसने संसद की अवहेलना की, भारत की जीवनरेखा को दांव पर लगा दिया और पीढ़ियों तक भारत के हाथ बांध दिए। आज

भी, अगर प्रधानमंत्री मोदी का साहसिक नेतृत्व और 'प्रथम' के प्रति उनकी प्रतिबद्धता न होती, तो भारत एक व्यक्ति के गलत आदर्शवाद की कीमत चुकाता रहता। सिंधु जल संधि को स्थगित करके

- **सिंधु जल संधि को स्थगित करके प्रधानमंत्री मोदी ने कांग्रेस द्वारा की गई एक और गंभीर ऐतिहासिक भूल को सुधारा है।**

प्रधानमंत्री मोदी ने कांग्रेस द्वारा की गई एक और गंभीर ऐतिहासिक भूल को सुधारा है। नड्डा ने आगे कहा कि पंडित नेहरू ने अपनी पार्टी के सहयोगियों के कड़े विरोध के बावजूद सिंधु जल संधि को भारत के लिए लाभकारी बताते हुए उसका बचाव किया। अगर इतना ही काफी नहीं था, तो उन्होंने यह पूछकर देश की पीड़ा को कम आंका, 'किसका बंटवारा? एक बाल्टी पानी का?' उन्होंने स्वीकार किया कि उन्होंने भारत के महत्वपूर्ण संसाधनों को सौंपने वाली अंतरराष्ट्रीय संधियों के मामले में संसदीय अनुमोदन की परवाह किए बिना ही यह निर्णय ले लिया था। चोट पर नमक छिड़कते हुए, उन्होंने राष्ट्रीय हित की बात करने वाले साथी सांसदों की राय को 'बहुत संकीर्ण' बताकर उनका उपहास किया। उन्होंने कहा कि एक युवा सांसद, अटल बिहारी वाजपेयी ने नेहरू की सिंधु जल संधि की कड़ी आलोचना की। उन्होंने चेतावनी दी कि प्रधानमंत्री का यह तर्क कि पाकिस्तान की अनुचित मांगों के आगे झुकने से मित्रता और सद्भावना स्थापित होगी, त्रुटिपूर्ण है। उन्होंने तर्क दिया कि सच्ची मित्रता अन्याय पर आधारित नहीं हो सकती। अगर पाकिस्तान की अनुचित मांगों का विरोध करने से रिश्ते तनावपूर्ण होते हैं, तो ऐसा ही हो। अटल ने राष्ट्रीय हित को हर चीज से ऊपर रखने में स्पष्टता दिखाई थी। जेपी नड्डा ने आगे कहा कि कांग्रेस के एसी गुहा ने भारत के विदेशी मुद्रा संकट के दौरान पाकिस्तान को 83 करोड़ रुपए स्टर्लिंग में भुगतान करने की आलोचना की। उन्होंने इसे 'मूर्खता की पराकाष्ठा' बताया। गुहा ने चेतावनी दी कि जिस तरह से संसद की अवहेलना की गई है, 'यह एक अधिनायकवादी सरकार का रवैया हो सकता है।' उन्होंने यह भी सवाल उठाया कि 'जब पाकिस्तान भारत के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध रखने के मूड में नहीं है, तो भारत को पाकिस्तान को खुश करने के लिए इतनी बड़ी कुर्बानी क्यों देनी चाहिए?

उन्होंने आगे कहा कि यह इतनी बड़ी भूल थी कि पंडित नेहरू की अपनी पार्टी के सांसदों ने भी इसका कड़ा विरोध किया। उन्होंने बहुत कुछ किया, बदले में कुछ भी नहीं पाया। कांग्रेस के अशोक मेहता ने इस संधि की कड़ी आलोचना की और इसे देश के लिए 'दूसरे विभाजन' जैसा बताया। उनके शब्दों ने न सिर्फ उनकी अपनी पार्टी के भीतर, बल्कि पूरे विपक्ष और पूरे देश में नेहरू के पूर्ण समर्पण पर महसूस किए गए दुःख और सदमे को व्यक्त किया।

'दिल्ली पूरी तरह से सेफ ज़ोन में है': मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता

कौमी पत्रिका
नई दिल्ली, 18 अगस्त। दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने आज राजधानी में यमुना नदी और उससे सटे क्षेत्रों में बाढ़ प्रबंधन एवं तैयारियों की व्यापक समीक्षा की। मुख्यमंत्री का दौरा असीता घाट से प्रारंभ होकर यमुना छठ घाट, डीएम ईस्ट कार्यालय, 12 नंबर रेगुलेटर और कंट्रोल रूम तक चला। इस अवसर पर मुख्यमंत्री के साथ दिल्ली सरकार के कैबिनेट मंत्री प्रवेश साहिब सिंह भी मौजूद थे। मुख्यमंत्री ने कहा कि हथिनीकुंड बैराज से छोड़े गए पानी की मात्रा और ऊपरी यमुना क्षेत्र में भारी वर्षा को देखते हुए केंद्रीय जल आयोग द्वारा जारी की गई एडवाइ ?री के तहत दिल्ली में यमुना नदी का जलस्तर 206 मीटर तक पहुंचने की संभावना है मुख्यमंत्री ने बताया कि यमुना में इस समय एक लाख से अधिक क्यूसेक पानी छोड़ा जा रहा है, लेकिन वह बिना अवरोध व उतनी ही गति से आगे भी बढ़ रहा है, जबकि पहले ऐसा नहीं होता था, जिसके कारण जलभराव की स्थिति बनती थी। उन्होंने जानकारी दी कि हमारी सरकार ने इस बार यमुना के जलस्तर से जुड़े सभी पहलुओं की बारीकी से मॉनिटरिंग की है। लगातार विभागीय टीमें पानी की स्थिति, छोड़े गए पानी के डिस्चार्ज और उसके बहाव पर नजर बनाए हुए हैं। उन्होंने कहा कि अगस्त-सितंबर 2023 में दिल्ली ने एक अभूतपूर्व बाढ़ का सामना किया, जब यमुना का जलस्तर 208.6 मीटर तक पहुंच गया था और कई रिहायशी इलाके जलमग्न हो गए, जिससे जनजीवन बुरी तरह प्रभावित हुआ था। तब

नालों की डी-सिल्टिंग और बैराजों की व्यवस्थाएँ ठीक नहीं थीं, यहां तक कि आईटीओ बैराज के गेट भी बंद और जाम पड़े थे। लेकिन इस बार पिछले छह महीनों से लगातार काम करके आईटीओ बैराज के सभी गेट पूरी तरह से खोल दिए गए हैं और नालों की डी-सिल्टिंग पूरी होने से उनकी क्षमता भी बढ़ गई है। सरकार ने हर स्तर पर पूरी तैयारी कर रखी है। मुख्यमंत्री ने कहा कि दिल्ली सरकार ने इस वर्ष मानसून से पहले ही तैयारी को एक्शन मोड में डाल दिया है। जलभराव वाले प्रमुख इलाकों की पहचान कर वहां नोडल अधिकारी नियुक्त किए गए हैं। साथ ही पीडब्लूडी, सिंचाई एवं बाढ़ नियंत्रण विभाग और एमसीडी जैसे विभागों ने नालों की सफाई का काम भी तेज़ कर दिया है। पंप हाउस की जांच हो चुकी है और मोबाइल पंप भी तैनात किए गए हैं। उन्होंने कहा कि यदि थोड़ी बहुत समस्या आती भी है तो वह केवल फ्लड प्लेन क्षेत्रों तक ही सीमित रहेगी, क्योंकि वहां पानी आना स्वाभाविक है। ऐसे क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को प्रशासन ने पहले ही सचेत कर दिया है और उन्हें सुरक्षित स्थानों पर पहुँचाने के लिए आवश्यक इंतज़ाम कर दिए गए हैं। मुख्यमंत्री ने आश्वस्त किया कि शहर में कहीं भी बाढ़ जैसी स्थिति पैदा नहीं होगी। सभी विभाग 24 घंटे सतर्क रहकर काम कर रहे हैं और स्थिति पूरी तरह नियंत्रण में है। मुख्यमंत्री ने कहा कि दिल्लीवासियों को चिंता करने की आवश्यकता नहीं है, उनकी सुरक्षा हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। इसके लिए राहत और बचाव कार्यों के लिए 14 अहम जगहों पर नावों की तैनाती की गई है। साथ ही यमुना का पानी मुख्य सड़कों तक न पहुंचे और ट्रैफिक प्रभावित न हो, इसके लिए सिंचाई और बाढ़ नियंत्रण विभाग को सभी जरूरी कदम उठाने के निर्देश दिए गए है।

शेष पृष्ठ 3 पर

राधाकृष्णन ने की मोदी से मुलाकात

● कहा- उनके अनुभव से देश को होगा बहुत लाभ

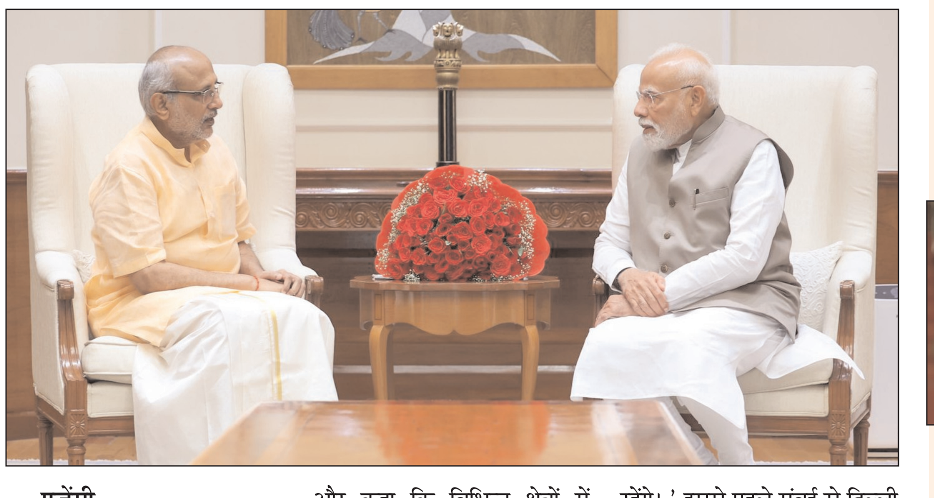

एजेंसी
नई दिल्ली। राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) के उप राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार और महाराष्ट्र के राज्यपाल सी पी राधाकृष्णन ने सोमवार को यहां प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से मुलाकात की।

श्री राधाकृष्णन आज ही, मुंबई से यहां पहुंचे। उन्होंने प्रधानमंत्री आवास जाकर श्री मोदी से मुलाकात की। श्री मोदी ने उन्हें राजग का उप राष्ट्रपति पद का प्रत्याशी बनने पर शुभकामनाएं दीं और कहा कि विभिन्न क्षेत्रों में उनके लंबे अनुभव से देश लाभान्वित होगा। प्रधानमंत्री ने इस मुलाकात के बाद एक्स पर लिखा, 'सी पी राधाकृष्णन जी से मुलाकात की। उनके राजग का उप राष्ट्रपति पद का प्रत्याशी बनने पर उन्हें शुभकामनाएं दीं। उनकी सार्वजनिक सेवाओं और विभिन्न क्षेत्रों का लंबा अनुभव देश को लाभ पहुंचायेगा। आशा करता हूं कि वह हमेशा इसी समर्पण और संकल्प के साथ देश की सेवा करते रहेंगे।' इससे पहले मुंबई से दिल्ली के इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर पहुंचने पर केंद्रीय मंत्रियों किरेन रिजिजू, प्रह्लाद जोशी, तथा भूपेंद्र यादव और केंद्रीय मंत्री एवं तेलुगूदेशम पार्टी के नेता के. राम मोहन नायडू ने उनका स्वागत किया। दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता, भारतीय जनता पार्टी के महासचिव विनोद तावड़े, दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा तथा कई अन्य नेता भी उनकी अगवानी के लिए मौजूद थे।

पुतिन ने पीएम मोदी से फोन पर बात की : अलास्का में ट्रंप से हुई मुलाकात के बारे में दी जानकारी

नई दिल्ली। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से फोन पर बातचीत की। इस दौरान पुतिन ने हाल ही में अलास्का में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप

के साथ हुई अपनी बैठक की जानकारी साझा की। वार्ता के दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने यूक्रेन संघर्ष का शांतिपूर्ण समाधान निकालने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि भारत इस दिशा में किए जा रहे हर सकारात्मक प्रयास का समर्थन करता है।दोनों नेताओं ने भारत और रूस के बीच रणनीतिक साझेदारी को और मजबूत बनाने की संभावनाओं पर भी चर्चा की और द्विपक्षीय संबंधों को नई ऊंचाई देने की प्रतिबद्धता दोहराई।

कृष्णा जन्माष्टी की शोभायात्रा के रथ में उतरा करंट, छह की मौत

हैदराबाद। राजधानी के रामंतपुर के गोकुलनगर में श्रीकृष्णा जन्माष्टमी के दिन शोभायात्रा के दौरान एक रथ के करंट की चपेट में आने मरने वालों की संख्या छह हो गई है। इस बीच राज्य सरकार ने मृतकों के परिजनों को पांच-पांच लाख रुपये की अनुग्रह राशि देने की घोषणा की है। दरअसल, श्रीकृष्णाजन्माष्टमीकेदिन रविवार की रात स्थानीय यादव संगम की ओर से एकशोभायात्रा निकाली गई थी। देर

रात 12.30 बजे शोभायात्रा में शामिल रथ को खींचने वाले वाहन के खराब होने के बाद कुछ युवकों ने हाथ से रथ को आगे खींचना शुरू किया। तभी रथ बिजली के तारों की चपेट में आ गया और वाहन में करंट प्रवाहित हो गया, जिसकी चपेट में नौ युवक आ गए। इनमें से पांच लोगों की मौत घटनास्थल पर ही हो गई। आज दिन में इलाज के दौरान अन्य एक घायल ने दम तोड़ दिया। इस प्रकार इस हादसे में अब तक छह लोगों की मौत हो गई है। अन्य घायलों को अस्पताल मेंभर्ती कराया गया है।

जिमेदारियां से भाग रहा है चुनाव आयोग : कांग्रेस

नई दिल्ली। कांग्रेस ने कहा है कि लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी जब वोट चोरी के खिलाफ बिहार में वोटर अधिकार यात्रा की शुरुआत कर रहे थे तो उसी समय चुनाव आयोग ने आरोपों का जवाब देने बजाय उनके सवालों को नकार दिया और जिम्मेदारी से भाग खड़ा हुआ है लेकिन सांसदों की उसकी गतिविधियों पर नजर है और उसके खिलाफ जरुरी कार्रवाई को लेकर कदम भी उठाया जा सकता है। कांग्रेस के गौरव गोगोई ने सोमवार को यहां कांस्टीट्यूशन क्लब में इंडिया गठबंधन के नेताओं के संवाददाता सम्मेलन में कहा कि चुनाव आयोग सवालों का जवाब देने की बजाय जिम्मेदारियों से भाग रहा है लेकिन सांसद उसकी गतिविधियों पर नजर रखेंगे और समय आने पर जरूरी करवाई को लेकर कदम भी उठाए जाएंगे। आयोग श्री गांधी तथा अन्य राजनीतिक दलो के नेताओं के सवालों के जवाब नहीँ दे पा रहा है और उल्टे राजनीतिक दलों पर सवाल उठा रहा है। आयोग जिम्मेदारियां से भाग रहा है और इसे स्वीकार नहीं किया जाएगा। उन्होंने कहा कि चुनाव आयोग को बताना चाहिए कि वह 45 दिन में मतदान के फुटेज डिलीट क्यों कर देता है। चुनाव आयोग ने अपनी प्रेस कॉन्फ्रेंस में निष्पक्ष चुनाव कराने की जिम्मेदारी को नकारा है। प्रेस कॉन्फ्रेंस में आयोग को अपनी कमियों को बताना चाहिए था और विपक्षी सवालों का जवाब देना चाहिए लेकिन उसने इसके विपरीत रानीतिक दलों पर ही सवाल उठाया और एक तरह से सवाल उठाने वाले दलों पर पर आक्रमण किया। सवाल था कि बिहार में हड़बड़ी में मतदाता सूची पुनरीक्षण क्यो हो रहा है, महाराष्ट्र में मतदाता कैसे बढ़े, आधार की प्रमाणिकता के खिलाफ क्यो है आयोग, इन सवालों का जवाब नही दिया गया है। चुनाव आयोग की प्रेस वार्ता से स्पष्ट है की आयोग में ऐसे अधिकारी काम कर रहे हैं।

'विपक्ष का एक ही राग अब्बा-डब्बा-जब्बा'

● वोट चोरी के आरोप पर भाजपा का पलटवार

एजेंसी
नई दिल्ली। भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता संबित पात्रा ने सोमवार को एक प्रेस कॉन्फ्रेंस कर विपक्ष पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि आज कई राजनीतिक दलों के नेता प्रेस कॉन्फ्रेंस कर रहे थे, लेकिन उनकी विश्वसनीयता और संवैधानिक संस्थाओं के प्रति उनका रवैया संदिग्ध है।

भाजपा प्रवक्ता संबित पात्रा ने कहा, 'आज मैं देख रहा था कि अनेक राजनीतिक पार्टियों के लोग बैठकर प्रेस वार्ता कर रहे थे। मैं पूछना चाहता हूं कि आपकी खंडपीठ बड़ी है, या सुप्रीम कोर्ट की खंडपीठ बड़ी है। जब सुप्रीम कोर्ट ने एसआईआर पर रोक नहीं लगाई है, तो आप कौन सी खंडपीठ हैं जो घोषणा कर रहे हैं कि चोरी हो रही है? ये दिखाता है कि संवैधानिक संस्थाओं के साथ आप खिलवाड़ करते हैं।' उन्होंने कहा, 'सिर्फ चुनाव आयोग ही नहीं, देश की ऐसी कोई संवैधानिक संस्था नहीं बची है, जिस पर कांग्रेस परिवार और उनके इर्द-गिर्द घूम रहे परिवारों ने हमला न

किया हो। याद कीजिए, ये वही लोग हैं जिन्होंने सुप्रीम कोर्ट पर उंगली उठा दी थी। ये वही लोग हैं जिन्होंने भारत के आर्मी चीफ को 'सड़क का गुंडा' कहने की हिमाकत की थी। ये वही लोग हैं जो 'सर्जिकल स्ट्राइक', 'एयरस्ट्राइक' और 'ऑपरेशन सिंदूर' के बाद भारतीय सेना पर हमला करने से नहीं कतराते हैं और सबूत मांगते हैं।' भाजपा प्रवक्ता ने विपक्ष को अनाड़ी बताया और कहा कि भारत निर्वाचन आयोग ने रविवार को सभी मुद्दों पर विस्तार से जवाब दिया, लेकिन कुछ लोग ऐसे हैं जो इसे नहीं समझते हैं। वह (विपक्ष) खुद को खिलाड़ी समझते हैं, लेकिन मैं बताना चाहता हूं कि वह अनाड़ी हैं। वह चाहते हैं कि हिंदुस्तान के अंदर अफरा-तफरी का माहौल बने ताकि वह राजनीतिक लाभ उठा सकें। हर मुद्दे पर विपक्ष का सिर्फ एक ही राग अब्बा-डब्बा-जब्बा है।

> ● 'विपक्ष का एकमात्र लक्ष्य घुसपैठियों को बचाना है। इनका (कांग्रेस और उसके सहयोगियों का) मकसद घुसपैठियों को बचाना है।'

शुभांशु शुक्ला ने पीएम से की मुलाकात

● अंतरिक्ष यात्रा के बारे में दी जानकारी

एजेंसी
नई दिल्ली। अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आईएसएस) में जाकर इतिहास रचने वाले ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला ने सोमवार शाम को पीएम नरेंद्र मोदी से मुलाकात की। इस दौरान उन्होंने पीएम मोदी को अंतरिक्ष यात्रा के बारे में जानकारी दी। पीएम मोदी ने गले लगाकर शुभांशु शुक्ला का हौसला बढ़ाया। साथ ही उनकी उपलब्धि की सराहना की। इस दौरान शुभांशु शुक्ला ने पीएम मोदी को अंतरिक्ष यात्रा और उनके अनुभव के बारे में बताया। उन्होंने पीएम मोदी को अपने प्रयोगों से भी अवगत कराया। शुभांशु शुक्ला सुबह भारत लौटे थे। वतन वापसी पर उनका दिल्ली एयरपोर्ट पर ढोल नगाड़ों के साथ जोरदार स्वागत हुआ। केंद्रीय मंत्री जितेंद्र सिंह, दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता और इसरो प्रमुख वी नारायणन समेत बड़ी संख्या में लोग शुभांशु का स्वागत करने पहुंचे थे। शुभांशु की पत्नी कामना और बेटा कियाश भी उनका स्वागत करने के लिए एयरपोर्ट पर मौजूद थे।

पुतिन ने पीएम मोदी से फोन पर बात की : अलास्का में ट्रंप से हुई मुलाकात के बारे में दी जानकारी

नई दिल्ली। लोक सभा में वोट चोरी के मुद्दे पर विपक्षी दलों के सदस्यों के हंगामे के कारण सोमवार को कामकाज सुचारु रूप से नहीं हो सका और अपराह्न दो बजे के बाद कार्यवाही दिन भर के लिए स्थगित कर दी गयी। इससे पहले इसी मुद्दे पर विपक्षी दलों के सदस्यों के हंगामे के कारण कार्यवाही दो बार स्थगित करनी पड़ी थी। दो बार के स्थगन के बाद अपराह्न दो बजे जैसे ही सदन समवेत हुआ, अध्यक्ष ओम बिरला ने कहा कि सदन में अब अंतरिक्ष कार्यक्रम पर विशेष चर्चा होगी। इसी के साथ विपक्षी सदस्य शोरगुल करते हुए कांग्रेस, समाजवादी, द्रमुक और अन्य विपक्षी दलों के सदस्य सदन बीचोंबीच आ गये। कई सदस्य तख्तियां दिखा रहे थे, जिन पर वोट चोरी के विरोध में नारे लिखे थे। इसी बीच आसन पर श्री दिलीप सैकिया आ गये और शोरगुल के बीच ही उन्होंने विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री जितेन्द्र सिंह से चर्चा की शुरुआत करने को कहा। श्री सिंह ने हंगामा और शोरगुल के दौरान ही अपनी बात रखी। उनके वक्तव्य के बाद श्री सैकिया ने विपक्षी सदस्यों से कहा कि अंतरिक्ष जैसे महत्वपूर्ण विषय पर चर्चा हो रही है, वे अपने-अपने स्थानों पर जायें और चर्चा में शामिल हों। उन्होंने कहा कि सदस्य रोज-रोज शोरशराबा और हंगामा करते हैं, सदन में पोस्टर और बैनर लेकर आते हैं, यह उचित नहीं है।

'भारत की एकता को संविधान ने जोड़ा'

पूर्व सेना प्रमुख बोले- बांटने की ताक में बैठे दुश्मन

एजेंसी
मुंबई। पूर्व थलसेना प्रमुख जनरल मनोज मुकुंद नरवणे (सेवानिवृत्त) ने सोमवार को कहा कि भारत अपनी मूल संवैधानिक मूल्यों और साझा पहचान से एकजुट है, लेकिन दुश्मन ताकतें और स्वार्थी हित समाज को धर्म और जाति के आधार पर बांटने की कोशिश करेंगे। वह अपनी किताब 'कैंटोनमेंट कॉन्सपिरेसीज' के विमोचन के मौके पर बोल रहे थे। नरवणे ने कहा कि नागरिकों को ऐसी साजिशों को समझना होगा और एकजुट रहना होगा।जनरल नरवणे ने कहा कि संविधान ही भारत को एक साथ जोड़े हुए है और यही देश को आगे बढ़ा रहा है। इसमें न्याय, समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व जैसे मूल मूल्य शामिल हैं, जो भारत की

पहचान और मजबूती का आधार हैं। उन्होंने जोर देकर कहा कि अगर इन चार मूल्यों को बढ़ावा दिया जाए तो देश को कोई नुकसान नहीं पहुंचा सकता और भारत हमेशा मजबूत और एकजुट रहेगा।

अंदरूनी खतरे ज्यादा खतरनाक: पूर्व सेनाध्यक्ष ने कहा कि राष्ट्र बाहरी और भीतरी दोनों तरह की चुनौतियों का सामना करता है। लेकिन आंतरिक खतरे ज्यादा गंभीर होते हैं क्योंकि वे समाज में फूट डालकर देश को अस्थिर कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि दुश्मन ताकतें हमेशा धर्म और जाति के नाम पर लोगों को बांटने की कोशिश करेंगी और यही सबसे बड़ा खतरा है। नरवणे ने स्पष्ट किया कि राष्ट्रीय सुरक्षा का मतलब केवल सेना नहीं है। इसमें खाद्य सुरक्षा, ऊर्जा सुरक्षा, जल सुरक्षा और स्वास्थ्य सुरक्षा भी शामिल हैं। उन्होंने कहा कि अगर इनमें से किसी पहलू में कमी रह जाए तो देश की स्थिरता प्रभावित हो सकती है। उन्होंने नागरिकों से अपील की कि वे सुरक्षा को व्यापक नजरिए से समझें और केवल सैन्य ताकत पर निर्भर न रहें।

वैश्विक घटनाओं का भारत पर असर

पूर्व सेनाध्यक्ष ने कहा कि मौजूदा भू-राजनीतिक माहौल में दुनिया में कहीं भी होने वाली घटनाएं भारत को प्रभावित कर सकती हैं। उन्होंने रूस-यूक्रेन युद्ध, अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा भारत पर लगाए गए टैरिफ और ट्रंप-पुतिन मुलाकात का उदाहरण दिया। नरवणे ने कहा कि ऐसी घटनाओं के तात्कालिक, अल्पकालिक और दीर्घकालिक असर हो सकते हैं, इसलिए भारत को नीति और रणनीतिक स्तर पर हर स्थिति के लिए तैयार रहना चाहिए।

टोल प्लाजा कर्मियों ने कहासुनी पर सेना के जवान से की मारपीट, वीडियो वायरल

मेरठ (एजेंसी)। यूपी के मेरठ के टोल प्लाजा पर एक मारपीट का वीडियो सामने आया है। वायरल वीडियो सरूरपुर थाना क्षेत्र के भुनी टोल प्लाजा का बताया जा रहा है। आरोप है कि यहां टोल कर्मियों ने एक सेना के जवान के साथ मारपीट और गाली-गलौज की। वीडियो के आधार पर पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक ये पूरा मामला रविवार रात का मेरठ के सरूरपुर थाना क्षेत्र के भुनी टोल प्लाजा का है। यहां पास के ही एक गांव का रहने वाले कपिल सेना में पदस्थ है। उनकी तैनाती जम्मू-कश्मीर में है। बताया जाता है कि कपिल कार से अपने दोस्त के साथ दिल्ली जा रहा थे और जब वह करनाल हाइवे पर भुनी टोल प्लाजा पर पहुंचे तो टोल पर जाम और टोल फीस को लेकर टोलकर्मियों से कहासुनी हो गई। देखते ही देखते विवाद बढ़ गया जिसके बाद टोल कर्मियों ने सेना के जवान की जमकर पिटाई कर दी। वीडियो में देखा जा सकता है कि जवान की लात, घूंसों और डंडे से पिटाई की जा रही है। वहीं, इस दौरान एक टोलकर्मी ने तो मारने के लिए ईंट उठा रखी है। पिटाई का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। कुछ देर बाद कपिल पक्ष के लोग भी पहुंच गए और जमकर हंगामा हुआ। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरु कर दी है।

दिल्ली में डीपीएस समेत कई स्कूलों को बम से उड़ाने की धमकी, खाली कराए गए भवन

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश की राजधानी दिल्ली में एक बार फिर कई स्कूलों को बम से उड़ाने की धमकी दी गई है। स्कूल प्रबंधन ने इसकी सूचना पुलिस को दी और आनन फानन में स्कूलों को खाली कराया गया। जानकारी के मुताबिक जिन स्कूकों को बम की धमकी दी गई है उनमें दिल्ली पब्लिक स्कूल, श्रीराम वर्ल्ड स्कूल और मॉर्डन स्कूल शामिल हैं। इसकी जानकारी मिलते ही पुलिस और बम निरोधक दस्ते के साथ दमकल विभाग की टीमें भी मौके पर पहुंचकर जांच में जुट गई हैं। एहतियातन स्कूलों को खाली कराकर सभी छात्रों को वापस घर भेज दिया गया है। बता दें कि स्कूल-कॉलेजों को बम की धमकी मिलने का यह कोई पहला मामला नहीं है। इस साल अब तक कई बार दिल्ली समेत देशभर के कई स्कूल-कॉलेज और हवाईअड्डों को ऐसी धमकियां मिल चुकी है। हालांकि, हर बार यह धमकी महज अफवाह ही साबित हुई हैं। दिल्ली पुलिस के अनुसार, दिल्ली पब्लिक स्कूल (डीपीएस) द्वारका, मॉडर्न कॉन्वेंट स्कूल और सेक्टर 10, द्वारका स्थित श्रीराम वर्ल्ड स्कूल को एक ईमेल आईडी के जरिये धमकी मिली। सुरक्षा उपाय के तौर पर, स्कूलों को तुरंत खाली करा लिया गया। पुलिस और बम निरोधक दस्ते के साथ दमकल विभाग की टीमें भी मौके पर पहुंच गईं। पुलिस की टीमें सभी स्कूलों में गहनता से तलाश जारी है। हालांकि पिछली दो बम धमकियां अफवाह निकलीं, सुरक्षा एजेंसियां आज की सूचना को गंभीरता से ले रही हैं और सभी आवश्यक प्रोटोकॉल का पालन कर रही हैं। अभी तक की जांच में कुछ भी संदिग्ध नहीं मिला है।

गुजरात में निकाय और पंचायत चुनाव को लेकर आप तैयारियों में जुटी

अहमदाबाद (एजेंसी)। गुजरात में आगामी निकाय और पंचायत चुनाव को लेकर आम आदमी पार्टी (आप) तैयारियों में जुट गई है। गुजरात में आगामी निकाय और पंचायत चुनाव को लेकर सियासी हलचल तेज हो गई है। इस बीच आप गुजरात के सभी पंचायत और निकाय चुनावों को पूरे दमखम से लड़ने के लिए तैयार है। पार्टी ने सोमवार को राज्य में आगामी निकाय और पंचायत चुनाव को लेकर सभी पंचायतों और निकायों में अपने उम्मीदवार उतारने का ऐलान किया है। गुजरात में आप के प्रदेश अध्यक्ष इशुदान गढ़वी ने प्रदेश के युवाओं को उम्मीदवार बनने के लिए आमंत्रित किया है।

टोल प्लाजा कर्मियों ने कहासुनी पर सेना के जवान से की मारपीट, वीडियो वायरल

मेरठ (एजेंसी)। यूपी के मेरठ के टोल प्लाजा पर एक मारपीट का वीडियो सामने आया है। वायरल वीडियो सरूरपुर थाना क्षेत्र के भुनी टोल प्लाजा का बताया जा रहा है। आरोप है कि यहां टोल कर्मियों ने एक सेना के जवान के साथ मारपीट और गाली-गलौज की। वीडियो के आधार पर पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक ये पूरा मामला रविवार रात का मेरठ के सरूरपुर थाना क्षेत्र के भुनी टोल प्लाजा का है। यहां पास के ही एक गांव का रहने वाले कपिल सेना में पदस्थ है। उनकी तैनाती जम्मू-कश्मीर में है। बताया जाता है कि कपिल कार से अपने दोस्त के साथ दिल्ली जा रहा थे और जब वह करनाल हाइवे पर भुनी टोल प्लाजा पर पहुंचे तो टोल पर जाम और टोल फीस को लेकर टोलकर्मियों से कहासुनी हो गई। देखते ही देखते विवाद बढ़ गया जिसके बाद टोल कर्मियों ने सेना के जवान की जमकर पिटाई कर दी। वीडियो में देखा जा सकता है कि जवान की लात, घूंसों और डंडे से पिटाई की जा रही है। वहीं, इस दौरान एक टोलकर्मी ने तो मारने के लिए ईंट उठा रखी है। पिटाई का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। कुछ देर बाद कपिल पक्ष के लोग भी पहुंच गए और जमकर हंगामा हुआ। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरु कर दी है।

लोगों से लाखों की धोखाधड़ी कर ठगी करने वाले छह साइबर आरोपी गिरफ्तार

नूंह (एजेंसी)। हरियाणा के नूंह जिले में तीन अलग-अलग मामलों में लोगों से लाखों रुपए की धोखाधड़ी करने के आरोप में पुलिस ने छह साइबर अपराधियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपियों के पास से मोबाइल फोन, फर्जी सिम कार्ड, एटीएम कार्ड और अन्य डिजिटल उपकरण बरामद किए हैं। पुलिस के मुताबिक दो भाइयों को नटराज पेंसिल कंपनी के नाम पर घर बैठे काम दिलाने का झांसा देकर ठगी करने के आरोप में गिरफ्तार किया है। उन्होंने बताया कि दोनों आरोपियों के पास से दो मोबाइल फोन बरामद हुए हैं। इन मोबाइल फोन पर दोनों भाइयों ने राजीव सिंह और पूजा देवी के नाम से फर्जी व्हाट्सएप, फेसबुक और इंस्टाग्राम अकाउंट बना रखे थे। एक अन्य मामले में, फिरोजपुर धाहर गांव के एक अन्य आरोपी को ठगी के आरोप में गिरफ्तार किया है।

उपराष्ट्रपति के पद पर राधाकृष्णन की जीत लगभग तय, विपक्ष के लिए खड़ी हुईं चुनौतियां

नई दिल्ली (एजेंसी)। अगले माह 9 सितंबर को उपराष्ट्रपति का चुनाव होने जा रहा है। इसके लिए एनडीए ने महाराष्ट्र के राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन को उम्मीदवार बनाया है। वोटों की संख्या के आधार पर माना जा रहा है कि राधाकृष्णन की जीत लगभग तय है। इसके बाद भी विपक्ष संभवता अपना उम्मीदवार उतार सकता है। इससे पहले विपक्षी गठबंधन के सामने कई तरह की चुनौतियां खड़ी हो गई है। एनडीए का कहना है कि विपक्ष से बात करके उनका समर्थन मांगेंगे। कोशिश करेंगे कि चुनाव निर्विरोध हो जाए।

वहीं जानकारों का मानना है कि एनडीए के इस दांव से विपक्षी दलों के सामने कुछ चुनौतियां जरुर खड़ी हुई हैं। खासतौर से तमिलनाडू में डीएमके के लिए। जहां ओबीसी के नेता का विरोध करना इनके लिए किसी चुनौती से कम नहीं है। इसी तरह दूसरे दलों को भी विरोध करने में ओबीसी फैक्टर दिक्कतें खड़ी कर सकता है। वहीं सूत्रों के अनुसार, रक्षा मंत्री

राजनाथ सिंह ने कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे को कॉल कर एनडीए के उपराष्ट्रपति उम्मीदवार सीपी राधाकृष्णन के लिए समर्थन मांगा है। एनडीए के नेताओं ने खुलकर समर्थन का ऐलान भी किया है। बीजेपी चाहती है कि विपक्ष के साथ आम सहमति बन जाए ताकि चुनाव न कराना पड़े। इसलिए राजनाथ सिंह विपक्ष से बातचीत में लग गए हैं। खरगे का क्या जवाब रहा, इस पर कोई जानकारी नहीं मिल पाई है।

जीते के लिए चाहिए 391 वोट

543 सदस्यीय लोकसभा में 542 सदस्य अभी मौजूद, बंगाल की एक सीट खाली है। इसी तरह 245 सदस्यीय राज्यसभा में 6 सीटें खाली, जिनमें से 4 जम्मू-कश्मीर, 1 पंजाब और 1 झारखंड से हैं। और 239 वोट हैं। इस तरह कुल 781 वोट होंगे उपराष्ट्रपति चुनाव में होंगे। इसमें एनडीए उम्मीदवार राधाकृष्णन की स्थिति को देखें तो 293 सदस्यों का लोकसभा में और 129 का राज्यसभा में समर्थन प्राप्त है। इस तरह 422 सदस्य राधाकृष्णन के समर्थन में होंगे, जिससे उनकी जीत लगभग तय मानी जा रही है।

राहुल गांधी का समर्थन कर प्रशांत किशोर ने दी चुनाव आयोग को चुनौती

पटना (एजेंसी)। जन सुराज के संस्थापक और पूर्व चुनावी रणनीतिकार प्रशांत किशोर (पीके) ने हाल ही में कांग्रेस नेता राहुल गांधी के समर्थन में आकर चुनाव आयोग (ईसीआई) को चुनौती दी है। यह मामला तब सामने आया जब मुख्य चुनाव आयुक्त ने राहुल गांधी द्वारा लगाए गए मतदाता सूची से संबंधित आरोपों को निराधार बताकर उन्हें अपने दावों का सबूत देने के लिए 7 दिन की मोहलत दी, अन्यथा पूरे देश से माफी मांगने की बात कही। इस पर प्रशांत किशोर ने कहा कि चुनाव आयोग को आरोपों का बिंदुवार जवाब देना चाहिए, बजाय इसके कि वह राहुल गांधी से माफी मांगने के लिए कह दें। उन्होंने चुनाव आयोग की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाकर कहा कि अगर राहुल गांधी चुनाव आयोग की बात नहीं मानते हैं, तब चुनाव आयोग क्या कर लेगा? पीके ने इस मुद्दे को राहुल गांधी बनाम चुनाव आयोग बनाने के बजाय, सार्वजनिक डोमेन में मौजूद जानकारी के रूप में देखने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि चुनाव आयोग को खुद ही इन मामलों की जांच करनी चाहिए और जांच के बाद बिंदुवार उत्तर देना चाहिए। प्रशांत किशोर ने चुनाव आयोग से फॉर्म 20, फॉर्म 19 और फॉर्म 6 जैसे डिजिटल डेटा को सार्वजनिक करने की मांग की। उन्होंने चुनाव आयोग के प्राइवेसी के तर्क को खारिज कर कहा कि ऐसा करना लोगों को बेवकूफ बनाने जैसा है। पीके ने यह भी स्पष्ट किया कि राहुल गांधी ने मतदाताओं को चोर नहीं कहा है, बल्कि उन्होंने चुनाव आयोग पर आरोप लगाए हैं।

जम्मू-कश्मीर में भारी बारिश की चेतावनी, 11 जिलों में हाई अलर्ट जारी

-प्रशासन ने नहरों, नालों और पुरानी इमारतों के आसपास न जाने की दी हिदायत

जम्मू (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर में बारिश से हालात बिगड़ते ही जा रहे हैं। प्रशासन ने अगले 56 घंटे तक हाई अलर्ट जारी किया है। मौसम विभाग ने 18 और 19 अगस्त को भारी बारिश की आशंका जताई है। इसके चलते जम्मू संभाग में सभी सरकारी और निजी स्कूल बंद कर दिए गए हैं। वहीं वैष्णो देवी यात्रा भी रोक दी है और पहाड़ी इलाकों में लोगों की आवाजाही पर प्रतिबंधित लगा दिया है। प्रशासन ने नहरों, नालों और पुरानी इमारतों के आसपास न जाने की सख्त हिदायत दी है। निचले इलाकों में रहने वालों को सुरक्षित स्थानों पर जाने का आदेश दिया है।

मौसम विभाग ने जम्मू संभाग और कश्मीर के 11 जिलों जिसमें जम्मू, रियासी, उधमपुर, राजौरी, पुंछ, सांबा, कठुआ, डोडा, किश्तवाड़, रामबन और कश्मीर के कुछ हिस्सों में बादल फटने और लैंडस्लाइड की चेतावनी जारी की है। प्रशासन ने एनडीआरएफ, एसडीआरएफ और सेना की टीमों को अलर्ट पर रखा है। बता दें रविवार सुबह कठुआ जिले में तीन जगह बादल फटने की घटनाएं हुई थीं, जोद घाटी में सात लोगों की मौत हो गई और कई घायल हैं।

पुलिस के मुताबिक लैंडस्लाइड से दो से तीन घर पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गए और कई लोग मलबे में फंसे हुए हैं। हाईवे और रेलवे ट्रैक भी जगह-जगह से क्षतिग्रस्त हैं। 14 अगस्त को किश्तवाड़ के चसोटी गांव में भी बादल फटने से तबाही मची थी। इस घटना में अब तक 65 लोगों की मौत हो चुकी है और 200 से ज्यादा लोग अब भी लापता बताए जा रहे हैं। 500 से ज्यादा लोगों को रेस्क्यू किया गया है जबकि 180 घायल हैं।

कठुआ और किश्तवाड़ में सेना और राहत एजेंसियां लगातार काम कर रही हैं। एनडीआरएफ की तीन टीमें, सेना के 300 से ज्यादा जवान, पुलिस और एसडीआरएफ के साथ मिलकर मलबा हटाने और लोगों को सुरक्षित निकालने का काम कर रहे हैं। घायलों को जम्मू और किश्तवाड़ के अस्पतालों में भर्ती कराया गया है। चसोटी गांव में हालात इतने भयावह हैं कि लोग प्रशासन पर नाराजगी जता रहे हैं।

उत्तराखंड में आसमान से उतरी तबाही की बारिश-सैकड़ों तीर्थयात्री फंसे, गंगोत्री हाईवे बंद

देहरादून (एजेंसी)। उत्तराखंड में बीते कई दिनों से हो रही बारिश आफत बन गई है। द्वितीय केदार मद्महेश्वर पैदल मार्ग बनतोली के पास भूस्खलन से लगभग 50 मीटर ध्वस्त हो गया, जिससे मद्महेश्वर लौट रहे सैकड़ों तीर्थयात्री मार्ग में फंस गए। सूचना मिलते ही एसडीआरएफ और डीडीआरएफ की टीम मौके पर पहुंची और रस्सी के सहारे यात्रियों को सुरक्षित दूसरी तरफ लाया जा रहा है। वहीं, रिश के कारण गंगोत्री नेशनल हाईवे पर भी जगह-जगह भूस्खलन और भूधंसाव हुआ है।

उत्तराखंड आपदा प्रबंधन अधिकारी नंदन सिंह रजवार ने बताया कि पैदल मार्ग में करीब 200 यात्री फंसे थे, जिन्हें रेस्क्यू टीमों द्वारा सुरक्षित निकाला जा रहा है। मार्ग पर मलबा हटाने का काम रविवार देर रात तक जारी रहा और दोनों छोरों से रस्सी बांधकर यात्री सुरक्षित निकाले गए। इसके अलावा लोक निर्माण विभाग, ऊखीमठ की टीम भी बनतोली की ओर रवाना की गई।

बारिश के कारण गंगोत्री नेशनल हाईवे पर भी जगह-जगह भूस्खलन और भूधंसाव हुआ। डबराणी से सोनगाड़ तक कई स्थानों पर मार्ग 13 दिनों से बाधित है। रविवार को नालूपानी और सालंग पुल के पास भारी मलबा और बोल्डर गिरने से हाईवे बंद रहा। इसी कारण मुसाफिर और वाहन चालकों को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ा। हर्षिल घाटी में प्रभावित धराली और आठ अन्य सीमावर्ती गांवों में जिला प्रशासन ने खाद्यान्न आपूर्ति सुनिश्चित की। जिलाधिकारी प्रशांत आर्य के निर्देश पर ग्रामीणों तक सस्ते गल्ले की दुकानों से अग्रिम राशन पहुंचाया गया, ताकि आपदा से प्रभावित लोगों को राहत मिल सके।

इसके अलावा पुरोला-करड़ा-धड़ोली मोटर मार्ग पर भी सड़क धंसने से आवाजाही ठप हो गई, जिससे सेब बागवानों की फसल मंडियों तक पहुंचने में जोखिम में है। बागवानों ने बताया कि सड़क समय पर नहीं खुली तो गोदामों में रखी सेब की सैकड़ों पेटियां सड़ सकती हैं, जिससे आर्थिक नुकसान हो सकता है। मौसम विभाग ने चमोली और आसपास के जिलों में भारी और मध्यम बारिश की संभावना जताई है और नदियों के जलस्तर में वृद्धि के चलते बाढ़ जैसी स्थिति की चेतावनी दी है। फिलहाल प्रशासन और आपदा प्रबंधन विभाग स्थिति पर कड़ी निगरानी रखे हुए हैं। चमोली जिले में गोपेश्वर, बदरीनाथ समेत अन्य स्थानों

पर भी बारिश जारी रही। बदरीनाथ हाईवे के पागल नाला और भन्दैपुर सहित अन्य हिस्सों पर मलबा और बोल्डर गिरने से सड़क अवरुद्ध रही। जिले में करीब 20 ग्रामीण सड़कें भी बंद पड़ीं, जिन्हें मशीनों से मलवा हटाकर सुचारू किया जा रहा है।

केशव प्रसाद मौर्य ने कांग्रेस को दिखाया आईना, राहुल गांधी का व्यवहार पूरी तरह से गैरजिम्मेदाराना

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने कांग्रेस सांसद और लोकसभा में नेता विपक्ष राहुल गांधी के चुनाव आयोग पर लगाए वोट चोरी आरोप को बेतुका बताया है। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी संवैधानिक संस्थाओं पर सवाल उठाकर देश में अराजकता फैला रहे हैं। रविवार को चुनाव आयोग की प्रेस वार्ता के दौरान राहुल गांधी को हलफनामा देने के लिए 7 दिन का अल्टीमेटम देने पर उपमुख्यमंत्री मौर्य ने बिलकुल सही बताया। उन्होंने कहा कि जिस तरह राहुल गांधी संवैधानिक संस्थाओं पर सवाल उठा रहे हैं, वहां कतई नहीं है। उन्होंने कहा कि हर काम करने की एक तय प्रक्रिया होती है। अगर किसी राजनीतिक दल को मतदाता सूची प्रकाशन और संशोधन पर आपत्ति है, तब वह आधिकारिक तौर पर उठा सकता है। लेकिन, राहुल गांधी देश में अफवाहें फैला रहे हैं। उनका आचरण न लोकतांत्रिक है और न ही संवैधानिक, बल्कि राहुल गांधी का व्यवहार पूरी तरह से गैरजिम्मेदाराना है। लोकसभा में विपक्ष के नेता जैसे जिम्मेदार पद पर बैठे व्यक्ति के लिए इस तरह की हरकतें निंदनीय हैं। एनडीए द्वारा महाराष्ट्र के राज्यपाल सी.पी. राधाकृष्णन को उपराष्ट्रपति पद का उम्मीदवार घोषित करने पर कहा कि मैं इसका स्वागत करता हूं और राधाकृष्णन को बधाई देता हूं। प्रधानमंत्री के नेतृत्व में भारत को आदिवासी समुदाय से एक राष्ट्रपति मिला है और अब ओबीसी वर्ग से एक उपराष्ट्रपति होगा। यह बहुत बड़ा संदेश है, वहां दक्षिण भारत से आते हैं। एनडीए ने जो फैसला लिया है, यह बहुत ही स्वागत योग्य कदम है। मैं भाजपा के शीर्ष नेतृत्व को बधाई देता हूं।

विदेश में बैठकर कई गैंगस्टर देश में करवा रहे है हत्याएं और जबरन वसूली

-तीन बड़ी घटनाओं के बाद पुलिस की कार्यशैली और मुखबिर तंत्र पर उठ रहे सवाल

गुरुग्राम (एजेंसी)। विदेश में बैठे कई बड़े गैंगस्टर इन दिनों गुरुग्राम पुलिस के लिए चुनौती बने हुए हैं। देश के बाहर से अपने गैंग चला रहे गिरोह के गुर्गे वसूली, दहशत फैलाने के लिए फायरिंग, सुपारी किलिंग और रंगदारी की वारदातों को अंजाम दे रहे हैं। बीते एक महीने में एक के बाद एक हुईं तीन बड़ी घटनाएं पुलिस की कार्यशैली और मुखबिर तंत्र पर सवाल खड़े कर रही हैं।

मशहूर हरियाणवी गायक राहुल फाजिलपुरिया पर फायरिंग के 20 दिन बाद उसके करीबी रोहित शौकीन की गोली मारकर हत्या और फिर अब मशहूर यूट्यूबर व राहुल के दोस्त एल्विश यादव के घर पर ताबड़तोड़ फायरिंग की गई। ये तीन मामले एक महीने के अंदर ही हुए हैं। इन घटनाओं की एक-दूसरे से जुड़े हुए गैंगस्टरों ने ही जिम्मेदारी ली है। राहुल फाजिलपुरिया पर हमले के एक महीने बाद भी अब तक शूटर नहीं पकड़े गए। दो आरोपियों को पुलिस ने पकड़ा है जो रेकी करने वाले थे।

वहीं रोहित शौकीन की हत्या को 15 दिन बीत चुके हैं, लेकिन आरोपी अभी भी पुलिस की गिरफ्त दूर हैं। गुरुग्राम पुलिस को चुनौती देती हुई अब ये तीसरी घटना रविवार सुबह हुई जिसमें पुलिस के हाथ अभी तक कोई सुराग नहीं लगा है। राहुल फाजिलपुरिया पर 14 जुलाई की रात फायरिंग की गई थी। कार सवार हमलावरों ने उनका पीछा किया था और एसपीआर रोड पर उनकी थार गाड़ी रुकवाकर गोलीबारी की थी। इस हमले में राहुल फाजिलपुरिया बाल-बाल बच गए थे। इस हमले के बाद गैंगस्टर सुनील सरधानिया ने जिम्मेदारी ली थी और कहा था कि अगर वह दीपक नांदल के पांच करोड़ नहीं देगा तो उसके करीबियों की हत्या की जाएगी।

इस धमकी के 20 दिन बाद ही राहुल के करीबी दिल्ली के नांगलोई के रहने वाले रोहित शौकीन की राहुल के घर के पास ही एसपीआर रोड पर 4 अगस्त की रात गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। बताया गया था कि दीपक नांदल ने ही रोहित को फोन कर गुरुग्राम बुलाया था। उसके बाद वारदात की गई, जिस तरह रविवार सुबह एल्विश यादव के घर पर ताबड़तोड़ फायरिंग हुई, इसका मकसद गैंगस्टर द्वारा इलाके में दहशत पैदा करना है।

गैंगस्टर गोलियां मारकर हत्या करना और इतनी बड़ी संख्या में फायरिंग करने का ट्रेंड अपनाते रहे हैं। इसकी शुरुआत गैंगस्टर कौशल गिरोह ने की थी। उसके बाद लॉरेंस बिश्नोई, फिर उससे जुड़े हुए गिरोह के लोगों ने इसी तरह से कई हत्याएं कीं। घटना के बाद गैंगस्टर का नाम जुड़ने ही एसटीएफ की टीमें भी सतर्क होग गई हैं। राहुल फाजिलपुरिया पर हमला, रोहित शौकीन की हत्या के बाद अब एल्विश यादव के घर पर फायरिंग के मामले में भी एसटीएफ की टीम अपनी तरफ से जांच में जुट गई हैं।

एसटीएफ के सूत्रों का कहना है कि जब भी ऐसे मामले सामने आते हैं या कोई गैंगस्टर इस तरह से घटना की जिम्मेदारी लेता है तो एसटीएफ खुद ही संज्ञान लेकर उस पर काम शुरू कर देती है। एसटीएफ की तरफ से कहा गया है कि फिलहाल गुरुग्राम पुलिस के साथ मिलकर टीमें जांच कर रही हैं। पुलिस प्रवक्ता एएसआई संदीप कुमार ने कहा कि सभी मामलों में पुलिस टीमें तेजी से जांच कर रही हैं। जल्द ही आरोपितों को गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

बंगाल में लगेंगे 45 हजार दुर्गा पंडाल, सीएम ममता पंडालों को दे रही 500 करोड़

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल में इस बार 45 हजार से ज्यादा दुर्गा पंडाल बनाए जा रहे हैं। इनमें से 3100 सिर्फ कोलकाता में लगाए जाएंगे। साल 2026 की शुरुआत में विधानसभा चुनाव होने हैं। ऐसे में इस बार सीएम ममता बनर्जी हरेक पंडाल को 1.10 लाख रुपए की अनुदान राशि दे रही हैं। इस हिसाब से देखें तो राज्य सरकार करीब 500 करोड़ रुपए दुर्गा पंडालों को मदद दे रही हैं।

बता दें सीएम ममता बनर्जी ने 2018 में पंडालों को अनुदान देना शुरू किया था। तब 28 हजार पंडाल थे और हरेक को 10 हजार रुपए दिए जाते थे। अब पंडाल 60 फीसदी बढ़ गए हैं और अनुदान 11 गुना। पिछले साल 85 हजार रुपए दिए गए थे। इस बार सीधे 25 हजार रुपए बढ़ाए गए हैं। बीजेपी का आरोप है कि चुनाव नजदीक हैं, इसलिए सीएम ममता ने अनुदान बढ़ाया है।

विश्वविद्यालय के इकोनॉमिक्स विभाग के एचओडी कहते हैं, 10 दिनी शारदीय नवरात्र बंगाल की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। यह छोटे से लेकर बड़े सेक्टर तक को आर्थिक ताकत देती है। सरकारी आंकड़ा है कि पिछले साल इन 10 दिन में 80 हजार करोड़ रुपए से ज्यादा का कारोबार हुआ था। इस बार यह एक लाख करोड़ तक पहुंच सकता है, क्योंकि हर चीज के दाम पिछले साल से ज्यादा हैं और पंडाल भी बढ़ गए हैं। पूजा कमेटियों का कहना है कि बीते सात साल में लेबर, कच्चा माल, लाइटिंग, पूजन सामग्री, सजावट आदि का खर्च 60 फीसदी से ज्यादा बढ़ चुका है। इसलिए पंडालों को भी ज्यादा रुपए खर्च करने पड़ रहे हैं।

स्क्वॉयर पूजा पंडाल के आयोजक सजल घोष कहते हैं कि हम टीएमसी सरकार से अनुदान नहीं लेते हैं, क्योंकि सरकार इन्हें खुद का प्रचार का मंच बना चुकी है। अगले साल राज्य में विधानसभा चुनाव हैं, इसीलिए ममता ने 25 हजार रुपए ज्यादा अनुदान दे रही हैं। वहीं, विधानसभा के स्पीकर और तृणमूल नेता बिमान बनर्जी ने कहा कि अनुदान देने में सरकार कोई सियासी फर्क नहीं करती। कोलकाता में 4-5 बीजेपी समर्थित पंडाल हैं, लेकिन सरकार इन्हें भी अनुदान देती है। बीजेपी का काम ही आरोप लगाना है।

अंतरिक्ष यात्री शुभांशु शुक्ला का स्वागत करने सजने लगा लखनऊ

-नगर निगम ने सड़क और पार्क का नाम शुभांशु रखने का लिया फैसला

लखनऊ (एजेंसी)। यूपी के लखनऊ में अंतरिक्ष यात्री शुभांशु शुक्ला के स्वागत की तैयारी हो रही हैं। शुभांशु जिन्होंने हाल ही में अंतरिक्ष मिशन के जरिए भारत का नाम दुनिया में रोशन किया है। इस वजह से उनके सम्मान में नगर निगम ने कई अहम फैसले लिए हैं। महापौर सुषमा खरकवाल ने बताया कि नगर निगम की बैठक में प्रस्ताव पारित किया गया है कि उनके घर तक जाने वाली सड़क और शहर का एक पार्क उनके नाम पर रखा जाएगा। यह कदम न केवल उन्हें सम्मान देने के लिए है बल्कि आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करने के उद्देश्य से भी उठाया गया है।

महापौर ने कहा कि शुभांशु शुक्ला लखनऊ शहर में पैदा हुए हैं वह हमारे शहर का गौरव है, हम भाग्यशाली हैं कि हमारे शहर का एक बच्चा विश्वपटल पर अपना नाम रोशन कर चुका है। उन्होंने कहा है कि आज पूरी दुनिया शुभाशु शुक्ला को जानती है। महापौर ने कहा कि शुभांशु उनके घर की रोड को उनके नाम से कर दिया है और सदन में बधाई देकर सबसे पहले इस काम को किया जाएगा।

वहीं उन्होंने एक और अहम फैसला लेते हुए कहा है कि उनके घर के पास नगर निगम एक पार्क बनवाएगा। उनके लखनऊ आगमन को लेकर सुषमा खरकवाल ने कहा कि जिस दिन वह शहर आएंगे उस दिन नगर निगम और सभी पार्षदों के साथ उनका जोरदार स्वागत के करने के लिए एयरपोर्ट पर मौजूद रहेंगे। महापौर ने कहा कि शुभांशु शुक्ला आज न केवल लखनऊ बल्कि पूरे देश का गर्व बन चुके हैं।

लखनऊवासी उनके इस ऐतिहासिक उपलब्धि पर गर्व महसूस कर रहे हैं और शहर उन्हें अपना नायक मानकर भव्य स्वागत की तैयारी में जुटा है। शहर के हर कोने में चर्चा है कि जिस युवा ने आसमान में देश का नाम रोशन किया, उसका सम्मान लखनऊ को और गौरवान्वित करेगा। शुभांशु के स्वागत से शहर का माहौल देशभक्ति और गर्व की भावना से सराबोर होगा। नगर निगम का यह फैसला न केवल एक औपचारिक कदम है बल्कि यह संदेश भी है कि लखनऊ अपने सपूतों के योगदान को कभी नहीं भूलता है।

'दिल्ली पूरी तरह से सेफ ज़ोन में है': मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता

प्रथम पृष्ठ का शेष

साथ ही सभी रेगुलेटर्स को पूरी तरह चालू रखने के निर्देश दिए गए हैं। मुख्यमंत्री ने बताया कि डीएम ईस्ट के कार्यालय में सेंट्रल फ्लड कंट्रोल रूम की शुरुआत कर दी गई है। यह केंद्र अब पूरे दिल्ली के लिए एक केंद्रीय समन्वय केंद्र के रूप में कार्य कर रहा है और सभी सिविक एजेंसियों के प्रतिनिधि यहां 24×7 तैनात हैं। उन्होंने कहा कि इस साल शहर में सेंट्रल कंट्रोल रूम सहित 15 वायरलेस स्टेशन स्थापित किए जा चुके हैं, जो यमुना के जलस्तर सहित जलभराव वाले इलाकों की हर समय निगरानी कर रहे हैं। साथ ही राहत और बचाव कार्य में इस्तेमाल होने वाले सभी उपकरणों की जांच पूरी कर ली गई है और सम्बंधित विभागों ने यमुना खादर क्षेत्र में बाढ़ की स्थिति में लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाने के पुख्ता इंतज़ाम कर रखे हैं।

दंगे में शोरूम में तोड़फोड़ और आगजनी के मामले में तीन बरी

नई दिल्ली। उत्तर पूर्वी दिल्ली दंगे के दौरान दुकानों में तोड़फोड़ व आगजनी के मामले में कड़कड़डूमा कोर्ट ने तीन आरोपियों को बरी कर दिया। अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश प्रवीण सिंह के कोर्ट ने आरोप साबित न होने पर इस मामले में अकील अहमद, रहीस खान और इरशाद को राहत दे दी। दयालपुर थाना क्षेत्र के चांद बाग इलाके में 25 फरवरी, 2020 को दंगाइयों ने उपद्रव मचाया था। इस दौरान सड़क किनारे वाहनों के शोरूम में तोड़फोड़ की गई थी। आगजनी का भी आरोप लगाया गया था। इसमें अकील अहमद, रहीस खान और इरशाद को आरोपी बनाया गया था। उनके खिलाफ वर्ष 2021 में दंगा व आगजनी के आरोप तय किए गए थे। तीनों उस समय जमानत पर थे। ट्रायल के दौरान कोर्ट ने पाया कि इन पर आरोप सिद्ध करने के लिए पर्याप्त साक्ष्य नहीं है। ऐसे में कोर्ट ने तीनों को बरी करने का आदेश दे दिया।

फाजिलपुरिया, रोहित और अब एल्विश किसके निशाने पर नामचीन चेहरे

कौमी पत्रिका

नई दिल्ली। गुरुग्राम में लगातार बढ़ रही आपराधिक घटनाओं ने शहर में कानून-व्यवस्था और सुरक्षा पर सवाल खड़े कर दिए हैं। एक के बाद एक कई हमलों की घटना से लोग दहशत में हैं। शहर में नामचीन लोगों को निशाना बनाया जा रहा है। हरियाणवी सिंगर राहुल फाजिलपुरिया पर फायरिंग के बाद फाइनेंसर रोहित शोकीन की गोली मारकर हत्या कर दी गई। और आज एल्विश यादव के घर को निशाना बनाकर ताबड़तोड़ गोलियां बरसाई गई। बिग बॉस ओटीटी 2 के विनर और मशहूर यूट्यूबर एल्विश यादव के गुरुग्राम वाले घर पर कुछ अज्ञात हमलावरों ने ताबड़तोड़ 24 से 25 राउंड फायरिंग की है। घटना सुबह 5-30 से 6 बजे के बीच की बताई जा रही है। जिस समय एल्विश यादव के घर पर गोली चली, उस दौरान घर पर उसकी मां सुषमा यादव मौजूद थीं। सेक्टर 56 थाना पुलिस मौके पर मामले की जांच करने में जुटी है। भाऊ गैंग ने एल्विश यादव के घर फायरिंग की जिम्मेदारी ली है। सोशल मीडिया पोस्ट कर गैंगस्टर नीरज फरीदपुर और भाऊ रितौलिया ने फायरिंग की जिम्मेदारी ली गई है। पोस्ट में लिखा गया है कि एल्विश ने बेटिंग एप को प्रमोट कर कई घर बर्बाद किए हैं। जानकारी के अनुसार, गुरुग्राम के गांव वजीराबाद में एल्विश यादव के घर पर बाइक सवार अज्ञात हमलवारों ने करीब 24 राउंड फायर किए। फायरिंग होते ही एल्विश यादव के घर केयरटेकर का काम करने वाला शख्स घबराकर अंदर भाग गया। साथ ही जानकारी एल्विश यादव के पिता मास्टर राम अवतार को दी। मास्टर राम अवतार ने बताया कि हमलावर ताबड़तोड़ गोलियां चलाकर भाग गए। फायरिंग के समय एल्विश यादव घर पर नहीं थे। तीन हमलवार बाइक पर आए थे, एक हमलावर बाइक से थोड़ी दूर पहले ही उतर गया था दो लड़कों ने ताबड़तोड़ गोली चलाई। एल्विश के पिता ने पुलिस को सूचना दी। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और जांच में जुट गई। पुलिस मामले की जांच कर रही है, हमें पुलिस की कार्रवाई पर पूरा विश्वास है। एल्विश यादव के घर की दीवार पर गोलियों के निशान हैं। बदमाश घर पर लगे ष्टष्टञ्जङ्क में कैद हो गए हैं। पुलिस सीसीटीवी कैमरों की डीवीआर लेकर गई है। एल्विश यादव के घर पर पुलिस बल तैनात कर दिया गया है। 14 जुलाई 2025 की रात, गुरुग्राम के सेक्टर 71 में हरियाणवी सिंगर-रैपर राहुल फाजिलपुरिया की कार पर दो गोलियां चलाई गईं। राहुल फाजिलपुरिया की थार गा?ी पर कार सवार बदमाशों ने फायरिंग की है। फाजिलपुरिया को गोली नहीं लगी है। गनीमत रहा कि वो सुरक्षित बच गए। इस मामले में पुलिस ने एक आरोपी विशाल को गिरफ्तार किया है। वहीं, गोली चलाने से पहले रेकी करने का आरोपी रमनदीप उर्फ पेट्रोल भी गिरफ्तार किया गया। राहुल फाजिलपुरिया पर फायरिंग की जिम्मेदारी सुनील सरधानिया ने ली। सुनील सरधानिया ने एक सोशल मीडिया पोस्ट कर इस हमले की जिम्मेदारी ली थी। पोस्ट में दावा किया गया है कि दीपक ने फाजिलपुरिया पर पांच करोड़ रुपये लगाए थे ताकि उसे सेलिब्रिटी बनाया जा सके। उसने कहा कि मशहूर होने के बाद राहुल अपने राजनीतिक रुतबे का दिखावा करके दो साल से न फोन उठाते हैं, न कोई जवाब देते हैं। इसके अलावा हमारे पास कोई चारा नहीं बचा था। बता दें कि राहुल फाजिलपुरिया ने वर्ष 2024 में गुरुग्राम लोकसभा सीट से पूर्व उप मुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला की जननायक जनता पार्टी (जजपा) के टिकट पर चुनाव ल?ा था। हालांकि, वह चुनाव हार गए थे। सदर्न पेरिफेरल रोड (एसपीआर) पर सोमवार की रात गायक राहुल फाजिलपुरिया के करीबी रोहित शौकीन की गोलियों से भूनकर हत्या कर दी गई। हत्या के पीछे रुपयों का लेनदेन माना जा रहा है। बाइक सवार दो बदमाशों ने प्रॉपर्टी डीलर रोहित शौकीन को ताबड़तोड़ 12 गोलियां मारकर हत्या की। इस घटना के दौरान रोहित का दोस्त सिगरेट लेने गया हुआ था, ऐसे में वह बाल बाल बच गया। दिल्ली के कमरूद्दीन नगर, निहाल विहार का रहने वाला रोहित शौकीन (39 वर्ष) किराए और प्रॉपर्टी डीलर काम करता था। वह गायक राहुल यादव उर्फ राहुल फाजिलपुरिया का करीबी (गारंटर) था। हालांकि, राहुल फाजिलपुरिया ने रोहित शौकीन से सीधा संपर्क होने से मना किया है। वहीं, रोहित शौकीन (मृतक) के साले ने बताया कि रोहित को रुपये देने के लिए दीपक नांदल ने फोन किया था। उसे गुरुग्राम के सेक्टर-77 में लोकेशन देकर बुलाया था। रोहित अपने बड़े भाई विजय शौकीन की सफेद रंग की कार में अपने गांव के दोस्त के साथ आया था। दीपक नांदल की भेजी लोकेशन पर रोहित शौकीन इंतजार कर रहा था। इसी बीच बाइक पर आए दो युवकों ने रोहित शौकीन पर अंधाधुंध फायरिंग कर दी।

फर्जी कॉल सेंटर चलाने वाला सरगना समेत छह गिरफ्तार

नई दिल्ली। द्वारका जिला साइबर सेल ने विकासपुरी में चल रहे फर्जी कॉल सेंटर का खुलासा किया है। पुलिस ने कॉल सेंटर चलाने वाले तीन जालसाजों समेत ठगी में शामिल छह आरोपियों को गिरफ्तार किया है। इनके कब्जे से पुलिस ने लैपटॉप और 41 मोबाइल फोन और बैंक ग्राहक डेटा डायरियां बरामद की हैं। क्रेडिट कार्ड की लिमिट बढ़ाने और पिन जनरेट करने का झांसा देकर आरोपी लोगों से ठगी करते थे। द्वारका जिला पुलिस उपायुक्त अंकित सिंह ने बताया, बिंदापुर निवासी वीरेंद्र कुमार ने 21 जून को साइबर सेल में ठगी की शिकायत की, जिसमें उन्होंने बताया कि निजी बैंक का क्रेडिट कार्ड पिन जनरेट करने के लिए एक कॉल आया। आरोपियों ने एक एपीके फाइल भेजकर सारी जानकारी हासिल करने के बाद उनके कार्ड से 2.81 लाख रुपये निकाल लिए। साइबर सेल की जांच में विभिन्न वित्तीय संस्थानों से प्राप्त जानकारी से पता चला कि ठगी की गई राशि फ्लिपकार्ट को हस्तांतरित की गई थी और उस राशि से फ्लिपकार्ट पर फर्जी खाते का इस्तेमाल कर छह मोबाइल फोन खरीदे गए थे। पता चला कि शिकायतकर्ता को विकासपुरी में चल रहे एक फर्जी कॉल सेंटर से फोन किया गया था। पुलिस ने वहां छापा मारकर कॉल सेंटर चलाने वाले विजय शर्मा, पार्टनर और मैनेजर मूलचंद मिश्रा को गिरफ्तार कर लिया। पूछताछ में पता चला कि युवक अमित फर्जी सिम कार्ड और बैंक खाता संचालित करता है। अमित के हैदराबाद में मौजूदगी का पता चला। पुलिस टीम ने हैदराबाद में छापा मारकर उसे वहां से गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने फर्जीवाड़े में शामिल विजय के ड्राइवर विकासपुरी निवासी गौरव और उत्तम नगर निवासी हेमंत को गिरफ्तार कर लिया। गरीब लोगों के नाम पर सिम खरीदकर अमित को मुहैया करने वाले प्रदीप साहू को पानीपत से गिरफ्तार कर लिया। जांच में पता चला कि सरगना विजय शर्मा चार युवतियों की मदद से कॉल सेंटर चलाता था। युवतियां कॉल करती थीं और फिर विजय शर्मा को कॉल ट्रांसफर कर देती थीं। विजय शर्मा पीड़िता को एपीके फाइल भेजकर उसके बैंक खातों और कार्ड की जानकारी हासिल कर पैसे फर्जी बैंक खातों में ट्रांसफर कर लेता था। पुलिस अधिकारी ने बताया कि विजय शर्मा उत्तम नगर में रहता था। वह बीकॉम, एलएलबी, जीएनआईआईटी (सॉफ्टवेयर) और आईआईएचटी (हार्डवेयर) की पढ़ाई कर चुका है। वहीं अमित पानीपत हरियाणा, मूलचंद मिश्रा अलीगढ़ यूपी, प्रदीप पानीपत हरियाणा, गौरव किराड़ी, और हेमंत उत्तम नगर का रहने वाला है।

दिल्ली में तीन स्कूल और एक कॉलेज को बम से उड़ाने की धमकी

नई दिल्ली। दिल्ली में एक बार फिर से स्कूल और कॉलेज को बम से उड़ाने की धमकी मिली है। इससे पहले भी दिल्ली के कई स्कूलों को धमकी भरे ईमेल चुके हैं। कई बार ये हॉक्स कॉल निकली हैं। दिल्ली पब्लिक स्कूल (डीपीएस) द्वारका, मॉडर्न कॉन्वेंट स्कूल द्वारका और ग्रेटर कैलाश स्थित ब्लू बेल्स स्कूल को सोमवार को बम से उड़ाने की धमकी भरी कॉल आई। अब खबर है कि एक कॉलेज को धमकी भरी ईमेल मिली है। वहीं दूसरी तरफ सागरपुर स्थित दीप मॉडल स्कूल को धमकी भरा मेल मिला है। धमकी के बाद पुलिस और सुरक्षा एजेंसियां स्कूल के बाहर मौजूद हैं। जिसके बाद स्कूल परिसर खाली करा दिया गया है। तलाशी अभियान चल रहा है। बम की सूचना मिलते ही पुलिस, बम स्क्वायड और दमकल विभाग की टीम मौके पर पहुंच चुकी है। दिल्ली अग्निशमन सेवा ने इसकी जानकारी दी है। जानकारी के लिए बता दें कि आज सुबह सुबह 7-24 पर कंट्रोल रूम को सूचना मिली थी। बम की सूचना पर एक अभिभावक ने कहा कि हमें स्कूल से बच्चों को वापस ले जाने का संदेश मिला था। उन्होंने कारण नहीं बताया। इसलिए हम अपने बच्चे को वापस लेने आए हैं। वहीं इससे पहले बीते महीने जुलाई में दिल्ली के 20 से ज्यादा स्कूलों को ईमेल के जरिए बम की धमकी मिली थी। पुलिस के अनुसार, दिल्ली के पश्चिम विहार में रिचमंड ग्लोबल स्कूल को बम की धमकी मिली थी। बम की धमकी की सूचना मिलते ही दमकल विभाग और दिल्ली पुलिस की एक टीम मौके पर पहुंची थी। स्कूलों के अलावा दिल्ली के आईपी कॉलेज फॉर विमेन, हिंदू कॉलेज और श्री राम कॉलेज ऑफ कॉमर्स को ईमेल के जरिए बम की धमकियां मिल चुकी हैं। लेकिन तलाशी के बाद सभी धमकी झूठी निकली। बीती 18 जुलाई को दिल्ली पुलिस ने बयान जारी करते हुए कहा था कि द्वारका स्थित सेंट थॉमस स्कूल, वसंत कुंज स्थित वसंत वैली स्कूल, हौज खास स्थित मदर्स इंटरनेशनल स्कूल, पश्चिम विहार स्थित रिचमंड ग्लोबल स्कूल और लोदी एस्टेट स्थित सरदार पटेल विद्यालय को ईमेल के जरिए बम से उड़ाने की धमकी मिली थी। पिछले तीन दिनों में लगभग 10 स्कूलों और एक कॉलेज को बम से उड़ाने की ऐसी धमकियां मिली थी।

आज आधी रात से उफान पर होगी यमुना, बाढ़ जैसे हालात

नई दिल्ली। यमुना का जलस्तर रविवार शाम 4 बजे 204.60 मीटर दर्ज किया गया, जो चेतावनी के स्तर 204.50 मीटर से ज्यादा है। ऐसे में दिल्ली में फिर से 2023 की बाढ़ जैसे हालात बन रहे हैं। उस समय 45 साल का रिकॉर्ड टूटा था और यमुना का जलस्तर 208.48 मीटर तक पहुंच गया था। पहाड़ों पर लगातार हो रही भारी बारिश के कारण ऐसी आशंका है कि सोमवार-मंगलवार को आधी रात से दिल्ली में यमुना उफान पर होगी। यमुना नदी का जलस्तर बढ़ने के कारण कल हथिनीकुंड बैराज के सभी 18 गेट इस मौसम में पहली बार खोल दिए गए हैं। रविवार शाम 4 बजे हरियाणा के हथिनीकुंड बैराज से एक साथ 1,78,996 क्यूसेक पानी छोड़ा गया है। करीब इसी अनुपात में निरंतर पानी आ रहा है जो रात करीब 2 बजे दिल्ली पहुंचेगा। इससे यमुना का जलस्तर 206 मीटर के पार जाने की आशंका है। इसकी चेतावनी जारी कर दी गई है।दिल्ली सरकार की ओर से यमुना के तटीय इलाकों में रह रहे लोगों को सावधान रहने और पानी बढ़ने पर लोगों को घर खाली करने के लिए सतर्क रहने के आदेश दे दिए गए हैं। प्रशासन ने यमुना के तटीय इलाकों में बाढ़ से निपटने की तैयारियां बढ़ा दी हैं। यमुना बाजार में नदी के किनारे दीवार को मजबूत किया गया है, ताकि पानी बढ़ने पर ये तेजी से बाजार में न घुस पाए, लेकिन यमुना बाजार के आसपास के सीवर अभी से ओवर फ्लो होने लग गए हैं। 2023 में 10 जुलाई को शाम 3 बजे यमुना का जलस्तर 205.10 मीटर था लेकिन हथिनीकुंड बैराज से एक साथ 2,15,677 क्यूसेक पानी छोड़ा गया और 11 जुलाई को दिल्ली में बाढ़ आ गई थी। यमुना का जलस्तर सुबह 10 बजे ही 206.34 मीटर के पार चला गया था। 11 जुलाई को फिर से एक साथ सबसे अधिक 3,44,035 क्यूसेक पानी हथिनीकुंड बैराज से छोड़ा गया। 12 जुलाई को यमुना का जलस्तर 207.38 मीटर था। भारी मात्रा में पानी छोड़ने से 13 जुलाई, 23 को दिल्ली में बाढ़ का 45 साल का रिकार्ड ध्वस्त हो गया था। दिल्ली में यमुना का जलस्तर 208.48 मीटर तक पहुंच गया था। बाढ़ का पानी कश्मीरी गेट आईएसबीटी के परिसर तक में पहुंच गया था। आउटर रिंग रोड पर रेलवे अंडरपास लबालब था। इस रूट से आवागमन बंद हो गया था। यमुना बाजार, एमनेस्टी मार्केट सब डूबे हुए थे। सबसे ज्यादा नुकसान यमुना खादर में हुआ था। लोगों के घरेलू सामान बह गए थे।

NAME CHANGE

I, DHARMENDER KUMAR GAUTAM S/O RAM PRATAP residing at H NO.-7 BLOCK-I GALI NO-24 HARI NAGAR EXTN, JAITPUR DELHI-110044. have changed my name to DHARMENDER GAUTAM for all future purposes.

NAME CHANGE

I, Murtuza Mumtaz Husain s/o Mumtaz Husain R/o 5/26-B, 3rd Floor, Jangpura-B, Delhi-110014, have changed my name to Murtuza Mumtaz Hussain for all future purposes

NAME CHANGE

I hitherto known as PRADEEP son of Shri RAM NANDAN, residing at D-94, Gali No.3, Sangam Vihar, Delhi-110062, have changed my name and shall hereafter be known as NAGENDER GOSWAMI.

NAME CHANGE

I, PRATYUSH GOYAL C/O SANGEETA GOYAL residing at FLAT NO-202, GH-12, PASCHIM VIHAR, DELHI - 110087. have changed my name to PRATYUSH for all future purposes.

NAME CHANGE

I, Suraj Kumar s/o Inder R/o 9796, Street No.7, Near Morya Hotel, Multani Dhanda, Paharganj, New Delhi-110055 have changed my name to Suraj for all future purposes

PUBLIC NOTICE

It is for general information that I Rajesh Daas S/O Cholahai Daas, R/O N-17, Saurabh Vihar, Badarpur, Jait Pur, South Delhi, Delhi - 110044, declare that name of mine has been wrongly written Rajesh Dass in my minor daughter namely Kanchan aged 13 years in her school records. The actual name of mine is Rajesh Daas, which may be amended accordingly.

PUBLIC NOTICE

It is for general information that I, SEEBA W/o Mohammad Eshtiyak, R/o A-1/155, A-Block, Aman Vihar, Kirari Suleman Nagar, North West Delhi Delhi-110086 declare that name of mine has been wrongly written as SHEEBA in my minor daughter namely SHIFA ANSARI, aged 15 years in her school record. The actual name of mine is SEEBA, which may be amended accordingly.

NAME CHANGE

I, NEERAJ KUMAR S/o TILAK RAJ BHOGRA, R/o Plot No 100, First Floor, NA, Ambika Vihar New Delhi, Paschim Vihar, PO: Sunder Vihar, DIST: West Delhi, Delhi – 110087 have changed my name to NEERAJ KUMAR BHOGRA.

NAME CHANGE

I, GIRIBAR NATH SINGH Father of No. 15700408X Rank-HAV Name-PRAVIN KUMAR residing at-VILL-NARAYANPUR, PO-SULTANGANJ, TEHSIL-SULTANGANJ, DISTT-BHAGALPUR, BIHAR-813213, have changed my name from GIRIBAR NATH SINGH to GIRIVAR NATH SINGH for all future purposes, in my son's service record my date of birth wrongly mentioned as 01/07/1965 instead of my correct date of birth as 12/11/1973 Vide Affidavit dated 18/08/2025 before Notary Public Delhi

NAME CHANGE

I, Niraj s/o Ganga Singh R/o H. No. G-130, 30 Foota Road, Sitapuri Part-2, New Delhi-110045 have changed my name to Neeraj Yadav for all future purposes

NAME CHANGE

I, JHAMIT DEVI mother of NO-15700710W Rank-HAV, Name-NITESH KUMAR SAHU Presently residing at NITESH GAS WELDING WORKSHOP, SHRI RAM MARKET RAMNAGAR, SUPELA, BHILAI, DURG, CHHATTISGARH-490023, have changed my name from JHAMIT DEVI to JHAMIT DEVI SAHU for all future purposes, in my son's service record my date of birth wrongly mentioned as 01/07/1970 instead of my correct date of birth as 24/06/1970 Vide Affidavit dated 18/08/2025 before Notary Public Delhi.

NAME CHANGE

I, SURYAKANT father of No-14440270F Rank-HAV (HK) Name-HIPALE NIJAPPA SURYAKANT residing at VILL-BORUL, PO-KANBAS, TEHSIL & DIST-SOLAPUR, MAHARASHTRA-413215, have changed my name SURYAKANT to SURYAKANT SANGAPPA HIPALE for all future purposes vide Affidavit Dated 18/08/2025 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE

I, ADITY SAHA Mother of No-17006923A Rank-NK Name-AYON SAHA residing at VPO-PANCHTHUPI, TEHSIL-KANDI, DIST-MURSHIDABAD, WEST BENGAL-742161, have changed my name from ADITY SAHA to ADITI SAHA for all future purposes vide Affidavit dated 18/08/2025 before Notary Public, Delhi.

PUBLIC NOTICE

It is for general information that I, Neelam Devi W/O Late Sh. Ganesh mishra R/O H. No. -429,Gali No-1, Budh Vihar, Behrampur, Ghaziabad, Ghaziabad Uttar Pradesh -201009, declare that name of mine has been wrongly written as Leelam Devi in my Husband PPO Book No.S/041364/2007 the actual name of mine is Neelam Devi

NAME CHANGE

It is for general information that I MOHD SALIM KHAN S/O MOHD SHAHID R/O I-338, JANTA MAJDOOR COLONY, STREET NO-06, BABAR PUR DISTT NORTH EAST, DELHI-110053 declare that name of mine has been wrongly written as MD SALIM KHAN in my minor son namely AYAN KHAN aged 16 years in his 10 class educational documents. The actual name of mine is MOHD SALIM KHAN which may be amended accordingly.

NAME CHANGE

I, Sachin kumar aggarwal , S/o Shambhu dayal Aggarwal , R/o H-No-172-B, Pocket-M, Janta Flat Sarita Vihar ,Delhi- 110076, have changed my name to Sachin Aggarwal for all future purposes.

NAME CHANGE

I, hitherto known as RAMESH KUMAR S/O HARI SINGH R/O H NO-71, NANGAL THAKRAN, BAZID PUR, DELHI-110039 have changed my name and shall hereafter be known as RAMESH. It is certified that I have complied with other legal requirements in the connection

NAME CHANGE

I, VISHNU Father of No-15676399A Rank-HAV Name-CHAVHAN PARAMESHWAR VISHNU Presently residing at VPO-BHOKAR, TEH+DIST-JALGAON, MAHARASHTRA-425002, have changed my name from VISHNU to VISHNU BANDU CHAVAN for all future purposes and in my son's service record my date of birth wrongly mentioned as 01/07/1946 instead of my correct date of birth as 07/04/1948 vide Affidavit dated 18/08/2025 before Notary Public Delhi.

NAME CHANGE

I, NIRMALA Mother of No-15676399A Rank-HAV Name-CHAVHAN PARAMESHWAR VISHNU Presently residing at VPO-BHOKAR, TEH+DIST-JALGAON, MAHARASHTRA-425002, have changed my name from NIRMALA to NIRMALA VISHNU CHAVAN for all future purposes and in my son's service record my date of birth wrongly mentioned as 01/07/1953 instead of my correct date of birth as 01/01/1953 vide Affidavit dated 18/08/2025 before Notary Public Delhi.

PUBLIC NOTICE

I hitherto known as PRADIPTA CHAKRABARTY alias PRADIPTO CHAKRABARTY, son of TAPAN CHAKRABARTY, residing at D-601,GATEWAY TOWERS, SECTOR 4, VAISHALI, IE SAHIBABAD, GHAZIABAD, UTTAR PRADESH - 201010, have changed my name and shall hereafter be known as PRADIPTO CHAKRABARTY.

NAME CHANGE

I No-15437592M Rank-HAV/ORA Name-RAJES SINHABABU Presently residing at VILL-JOGMOHANPUR, PO-HETYAGARA, TEH-KHATRA, DIST-BANKURA, WEST BENGAL-722151, have changed my mother's name from BELARANI SINHABABU to BELA SINHA BABU vide Affidavit dated 02/08/2025 before Notary Public, Meerut.

NAME CHANGE

I, PRITI KUMARI is daughter of No. No. GS-183868L Rank- MTDVR-I Name-TUNTUN THAKUR, UNIT/POSTED HQ DGBR, NARAYANA RING ROAD, DELHI CANTT, DELHI-110010, R/o VILLAGE GARHANI (SANTINAGAR DHAMANIYA), TEH-BHOJPUR, DISTT-ARA, STATE- BIHAR, PIN-802203, have changed my name from PRITI KUMARI to PREETI KUMARI for all future purposes. Vide affidavit dated 05.08.2025. Before Sub Divisional Magistrates Delhi.

PUBLIC NOTICE

I hitherto known as PAPPU KUMAR TIWARI son of Shri CHANDRA BHUSHAN TIWARI, permanent R/o Gram-Shabhu Chak, Sambhu Chak, East Champaran, Bihar-845413, presently residing at B-1/183, Gali No.6, First Floor, New Ashok Nagar, East Delhi, Delhi-110096, have changed my name and shall hereafter be known as ANURAG TIWARI.

सार्वजनिक सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है की मेरी मुवक्किल श्रीमति ममता पत्नी स्व0 श्री सुरेश कुमार, निवासी WZ-809, राम चंद्र बस्ती, नांगल राया नई दिल्ली, साउथ वेस्ट दिल्ली, नई दिल्ली-110046 ने अपने पुत्र युवराज सिंह को उसके अभद्र व्यवहार व नियंत्रण में नहीं होने के कारण अपनी सभी चल व अचल संपत्ति से बेदखल कर दिया है और उस से अपने सारे संबंध विच्छेद कर लिये है यदि कोई भी व्यक्ति उस से कोई भी लेन-देन करता है तो वह स्वय इसका जिम्मेदार होगा एवं मेरी मुवक्किल का इससे कोई लेना-देना नहीं होगा।

Vidisha Rojha Advocate
CH. NO. 712, DWARKA COURTS,
SEC-1O, NEW DELHI-110075

NAME CHANGE

I, NATHU RAM RAIKA S/O BAHADUR RAM R/O E-1/7, MALVIYA NAGAR, MALVIYA NAGAR, SOUTH DELHI, DELHI-110017 have changed the name of my minor son BABULAL aged 15 years and he shall hereafter be known as ANUJ RAIKA.

NAME CHANGE

It is for genral information that I AJANTA MUNGRA W/O RAMESH MUNGRA residing at H.NO. 27/25, Shakti Nagar, Delhi-110007 declare that name of my minor son has been wrongly written as SHUBHAM RAMESH MUNGRA in my minor son's namely SHUBHAM MUNGRA aged 15 years in his school records. The actual of my minor son is SHUBHAM MUNGRA. which may be amended accordingly

NAME CHANGE

I hitherto known as KIRAN DEVI alias KIRANTI W/O KAMAL SINGH R/O H.NO-212, GALI NO-2, AMBEDKAR COLONY, TILA MOD, LONI ROAD, GHAZIABAD, UTTAR PRADESH - 201102 have changed my name and shall hereafter be known as KIRANTI.

NAME CHANGE

I, hitherto Known as ABHINAV KUMAR S/o LUKHAR SAW Permanent R/o Babua Bazar, Losghani, Lakhisarai, Bihar - 811112 and Present R/o Sadarpur Colony Sector 45, Sadarpur Colony Gali A1, Dadri, Gautam Buddha Nagar, Uttar Pradesh - 201301 have changed my name and shall hereafter be known as UMESH KUMAR.

PUBLIC NOTICE

NOTICE is hereby given to public at large that my client **Rajesh Kumar Jha** is purchasing the Back Side Portion of Property Bearing No. 143-A (New) and Old Plot No. 13-A, Area Measuring 48 Sq. Yds, Out of Total 120 Sq. Yds. Out of Khasra No. 707, Situated in Village Nawada, Uttam Nagar, New Delhi. from Smt. Bimla Devi who is the owner of the above-mentioned property vide General Power of Attorney, ATS, WILL dated 22.02.1999 and Intend to mortgage the said property with **Aditya Birla Housing Finance Ltd.** If any person(s) has/have any objection(s) or claim(s) with respect to the right, title or interest in the said property may please contact us within 07 days from the date of this notice on the number & address mentioned herein below, failing which my client(s) shall not be held responsible in any manner whatsoever.

Khaitan & Khaitan
A-38 Kailash Colony,
New Delhi-110048,
Ph. No: 011-49774545

सार्वजनिक सूचना

यह सूचित किया जाता है कि श्रीमती राधा पत्नी श्री प्रेमपाल, मकान संख्या 52, क्षेत्रफल 100 वर्ग गज, खसरा संख्या 539 मि. स्थित ग्राम चिपियाना बुजुर्ग (रेलवे लाइन के पार), कॉलोनी – साईं एन्क्लेव, वार्ड संख्या 01, परगना एवं तहसील दादरी, जनपद गौतम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश की स्वामिनी हैं। श्रीमती राधा उपरोक्त संपत्ति श्रीमती सुषमा एवं श्री अर्जुन तनेजा से क्रय किया हैं, जो दिनांक 01.07.2024 को विक्रय विलेख के माध्यम से संपन्न हुई है, जिसका दस्तावेज़ संख्या 34521 है। कृपया ध्यान दें कि संपत्ति के एक मूल श्रृंखलाबद्ध दस्तावेज़ कही खो गया है – विशेष रूप से विक्रय विलेख जो दस्तावेज़ संख्या 7399, पुस्तक संख्या 01, खंड संख्या 2767, पृष्ठ संख्या 131-162, दिनांक 19.06.2010 को उप-पंजीयक कार्यालय, दादरी में पंजीकृत हुआ था। उपरोक्त दस्तावेज़ की गुमशुदगी के संबंध में ऑनलाइन एफआईआर (गुमशुदगी रिपोर्ट संख्या LR 20250000590189) दिनांक 18.08.2025 को पुलिस कंप्यूटर केंद्र, तकनीकी सेवाएं मुख्यालय, लखनऊ में दर्ज कराई गई है। साथ ही यह भी सूचित किया जाता है कि उक्त संपत्ति वर्तमान में GIC हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड, शाखा-ऑफिस नंबर 303, तीसरी मंजिल, ट्रेडेक्स टॉवर-1, अल्फा कॉम्प्लेक्स बेल्ट, सेक्टर अल्फा-1, परी चौक के पास, ग्रेटर नोएडा, उत्तर प्रदेश - 201307, द्वारा वित्तपोषित की जा रही है। यदि किसी व्यक्ति को उपरोक्त संपत्ति के संबंध में कोई आपत्ति हो, तो कृपया इस सूचना की तिथि से 07 दिनों के भीतर अपनी आपत्ति लिखित रूप में प्रस्तुत करें। उक्त आपत्ति नीचे दिए गए पते पर पंजीकृत डाक के माध्यम से एवं ई-मेल द्वारा अधोहस्ताक्षरी को भेजी जा सकती है। यदि निर्दिष्ट अवधि में कोई आपत्ति प्राप्त नहीं होती है, तो उक्त संपत्ति के संबंध में कोई भी दावा अमान्य और निष्प्रभावी माना जाएगा।

[ASHWANI KUMAR] Advocate
Chamber No. 122,
Tehsil Compound, Ghaziabad, U.P.

PUBLIC NOTICE

Information is given to general public at large that our client Mrs. Angoori Devi W/o Late Mr. Munni Lal Gupta is the owner of Freehold Residential Built-up Property No. 3525, Old Plot No. 22 & 23, Gali No. 2, area measuring 50 sq. yds., out of Khasra No. 138, Situated at Village - Chowkri Mubarkabad, Delhi State Delhi Colony known as Ganeshpura - B, Narang Colony, Tri Nagar, Delhi. by virtue of Relinquishment Deed dated 23.07.2008 duly registered in the office of SR VIA, Delhi, as Doc No. 9382, Book No. 01, Vol No. 1934, Page Nos. 71-73, dated 23.07.2008 in the chain Document below mentioned documents not available i.e. Surviving Member Certificate of Late Mr. Munni Lal Gupta now our client is declaring that that any other Person does not have any right over the said property, and same property sold too be Mr. Rajnesh Giri and same has been finance by ICICI Home Finance Co. Ltd. Branch: Pitampura, Delhi. If any person(s) have any objection(s) or claim(s) with respect to the` right, title or interest in the Said Property then contact us within 07 days from the date of Publication of this notice and or the same to the undersigned if found by anyone. Thereafter no claim shall be entertained

[NAVEEN KUMAR VERMA]
Advocate
F-211,sector-3 Vaishali Ghaziabad
Uttar Pradesh-201010, Contact at 09958871432

PUBLIC NOTICE

Information is given to general public at large that our client Mr. Naresh Kumar Bhatt S/o Mr. Rati Ram Bhatt is the owner of Freehold Residential Property Bearing No. K-4 (As per Technical K-4/C) area 100+100=200 sq. yds. out of Khasra No. 568, Situated in the area of Village Ghonda Gujran Khadar in the abadi of K-Block Gali No. 6, Gangotri Vihar West Ghonda illaqa Shahdara Delhi-110053. by virtue of Relinquishment Deed dated 16.10.2023 which duly registered in the office of S.R. IV Seelampur New Delhi/Delhi, as Doc no. 3233, Book no. 1, Vol no. 5705, Pages 95-104, dated 16.10.2023. in the chain documents below mentioned document bot available i.e. Death Certificate & SMC of Late Mrs. Sushila Devi & Death Certificate & SMC of Late Mr. Pati Ram Bhatt, our client is declaring that any other Person does not have any right over the said property, and Property Bearing No. K-4 (As per Technical K-4/C) land area measuring 30 sq. yds. Sold too be Smt. Hemlata Goyal which is to be financed by Piramal Capital & Housing Finance Ltd. Branch: Sector-02 Noida Uttar Pradesh. If any person(s) have any objection(s) or claim(s) with respect to the` right, title or interest in the Said Property then contact us within 07 days from the date of Publication of this notice and or the same to the undersigned if found by anyone. Thereafter no claim shall be entertained

[NAVEEN KUMAR VERMA]
Advocate
F-211,sector-3 Vaishali Ghaziabad
Uttar Pradesh-201010, Contact at 09958871432

अभियुक्त व्यक्ति की हाजिरी की अपेक्षा करने वाली उद्‌घोषणा

धारा 82 (2) Cr. P.C. देखें

मेरे समक्ष परिवाद किया गया है कि अभियुक्त **सतेन्द्र उर्फ सचिन पुत्र** राम सूरत **निवासी:** म.नं. C-89, गली नं. 3, अर्चना एनक्लेव, खोड़ा कॉलोनी, गाज़ियाबाद, यू.पी. दूसरा निवासः घिरोली लक्षम, थानाः खुरहम, जिलाः जौनपुर, यू.पी. ने **FIR No. 01/18 U/s 354 D IPC थानाः कोटला मुबारकपुर, दिल्ली** के अधीन दण्डनीय अपराध किया है (या संदेह है कि उसने किया है) और उस पर जारी किए गए गिरफ्तारी वारंट को यह लिख कर लौटा दिया गया है कि उक्त **सतेन्द्र उर्फ सचिन** मिल नही रहा है और मुझे समाधानप्रद रूप में दर्शित कर दिया गया है कि उक्त **सतेन्द्र उर्फ सचिन** फरार हो गया है (या उक्त वारण्ट की तामील से बचने के लिए अपने आपको छिपा रहा है)।

इसलिए इसके द्वारा उद्‌घोषणा की जाती है कि **FIR No. 01/18 U/s 354 D IPC थानाः कोटला मुबारकपुर, दिल्ली** के उक्त अभियुक्त **सतेन्द्र उर्फ सचिन** से अपेक्षा की जाती है कि वे इस न्यायालय के समक्ष (या मेरे समक्ष) उक्त परिवाद का उत्तर देने के लिए दिनांक **18.09.2025** को या इससे पहले हाजिर हो।

आदेशानुसार
अनम रईस खान
एलडी. जेएमएफसी-01, (SE)
कमरा नं. 506, साकेत कोर्ट, दिल्ली

DP/10992/SD/2025
(Court Matter)

ऋण वसूली न्यायाधिकरण-II, दिल्ली,
चतुर्थ तल, जीवन तारा भवन, पार्लियामेंट स्ट्रीट, नई दिल्ली - 110001

के समक्ष बैंक एवं वित्तीय संस्थाओं को देय ऋण वसूली अधिनियम, 1993 की धारा 19(4) के अंतर्गत ऋण वसूली न्यायाधिकरण (प्रक्रिया नियम, 1993) के नियम 12 एवं 13 के साथ सूचना।

टीए संख्या 748/2022 दिनांक- 07.05.2025

एलआईसी हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड **आवेदक**

बनाम

श्री मनुज सचदेवा एवं अन्य **प्रतिवादी**

प्रति,
प्रतिवादी
डी1. श्री मनुज सचदेवा पुत्र श्री भरत कुमार सचदेवा
डी2. सुश्री रुचि चंद्र पुत्र श्री रमेश वोहरा
दोनों का पताः-3379, सेक्टर 23, अंसल प्लाजा के पास, पालम विहार, गुड़गांव, हरियाणा-122015।

यद्यपि उपर्युक्त आवेदक/आवेदकों ने **22,39,933.84 रुपये (केवल बाईस लाख उनतीस हजार नौ सौ तैंतीस और चौरासी पैसे)** की वसूली हेतु मामला दायर किया है। आपके विरुद्ध और चूंकि न्यायाधिकरण की संतुष्टि के लिए यह दर्शाया गया है कि आपको सामान्य तरीके से तामील करना संभव नहीं है, इसलिए यह नोटिस विज्ञापन द्वारा दिया जाता है जिसमें आपको **06.11.2025 को पूर्वाह्न 11:00 बजे** न्यायाधिकरण में उपस्थित होने का निर्देश दिया जाता है।

कृपया ध्यान दें कि यदि आप उल्लिखित तिथि से पूर्व उपस्थित नहीं होते हैं, तो मामले की सुनवाई और निर्णय आपकी अनुपस्थिति में किया जाएगा।

सभी मामलों की सुनवाई वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग या प्रत्यक्ष रूप से की जाएगी और इस उद्देश्य के लिए-

(i) सभी अधिवक्ता/वादी **"CISCO WEBEX"** एप्लिकेशन/सॉफ्टवेयर डाउनलोड करेंगे।

(II) माननीय पीठासीन अधिकारी/रजिस्ट्रार द्वारा लिए जाने वाले मामलों की सुनवाई की तिथि हेतु **"Meeting ID"** और **"Password"** डीआरटी आधिकारिक पोर्टल **drt.gov.in** पर दैनिक वाद सूची में प्रदर्शित किए जाएँगे।

(III) किसी भी आपात स्थिति में अधिवक्ता/वादी संबंधित अधिकारी से फ़ोन नंबर 011-23748478 पर संपर्क कर सकते हैं।

यह पत्र मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायाधिकरण की मुहर सहित **7 मई, 2025** को दिया गया।

न्यायाधिकरण के आदेशानुसार
अनुभाग अधिकारी
डीआरटी-II, दिल्ली

PUBLIC NOTICE

My Client Smt. Premlata W/o Sh. Naresh Kumar is the Owner of Built-up Residential House Bearing No. 2221, Area Measuring-36.58 Sq. Mtrs, Situated at Block Yojna No.-3, Shastri Nagar, Meerut, Vide Registered Gift Deed Having Doc. No. 8378 Dated-05.07.2025 at Sri, Meerut, Executed by Her Son Sh. Ashish 5/o Sh. Naresh Kumar. This Above-mentioned Property is Going to Be Mortgage With Ujjivan Small Finance Bank and in This Regard if Any Person/bank/financial Institution 15 Having Any Claim, Right, Lien, Any Objection Whatsoever in Regard to Above Property, Should Notified to the Undersigned Along With Documentary Evidence to Below Address Within 07 Days From the Date of Publication of This Notice, Failing Which Any Claim, Lien or Objection Shall Be Deemed to Have Been Waived.

Harshit Goyal, Advocate
A - 225, 2nd Floor, Sector-14,
Kaushambi, Ghaziabad,
Uttar Pradesh - 201010.

PUBLIC NOTICE

Information is given to general public at large that our client Smt. Zainab is the owner of Freehold Residential Plot no. 108 & 109 area measuring 100 sq. yds. Out of Khasra no. 2771, Situated at Eidgah Colony Meerut Tehsil & Distt. Meerut Uttar Pradesh. by virtue of Sale Deed dated 04.12.2024 as Doc no. 15154, Vol no. 12752 Page no. 207-222 Sr-Meerut-II., till date and has lost/Misplace his Original Sale Deed dated 22.02.2018 as Doc no. 1828, Vol no. 9056 Page no. 21-56 SR- Meerut-II. it was executed in favour of Sh. Jamil Ahmad., now our client is declaring that that any other Person does not have any right over the said property, and same has been finance by Piramal Capital & Housing Finance Ltd. Branch: Dwarka New Delhi. If any person(s) have any objection(s) or claim(s) with respect to the` right, title or interest in the Said Property then contact us within 07 days from the date of Publication of this notice and or the same to the undersigned if found by anyone. Thereafter no claim shall be entertained

[NAVEEN KUMAR VERMA]
Advocate
F-211,sector-3 Vaishali Ghaziabad
Uttar Pradesh-201010, Contact at 09958871432

कौमी पत्रिका

संपादक-गुरचरन सिंह बब्बर
स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक, गुरचरन सिंह बब्बर ने कौमी पत्रिका प्रिंटिंग प्रेस, सेक्टर ए-4/ए-144 इंडस्ट्रीयल एरिया ट्रोनिका सिटी लोनी (गाजियाबाद), उत्तर प्रदेश से छापकर प्रकाशित किया।

Corporate Office:
5, Bahadurshah Zafar Marg
ITO, New Delhi-110002

फोन : 011-41509689, 23315814
मोबाइल नंबर : 9312262300

E - mail address :
qpatrika@gmail.com
Website: www.qaumipatrika.in

R.N.I. No.
UP-HIN/2007/21472

Legal Advisors:
Advocate Mohd. Sajid
Advocate Dr. A.P.Singh
Advocate Manish Sharma
Advocate Pooja Bhaskar Sharma

नारनौल के युवा कवि ओशिन शुक्ला को मिला 'साहित्य प्रज्ञा सम्मान'

एजेंसी

नारनौल। प्रगतिशील शिक्षक ट्रस्ट की साहित्यिक इकाई के अध्यक्ष एवं युवा कवि ओशिन शुक्ला 'साक्षी' को 'साहित्य प्रज्ञा सम्मान' से अलंकृत किया गया है। यह पुरस्कार उनको उतरप्रदेश स्थित एक प्रतिष्ठित प्रकाशन समूह द्वारा दिया गया है। पिछले एक माह में यह ओशिन का चौथा साहित्यिक सम्मान है। बहुत कम समय में साहित्यिक क्षेत्र में नारनौल शहर को राष्ट्रीय स्तर पर एक अलग पहचान दिलाने पर शहर के अनेक गणमान्य लोगों ने युवा कवि ओशिन शुक्ला को बधाई दी है। ट्रस्ट के अध्यक्ष डॉ संजय शर्मा ने बताया कि प्रकाशन समूह द्वारा स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर एक राष्ट्रीय ई-साहित्य समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें देश भर के साहित्यकारों की सहभागिता रही। उनमें से कुछ चुनिंदा रचनाकारों को साहित्य प्रज्ञा सम्मान से सम्मानित किया गया है। जिसमें नारनौल के युवा रचनाकार ओशिन शुक्ला 'साक्षी' का नाम भी शामिल है। ओशिन शुक्ला 'साक्षी' को यह सम्मान श्रेष्ठ काव्य रचना तथा उत्कृष्ट साहित्यिक गतिविधियों के लिए दिया गया है। डॉ.जितेंद्र भारद्वाज ने बताया कि अखिल भारतीय साहित्य परिषद (पंजीकृत) हरियाणा द्वारा ओशिन को उत्कृष्ट साहित्यिक गतिविधियों के लिए पानीपत में सम्मानित किया जा चुका है। वहीं काव्य रसिक संस्थान द्वारा भी ओशिन शुक्ला को 'शब्दों के जादूगर सम्मान' तथा 'साहित्य गौरव सम्मान' से अलंकृत किया जा चुका है। ।

हरियाणा बिजली सुधारों में अव्वल, 27वें स्थापना दिवस पर एचईआरसी ने गिनाई उपलब्धियां

चंडीगढ़। हरियाणा बिजली सुधारों के मामले में देशभर में मिसाल बनकर उभरा है। 27 साल पहले गठित हरियाणा विद्युत विनियामक आयोग (एचईआरसी) आज उपभोक्ताओं के अधिकारों की रक्षा और ऊर्जा क्षेत्र में पारदर्शिता सुनिश्चित करने में अहम भूमिका निभा रहा है। राज्य उन चंद प्रदेशों में शामिल रहा है, जिन्होंने सबसे पहले हरियाणा बिजली सुधार अधिनियम, 1997 लागू किया। एचईआरसी के चेयरमैन नंद लाल शर्मा ने कहा कि 16 अगस्त, 1998 को एचईआरसी का गठन हुआ और 17 अगस्त 1998 से आयोग ने विधिवत कार्य शुरू किया। इसके बाद हरियाणा देश का दूसरा राज्य बना जिसने बिजली बोर्डों का पुनर्गठन कर उत्पादन, प्रसारण और वितरण को अलग-अलग किया। प्रदेश में इस समय 81.92 लाख से अधिक उपभोक्ता हैं। उनकी जरूरतों को पूरा करने के लिए उत्तर हरियाणा बिजली वितरण निगम (यूएचबीवीएन) और दक्षिण हरियाणा बिजली वितरण निगम (डीएचबीवीएन) कार्यरत हैं। उन्होंने कहा कि दोनों निगमों के अधीन 21 ऑपरेशन सर्कल, 63 ऑपरेशन डिविजन और 282 ऑपरेशन सब-डिविजन हैं।

दुकान में घुसकर महिला पर जानेलवा हमला, मामला दर्ज

रोहतक। जेपी कालोनी में स्थित एक किरयाने की दुकान में घुसकर कुछ लोगों द्वारा महिला पर जानलेवा हमला करने का मामला सामने आया है। पुलिस ने इस संबंध में मामला दर्ज किया है। पुलिस के अनुसार जेपी कालोनी निवासी राजेन्द्र ने बताया कि घर में ही उसकी किरयाने की दुकान है, जिसको उसकी पत्नी कला देवी संभालती है। पड़ोस में रहने वाला अमन दुकान से कुछ सामान खरीद कर ले गया था, लेकिन थोडी देर बाद वह और पिता इन्द्र खरीदा हुआ सामान वापिस देने के लिए दुकान पर आए तब महिला ने वह समान वापिस लेते हुए जब दूसरा सामान देने लगी तो इन्द्र ने उसके साथ झगडा शुरू कर गालियां देने लगा। महिला ने इसका विरोध किया तो तभी इन्द्र के परिवार के अन्य सदस्य भी दुकान पर पहुंच और उसके साथ मारपीट शुरू कर दी। झगड़े के बाद काफी संख्या में लोग मौके पर एकत्रित हुए तो आरोपी वहां से भाग गए। परिजनों ने घायल महिला को उपचार के लिए पीजीआई में भर्ती कराया। पुलिस मामले की जांच पड़ताल कर रही है। पुलिस ने आरोपियों को पकड़ने के लिए कई स्थानों पर दबिश दी, लेकिन उनके बारे में कोई सुराग नहीं मिला। पुलिस मामले की गहनता से छानबीन कर रही है।

प्रदेश में अपराधियों के हौसले बुंलद, जनता की सुरक्षा पर सरकार नहीं गंभीर:गोस्वामी

रोहतक। इनेलो के युवा विंग ने भिवानी में महिला शिक्षिका मनीषा की निर्मम हत्या के विरोध मे प्रदर्शन कर मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी का पुतला जलाया। इनेलो के युवा प्रदेश अध्यक्ष अरविंद गोस्वामी ने कहा कि प्रदेश में अपराधियों के हौसले पूरी तरह से बुलंद है, जिस तरह से महिला शिक्षिका की निर्मम हत्या की गई है, उससे प्रदेश में भय का माहौल बना हुआ है। उन्होंने कहा कि एक तरफ सरकार बेटी बचाओ बेटी पढाओ का नारा लगा रही है, वहीं दूसरी और बहन-बेटियों की निर्मम हत्याएं हो रही है। इससे साफ जाहिर है कि अपराधियों को सरकार का संरक्षण प्राप्त है। उन्होंने कहा कि सरकार लॉ एंड आर्डर संभालने में पूरी तरह से विफल साबित हो रही है और ऐसे में मुख्यमंत्री को अपनी नैतिक जिम्मेदारी लेते हुए तुरंत अपने पद से इस्तीफा दे देना चाहिए। इनेलो युवा जिला प्रधान बल्लू खेडी साध ने कहा कि आज प्रदेश में अराजकता का माहौल बना हुआ है। हर वर्ग सरकार से पूरी तरह से परेशान है। विदेशों में बैठकर बदमाश जब चाहे किसी से भी रंगदारी मांग लेते है, लेकिन सरकार आज तक एक विदेशों में बैठे किसी एक अपराधी को गिरफ्तार तक नहीं कर पाई है।

हरियाणा के सीएम ने जींद में 206 करोड़ की परियाजनाओं के किए उदघाटन व शिलान्यास

एजेंसी

जींद। नरवाना की मेला मंडी में आयोजित विकास रैली के मंच से सीएम नायब सैनी ने करीब 206 करोड़ 25 लाख रुपये की योजनाओं की घोषणा और उद्घाटन किए। इनमें नरवाना अस्पताल 50 बेड से बढ़ा कर 100 बेड का करने, हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण का एक नया सेक्टर और नई सब्जी मंडी बनाने की घोषणा प्रमुख हैं। इसके अलावा नरवाना के विकास को लेकर सीएम ने करोड़ों की घोषणाएं की। सीएम ने घोषणा की कि कलौदा खुर्द में स्टेडियम बनाया जाएगा। गांव अमरगढ़ में पशु अस्पताल को लेकर जमीन मुहैया करवाए जाने पर वहां पशु अस्पताल 40 लाख रुपये से बनवा दिया जाएगा। राजकीय प्राथमिक विद्यालय कर्मगढ़, बिधराना, दबलैन, दनौदा, हथो, ढाणी स्कूलों

के लिए भी वो चार करोड़ 50 लाख रुपये देने की घोषणा करते हैं। अमरगढ़ में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, बिधराना में सब हेल्थ सेंटर को लेकर भूमि उपलब्ध करवाने पर वहां भी बनाने की घोषणा की। नरवाना में नई सब्जी मंडी की जमीन उपलब्ध करवाने पर नई सब्जी मंडी बना दी जाएगी।मेला, धमतान, गढ़ी, दनौदा कलां अनाज मंडियों के निर्माण के लिए पांच करोड़ देने की घोषणा की। टोहाना से धमतान साहिब तक रजवाहे के पुनर्निमाण को लेकर पांच करोड़ की घोषणा की। कैबिनेट मंत्री कृष्ण बेदी द्वारा नरवाना की मेला मंडी में आयोजित रैली में सीएम नायब सैनी ने बोलते हुए कहा कि विपक्ष के लोग झूठ बोल कर जनता को गुमराह करने का काम करते हैं। लोग कहते हैं कि नरवाना घर हैं उनका, टवीट करते रहते हैं लेकिन घर के लिए करते कुछ नही हैं। कांग्रेस कार्यकाल में विकास नहीं होता था। वर्ष 2014 से अबतक नरवाना क्षेत्र में विकास के लिए 2,105 करोड़ रुपये विकास कार्यों पर खर्च किए गए हैं। कांग्रेस कार्यकाल में मात्र में 607 करोड़ रुपये खर्च किए हैं। अब आप स्वयं अंदाजा लगा सकते हैं।

रक्तदान शिविर में समाजसेवा का संदेश

एजेंसी

सोनीपत। नगर निगम मेयर राजीव जैन ने कहा कि रक्त का कोई विकल्प नहीं है, इसलिए रक्तदान से ही जीवन बचाया जा सकता है। रक्तदान को उन्होंने महादान बताते हुए कहा कि हर स्वस्थ व्यक्ति को नियमित रूप से रक्तदान करना चाहिए। वह ईदगाह मदरसे में सोनीपत ब्लड बैंक, महाराणा प्रताप युवा समाज समिति, रक्षक वर्ल्ड समिति एवं आवामी खिदमत समिति द्वारा आयोजित रक्तदान शिविर का उद्घाटन कर रहे थे। पार्षद नीतू दहिया भी उनके साथ मौजूद रही। शिविर में 82 नागरिकों ने रक्तदान किया। मेयर ने रक्तदाताओं को प्रमाण पत्र व बैज देकर सम्मानित किया। इसके बाद मेयर राजीव जैन देवडू गांव की हरिजन चौपाल पहुंचे, जहां रविदास सभा द्वारा भंडारे का आयोजन किया गया। यहां उन्होंने बाबा साहब भीमराव अंबेडकर और संत रविदास की प्रतिमाओं के समक्ष दीप प्रज्वलित कर पुष्प अर्पित किए। उन्होंने कहा कि उनके बताए मार्ग पर चलकर ही समाज का संगठन और कल्याण संभव है। भंडारे में पार्षद मुकेश सैनी सहित कई गणमान्य नागरिक मौजूद रहे।

मुख्यमंत्री के नेतृत्व में हरियाणा प्रदेश विकास के छू रहा आयाम : डा. मिड्ढा

एजेंसी

जींद। हरियाणा विधानसभा के डिप्टी स्पीकर डा. कृष्ण मिड्ढा ने कहा कि जब से भाजपा की सरकार बनी है तब से विकास जोरों पर है। जहां जींद से नरवाना पहुंचने में एक घंटा लगता था आज मात्र 20 से 22 मिनट में पहुंच जाते हैं। ऐसी परियोजनाएं भाजपा ने लाने का काम किया। आज जींद नौ नेशनल हाइवों से जोडा गया है। सीएम द्वारा खेत खलिहान योजना बनाई गई, इससे किसानों को फायदा मिला रहा है। 947 करोड़ की लागत से जींद में मेडिकल कालेज बन रहा है। हरियाणा विधानसभा के डिप्टी स्पीकर डा. कृष्ण मिड्ढा नरवाना में विकास रैली को संबोधित कर रहे थे। पीएम मोदी ने आयुष्मान योजना बनाने का काम किया। मुख्यमंत्री ने चिरायु योजना दी ताकि पैसों की कमी से बिना उपचार के किसी की मौत न हो। प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री ने इस दर्द को समझा और पांच लाख रुपये तक का मुफ्त

उपचार सुविधा दी। प्रदेश में मैरिट पर युवाओं को नौकरी मिली। नरवाना में मंत्री बेदी लगातार विकास करवा रहे हैं। बहनों को डिजीटल लाइब्रेरी की सुविधा दी। युवाओं को जिम की सुविधाएं उपलब्ध करवाई गई। विपक्ष कभी कुछ कहता है तो कभी कुछ कहता है। वो मुख्यमंत्री के लिए बस एक ही बात कहेंगे कि बहुत गुरूर है दरिया को अपने होने पर, जो मेरी प्यास से उलझे धज्जियां उडा दूंगा। मुख्यमंत्री की एक ही सोच है कि उनके दरवाजे हमेशा सबके लिए खुले हैं।

हरियाणा में अपराधियों के लिए शुरू होगी समाज सेवा की 'सज़ा'

ज्योति दर्पण

चंडीगढ़। हरियाणा सरकार ने न्याय प्रणाली में सुधार के लिए 'सामुदायिक सेवा दिशानिर्देश, 2025' लागू किए हैं। इसके तहत कुछ मामलों में अपराधियों को जेल भेजने के बजाय समाजोपयोगी कार्य करने का अवसर मिलेगा। इस नीति का मकसद अपराधों की गंभीरता को कम करना नहीं, बल्कि उन्हें परिवर्तन और सुधार के अवसर के रूप में देखना है।

गृह एवं न्याय प्रशासन की अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ. सुमिता मिश्रा ने इन निर्देशों को लागू करने के आदेश जारी किए हैं। डॉ.मिश्रा ने कहा कि हर अपराध समाज पर एक दाग छोड़ता है, लेकिन यह एक अवसर भी है कि गलती को जनहित में बदला जाए। नई नीति के तहत न्यायाधीशों को विवेकाधिकार होगा कि वे पहली बार अपराध करने वाले पात्र अपराधियों को कारावास की बजाय समाज सेवा का आदेश दें। निर्देशों के तहत मुख्यालय की ओर से समाज सेवाओं को भी चिह्नित किया है। जेलों में बंद कैदी/बंदी

नदियों के किनारे पेड़ लगाने, ग्रामीण स्वास्थ्य केंद्रों में लोगों की मदद करने, विरासत (ऐतिहासिक) स्थलों का संरक्षण, सार्वजनिक पार्कों की सफाई और स्वच्छ भारत अभियान जैसे जनकल्याण कार्यक्रमों में भागीदारी कर सकेंगे। कार्य का चयन अपराधी की उम्र, स्वास्थ्य और कौशल के आधार पर होगा ताकि यह उनके लिए व्यक्तिगत रूप से सार्थक और समाज के लिए लाभकारी बन सके। डॉ. सुमिता मिश्रा ने बताया कि इस नीति से जेलों में भीड़भाड़ घटेगी और सुधारात्मक सुविधाओं पर दबाव कम होगा। वहीं, समुदायों को प्रत्यक्ष रूप से ठोस सुधार का लाभ मिलेगा। अपराधियों की गतिविधियों की प्रगति रिपोर्ट अदालतों को भेजी जाएगी, जिससे न्यायिक अधिकारी वास्तविक समय में निगरानी कर सकेंगे। सरकार का कहना है कि यह नीति जवाबदेही, सहानुभूति और नागरिकता की स्थायी सीख देने का माध्यम बनेगी। अपराधी सीधे उन्हीं समुदायों के लिए योगदान देंगे, जिन्हें उन्होंने चोट पहुंचाई है। उन्होंने कहा कि यह पहल हरियाणा को उन चुनिंदा राज्यों की कतार में ला खड़ा करती है, जो न्याय को केवल दंड नहीं बल्कि सुधार और पुनर्स्थापना का जरिया मानते हैं।

सरकार का दक्षिणी हरियाणा के विकास पर पूरा फोकस: आरती सिंह राव

एजेंसी

रेवाड़ी। हरियाणा प्रदेश की स्वास्थ्य एवं आयुष मंत्री आरती सिंह राव ने कहा कि केंद्र व प्रदेश सरकार जनसेवा को समर्पित हो दक्षिणी हरियाणा के विकास पर पूरा फोकस कर रही है। सरकार की ओर से जनहितकारी योजनाओं के माध्यम से आमजन को लाभान्वित किया जा रहा है। स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव रविवार रेवाड़ी जिला के गांव गंगायचा अहीर में आयोजित धन्यवाद कार्यक्रम में जनसमूह को संबोधित कर रही थी। उन्होंने ग्रामीणों को गोगा नवमी की शुभकामनाएं भी दी। इस मौके पर रेवाड़ी से विधायक लक्ष्मण सिंह यादव, बावल से विधायक डा कृष्ण कुमार व भाजपा जिलाध्यक्ष डा वंदना पोपली भी मौजूद रहे। स्वास्थ्य मंत्री कुमारी आरती सिंह राव ने ग्रामीणों को संबोधित करते हुए कहा कि देश व प्रदेश में तीसरी बार लगातार आपने भाजपा सरकार बनाने में सहभागी बनते हुए विकास की दिशा में सराहनीय कदम बढ़ाए हैं।

उन्होंने कहा कि आपके सहयोग व स्नेह के चलते उनके पिता एवं केंद्रीय मंत्री राव इंद्रजीत सिंह तथा वे स्वयं पूरी जिम्मेवारी के साथ जनसेवा को समर्पित होकर कार्य करने में अपना दायित्व निरंतर निभा रहे हैं। उन्होंने कहा कि अटेली विधानसभा क्षेत्र से वे विधायक बनीं हैं लेकिन उसमें रेवाड़ी जिला के लोगों की अहम भागीदारी रही है, जिसके लिए वे आप सभी का धन्यवाद व्यक्त करने निरंतर रेवाड़ी जिला के लोगों के बीच पहुंच रही हैं।उन्होंने कहा कि केंद्रीय मंत्री राव इंद्रजीत सिंह जहां केंद्र स्तर पर जनहितकारी योजनाओं का लाभ प्रदान करने में हमारा नेतृत्व कर रहे हैं वहीं वे हरियाणा सरकार में स्वास्थ्य मंत्री होने के नाते आमजन को बेहतर तरीके से स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करवाने में अपनी सक्रिय भूमिका निभाने के लिए सजग हैं। उन्होंने कहा कि मैं आपके सुख दुख में साथी बनने के लिए आपके साथ हर पल खड़ी रहूंगी। स्वास्थ्य मंत्री कुमारी आरती सिंह राव ने जानकारी देते हुए कहा कि स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तारीकरण के लिए हरियाणा सरकार के माध्यम से लोगों को बेहतर चिकित्सा सेवा उपलब्ध कराने की दिशा में ठोस कदम उठाए जा रहे हैं। रेवाड़ी सहित पूरे प्रदेश में नागरिक अस्पतालों में चिकित्सा सेवाओं में सुधार किया जा रहा है वहीं अत्याधुनिक स्वास्थ्य उपकरणों से अस्पतालों को परिपूर्ण किया जा रहा है।

जिला अध्यक्षों को हाईकमान के निर्देश,गुटबाजी का हिस्सा न बनें

एजेंसी

चंडीगढ़। कांग्रेस हाईकमान ने हरियाणा के नवनियुक्त जिला अध्यक्षकों को गुटबाजी से दूर रहकर काम करने के निर्देश दिए हैं। हरियाणा कांग्रेस के प्रभारी बीके हरिप्रसाद ने नवनियुक्त 32 जिलाध्यक्षों को बड़ा टॉस्क सौंपा है। उन्होंने स्पष्ट कहा कि यह जिम्मेदारी केवल समर्पण, निष्ठा और क्षमता के आधार पर दी गई है, जिसमें किसी भी प्रकार की सिफारिश या पक्षपात को जगह नहीं दी गई। प्रभारी ने नवनियुक्त अध्यक्षों को निर्देश देते हुए कहा कि वे कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और राहुल गांधी के मार्गदर्शन में प्रदेश नेतृत्व के आदेशों का पालन करें। उन्होंने चेताया कि गुटबाजी से ऊपर उठकर ही संगठन को मजबूत बनाया जा सकता है। हरिप्रसाद ने कहा कि आज हरियाणा का किसान, जवान, नौजवान, दलित और पिछड़ा वर्ग कांग्रेस से उम्मीदें लगाए बैठा है। इसलिए जिलाध्यक्षों को चाहिए कि वे जनता की समस्याओं को लेकर मजबूत लड़ाई लड़ें और केंद्र व प्रदेश की 'दमनकारी सरकार' के खिलाफ आवाज़ बुलंद करें। उन्होंने दोहराया कि कांग्रेस का मूल मंत्र है - सभी नेता सम्मानित हैं और प्रत्येक कार्यकर्ता का मान-सम्मान सबसे ऊपर है। जिलाध्यक्षों का दायित्व है कि वे हर कार्यकर्ता को साथ लेकर चलें और संगठन में विश्वास जगाएं। हरिप्रसाद ने भरोसा जताया कि नवनियुक्त जिलाध्यक्ष कांग्रेस की विचारधारा और नीतियों को जन-जन तक पहुंचाने में अग्रणी भूमिका निभाएंगे और संगठन को नई मजबूती देंगे।

सभी नेता सम्मानित हैं और प्रत्येक कार्यकर्ता का मान-सम्मान सबसे ऊपर है। जिलाध्यक्षों का दायित्व है कि वे हर कार्यकर्ता को साथ लेकर चलें और संगठन में विश्वास जगाएं।

दूबलधन कॉलेज के पुनरुत्थान के लिए 11 सदस्यों की कमेटी का गठन

एजेंसी

झज्जर। हरियाणा के झज्जर जिला के दूबलधन कॉलेज को दोबारा से गौरवशाली स्थान दिलाने के लिए कॉलेज परिसर में ग्रामीणों ने पंचायत का आयोजन किया। पंचायत में लंबे विचार विमर्श के बाद कॉलेज के पुनरुत्थान के लिए 11 सदस्यों वाली कमेटी का गठन करके फैसला हुआ। यह तय किया गया कि पहले कॉलेज में विज्ञान संकाय शुरू करवाया जाए और उसके बाद कॉलेज को विद्यालय स्तर तक पहुंचाया जाए।दूबलधन कॉलेज में सेवामुक्त एसडीओ नसीब सिंह की अध्यक्षता में हुई पंचायत में मेजबान गांव सहित आसपास के कई गांव के प्रमुख लोग शामिल हुए। पंचायत ने कॉलेज को इलाके की भावी पीढ़ी के निर्माण का एक आदर्श संस्थान स्थापित करने के लिए लंबा संघर्ष व योगदान करने का निर्णय लिया। सभी ने संकल्प लिया कि कॉलेज के सुधार व पुनरुत्थान के लिए हम अपने पूर्वजों की तरह तन मन धन से सहयोग और सेवा कार्य करेंगे।पंचायत की कार्रवाई का संचालन प्रोफेसर अजय कादयान ने किया। पंचायत ने कॉलेज के सुधार के लिए 51 सदस्यीय कार्यकारिणी और 11 सदस्यों वाली एकेडमी समिति

बनाने का निर्णय लिया। यह समिति कॉलेज के उत्थान के लिए हर तरह के प्रयास करेगी। पंचायत में अपने विचार व्यक्त करते हुए नसीब सिंह ने कहा कि दूबलधन कॉलेज ने शिक्षा और खेल की अंतरराष्ट्रीय विभूतियों को तैयार करने में योगदान दिया है। यदि यह कॉलेज दोबारा अपने परम वैभव पर पंहुचता है तो इस इलाके की तरक्की को कोई नहीं रोक सकता। इस इलाके की तरक्की का रास्ता दूबलधन कॉलेज से होकर गुजरता है। उन्होंने बताया कि इस पंचायत ने श्रीकृष्ण जन्माष्टमी को शिक्षा सुधार पर्व के रूप में मनाने का निर्णय लेकर, एक इतिहास रचा है। जिससे हमारी भावी पीढ़ी का अच्छे तरीके से निर्माण होगा। शिक्षा मंदिरों से ही देश की तरक्की का रास्ता निकलता है। महर्षि सांदीपिनी ऋषि के आश्रम और दुर्वासा ऋषि के आश्रम की तरह ही दूबलधन कॉलेज ने भी गरीबों के घरों में शिक्षा के उजियारे व सरस्वती मां का प्रसाद घर-घर तक पहुंचाने का काम किया है।

पानीपत के गांव भंडारी के खेतों में तेंदुए की अफवाह से ग्रामीणों में हड़कंप

एजेंसी

पानीपत। पानीपत के मतलौडा क्षेत्र के गांव भंडारी में एक तेंदुए से मेल खाता जंगली जानवर देखा गया है। ग्रामीण इसको तेंदुआ बता रहे हैं और ग्रामीणों को चौकन्ना करने के लिए मुनादी भी कराई गई। जिस महिला ने जानवर की वीडियो बनाई है, उसका कहना है कि वह बचपन से खेतों में काम करती आ रही है। उसने गीदड़, तेंदुआ, जंगली बिल्ली आदि जानवरों को कई बार खेतों में देखा है। तेंदुए की खबर फैलते ही पूरे भंडारी गांव में हल्ला मच गया। लोग घरों से बाहर निकलना बंद हो गए। बच्चे और बुजुर्ग खासतौर पर डर के माहौल में हैं। शाम से ही लोगों ने बाहर निकलना बंद कर दिया। इसी के साथ किसी के घर का कोई सदस्य बाहर था, तो उसे तुरंत फोन कर घर लौटने की बात कही।सरपंच सुरेंद्र ने पूरे गांव में मुनादी करवाई। उन्होंने कहा, किसी भी ग्रामीण को खेतों या सुनसान जगहों पर नहीं जाना चाहिए। यदि जंगली जानवर दिखाई दे तो तुरंत पुलिस को सूचना दें। डरने की बात नहीं है, बस सभी सावधान जरूर रहें। रविवार की सुबह वन विभाग की टीम के साथ पुलिस टीम गांव भंडारी में पहुंची तथा सभी टीमें जानवर की तलाश में जुटे गई । मौके पर पहुंच कर वन विभाग की टीम ने उस जानवर के पद चिन्हों के नमूने उठा लिए। वन विभाग के इंस्पेक्टर सुनील ने बताया कि जो पद चिन्ह उन्हें मौके पर मिले है जिनका साइज तीन सेंटीमीटर का है। को किसी जंगली बिल्ली का है। उन्होंने बताया कि जो गांव वाले शेर कह कर अफवाह फैला रहे है, उन्हें ये नहीं करना चाहिए । उन्होंने बताया कि आमतौर पर तेंदुए के पंजे का निशान आठ से 10 सेंटीमीटर का होता है और शेर के पंजे का निशान 10 से 12 सेंटीमीटर तक होता है। जो निशान हमने उठाए है वह सिर्फ तीन सेंटीमीटर के है। जो किसी जंगली बिल्ली के पंजे के निशान हैं।

गुरुग्राम में अब सक्शन टैंकर्स से बरसाती पानी निकल रहा नगर निगम

एजेंसी

गुरुग्राम। बरसात के बाद शहर की सड़कों, गलियों और चौराहों पर जमा पानी की समस्या से निजात दिलाने के लिए नगर निगम गुरुग्राम ने विशेष कार्य योजना तैयार कर प्रभावी कार्रवाई शुरू कर दी है। इसके तहत निगम की इंजीनियरिंग और स्वच्छता टीमों ने मिलकर सक्शन टैंकर्स की मदद से विभिन्न इलाकों से जमा पानी को हटाने का अभियान तेज कर दिया है। निगमायुक्त प्रदीप दहिया ने स्पष्ट निर्देश दिए हैं कि किसी भी स्थान पर पानी जमा नहीं रहने दिया जाए। यातायात और स्थानीय नागरिकों को किसी भी प्रकार की परेशानी न हो। टीमों को यह भी आदेश दिए गए हैं कि गलियों, कॉर्नरों और भीड़भाड़ वाले क्षेत्रों पर विशेष ध्यान दिया जाए और वहां तुरंत जल निकासी की व्यवस्था की जाए।

प्रदीप दहिया ने कहा कि बरसात के बाद मच्छरों के प्रकोप को रोकने के लिए सभी प्रभावित

स्थानों पर फॉगिंग कराई जाए। निगमायुक्त ने कहा कि जलभराव हटाने के साथ-साथ मलेरिया, डेंगू और अन्य जलजनित बीमारियों की रोकथाम पर भी विशेष फोकस रखा जाएगा। एमसीजी चीफ इंजीनियर विजय ढाका के अनुसार, 20 सक्शन टैंकरों की तैनाती शहर में की गई है और टीमें दिन-रात काम कर रही हैं। निगम का लक्ष्य है कि जल जमाव की समस्या को जल्द से जल्द समाप्त कर शहरवासियों को स्वच्छ और सुरक्षित वातावरण उपलब्ध कराया जा सके।

मदनलाल ढींगरा भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अप्रतिम क्रांतिकारी थे :जगदीश चोपड़ा

एजेंसी

सिरसा। शहीद मदनलाल ढींगरा के शहीदी दिवस पर सिरसा के शहीद मदन लाल ढींगरा चौक पर नागरिक परिषद की ओर से पुष्पांजलि समारोह का आयोजन किया गया। इस दौरान नागरिक परिषद के पदाधिकारियों और सदस्यों के अलावा शहर के गणमान्य लोगों ने मदनलाल ढींगरा की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धा सुमन अर्पित किए । नागरिक परिषद के अध्यक्ष जगदीश चोपड़ा ने कहा कि मदनलाल ढींगरा भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अप्रतिम क्रांतिकारी थे। भारतीय स्वतंत्रता की चिंगारी को अग्नि में बदलने का श्रेय महान शहीद मदन लाल ढींगरा को ही जाता है। भले ही मदन लाल ढींगरा के परिवार में राष्ट्रभक्ति की कोई ऐसी परंपरा नहीं थी किंतु वह खुद से ही देश भक्ति के रंग में रंगे गए थे। वे इंग्लैंड में अध्ययन कर रहे थे जहां उन्होंने विलियम हट कर्जन वायली नामक एक ब्रिटिश अधिकारी की गोली मारकर हत्या कर दी। कर्जन वायली की हत्या के आरोप में उन पर 23 जुलाई, 1909 का अभियोग चलाया गया। उन्होंने कहा कि हमें केवल अधिकारों की बात न करके कर्तव्यों का पालन करना चाहिए तभी देश नंबर वन बन सकेगा। भाजपा के जिला प्रधान एडवोकेट यतिंद्र सिंह ने कहा कि अमर शहीद मदनलाल ढींगरा ने देश के अपने प्राण न्योछावर कर दिए। हम सबको उनकी कुर्बानी से प्रेरणा लेते हुए देश हित में काम करने चाहिएं। हमें राष्ट्र विरोधी लोगों को मुंह तोड़ जवाब देना चाहिए। समाज सेवी एवं वरिष्ठ अधिवक्ता रमेश मेहता ने कहा कि मदन लाल ढींगरा ने बहुत छोटी उम्र में शहादत देकर स्वतंत्रता संग्राम को तेज करने का काम किया। उन्होंने कहा कि मदन लाल ढींगरा की कुर्बानी के दिन आज हम सबको देश के लिए कुछ करने का संकल्प लेना चाहिए यही उनको सच्ची श्रद्धांजलि होगी। नागरिक परिषद के सचिव सुरेंद्र भाटिया ने कहा कि हमारी मांग है

PUBLIC NOTICE

It is for general information that I, NETU RANI D/o RAMESH KUMAR R/o Haibatpur (78), Jind, Haryana-126102, declare that name of mine has been wrongly written as NEETU RANI in my 12th and Graduation educational documents and name of my father has been wrongly written as RAMESH 10th, 12th and Graduation educational documents. The actual name of mine and my father are NETU RANI and RAMESH KUMAR respectively, which may be amended accordingly.

फॉक्सकॉन ने बेंगलुरु में शुरू किया आईफोन-17 का उत्पादन

- भारत में बढ़ रहा ऐपल का निवेश

नई दिल्ली ।

अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के ऐपल को भारत में प्रोडक्शन बंद करने के निर्देश के बावजूद कंपनी ने भारत में उत्पादन बढ़ाने का कदम उठाया है। ताइवान की इलेक्ट्रॉनिक कंपनी फॉक्सकॉन ने बेंगलुरु के देवनहल्ली में अपने नए कारखाने में आईफोन-17 की मैन्युफैक्चरिंग शुरू कर दी है। यह फॉक्सकॉन का चीन के बाहर दूसरा सबसे बड़ा विनिर्माण केंद्र है, जिसमें लगभग 2.8 अरब डॉलर (लगभग 25,000 करोड़ रुपये) का निवेश किया गया है। फिलहाल इस कारखाने में आईफोन-17 का उत्पादन छोटे पैमाने पर चल रहा है। फॉक्सकॉन चेन्नई में भी आईफोन-17 बना रहा है। आईफोन-17 के उत्पादन में थोड़ी बाधा तब आई जब कई चीनी इंजीनियर अचानक भारत से लौट गए, लेकिन फॉक्सकॉन ने ताइवान समेत अन्य देशों से विशेषज्ञ बुलाकर इस कमी को पूरा कर लिया है। ऐपल की योजना इस साल भारत में आईफोन उत्पादन को छह करोड़ यूनिट तक बढ़ाने की है, जो पिछले वित्त वर्ष में लगभग 3.5 से 4 करोड़ यूनिट था। आधिकारिक आंकड़ों के मुताबिक वित्त वर्ष 2024-25 में भारत में ऐपल ने लगभग 22 अरब डॉलर के आईफोन असेंबल किए, जो पिछले वर्ष की तुलना में 60 फीसदी अधिक हैं। ऐपल के सीईओ टिम कुक ने भी कहा है कि जून 2025 तिमाही में अमेरिका में बिकने वाले अधिकांश

आईफोन भारत से आयातित होंगे। दूसरी तिमाही में ऐपल की भारत में आपूर्ति 19.7 फीसदी बढ़ी है और कंपनी की भारतीय स्मार्टफोन बाजार में हिस्सेदारी 7.5 फीसदी पहुंच गई है। इस बीच, भारतीय स्मार्टफोन बाजार में चीनी कंपनी वीवो 19 फीसदी हिस्सेदारी के साथ सबसे आगे है।

भारतीय कंपनियों ने बढ़ाया इक्विटी और बॉन्ड से फंड जुटाने का रुख

कर्ज घटकर कंपनियों की वित्तीय स्थिति मजबूत हुई

नई दिल्ली ।

भारत की कंपनियां अब बैंक कर्ज से दूरी बनाकर इक्विटी और बॉन्ड जैसे वैकल्पिक वित्तीय स्रोतों की ओर तेजी से बढ़ रही हैं। आरबीआई द्वारा ब्याज दरों में 100 आधार अंक की कटौती के बाद कंपनियों के लिए दीर्घकालिक ऋण पूंजी बाजार से सस्ता और सुगम हो गया है। इसका प्रभाव कंपनियों की बैलेंस शीट में भी साफ दिख रहा है, जहां कर्ज घटकर कंपनियों की वित्तीय स्थिति मजबूत हुई है। वित्त वर्ष 2025 में भारत के उद्योग जगत ने क्वालीफाइड इंस्टीट्यूशनल प्लेसमेंट (क्यूआईपी) के माध्यम से 42,000 करोड़ रुपये

से अधिक धन जुटाया। इसी अवधि में कंपनियों ने बड़े सौदों के जरिए 1.07 लाख करोड़ रुपये की फंडिंग हासिल की। वित्त वर्ष 2026 की पहली तिमाही में कंपनियों ने बॉन्ड बाजार से 4 लाख करोड़ रुपये से ज्यादा जुटाकर इतिहास रचा है। यह पिछले वर्ष की समान अवधि में जुटाए गए 2.11 लाख करोड़ रुपये से दोगुना से अधिक है। आईसीआईसीआई बैंक के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि कंपनियों के पास अब फंड जुटाने के कई विकल्प मौजूद हैं। आंतरिक संसाधन प्राथमिक स्रोत हैं, इसके बाद इक्विटी और बॉन्ड बाजार हैं। बैंक ऋण भी विकल्प के रूप में उपलब्ध है, लेकिन बेहतर रेटिंग वाली कंपनियां अपनी फंडिंग को व्यापक बनाने के लिए इन सभी स्रोतों का उपयोग कर रही हैं।

चीन का शेयर बाजार: निवेशकों के लिए चुनौती और बचत की बढ़ती प्रवृत्ति

- चीन के शेयर बाजार में निवेशकों को अपेक्षित रिटर्न नहीं मिल रहा है, जिससे वे बचा रहे पैसा

नई दिल्ली।

चीन दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होने के बावजूद, वहां के लोग खर्च करने के बजाय अधिक बचत कर रहे हैं। इसका प्रमुख कारण चीन का कमजोर और अनिश्चित शेयर बाजार है। पिछले दशक में चीन के शेयर बाजार में कई उतार-चढ़ाव आए हैं, खासकर 10 साल पहले एक बड़ा बुलबुला फटना, जिसने निवेशकों को भारी नुकसान पहुंचाया। तब से बाजार अब भी उस स्तर पर नहीं पहुंच पाया है, जिससे लोगों का निवेश पर भरोसा कम हुआ है। एक रिपोर्ट के अनुसार अगर किसी निवेशक ने 10 साल पहले अमेरिका के एसएंडपी 500 इंडेक्स में 10,000 डॉलर लगाए होते, तो आज उसकी रकम तीन गुना से अधिक हो गई होती। वहीं, चीन के सीएसआई 300 बेंचमार्क में इतनी ही रकम लगाने पर निवेशक को केवल 3,000 डॉलर का लाभ हुआ होगा। यह दर्शाता है कि चीन के शेयर बाजार में निवेशकों को अपेक्षित रिटर्न नहीं मिल रहा है, जिससे वे खर्च करने की बजाय पैसे बचाने में लगे हैं। चीन के शेयर बाजार की संरचना भी इसकी समस्या को

बढ़ा रही है। करीब 35 साल पहले इस बाजार को मुख्य रूप से सरकारी परियोजनाओं के लिए पूंजी जुटाने के लिए बनाया गया था, न कि निवेशकों को लाभ देने के लिए। इस वजह से बाजार में शेयरों की अधिकता और अनुचित व्यापार प्रथाएं आम हो गईं, जो आज भी 11 ट्रिलियन डॉलर के बाजार पर असर डाल रही हैं। राष्ट्रपति शी जिनपिंग घरेलू खर्च बढ़ाकर 5 फीसदी की आर्थिक विकास दर हासिल करना चाहते हैं, लेकिन इसके लिए उन्हें शेयर बाजार में सुधार और निवेशकों का विश्वास बहाल करना होगा। विशेषज्ञों का कहना है कि चीन का पूंजी बाजार निवेशकों के लिए चुनौतीपूर्ण रहा है, जबकि फाइनेंसर्स को लाभ पहुंचाया है। इस खराब आर्थिक माहौल में चीन की बचत दर 35 फीसदी तक पहुंच गई है, जो कि डिस्पोजेबल इनकम का बड़ा हिस्सा है। इस स्थिति को बदलना आसान नहीं होगा, क्योंकि आर्थिक अनिश्चितता और बाजार की कमजोर स्थिति लोगों को खर्च करने के बजाय बचाने पर मजबूर करती है।

दिल्ली एयरपोर्ट दुनिया के चुनिंदा 6 एयरपोर्ट्स में शामिल हुआ

- सालाना क्षमता 109 मिलियन यात्रियों तक पहुंची

नई दिल्ली ।

दिल्ली इंटरनेशनल एयरपोर्ट लिमिटेड (डीआईएएल) के तहत संचालित दिल्ली एयरपोर्ट ने एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। मई 2023 में टर्मिनल-1 के पूरी तरह से चालू होने के बाद, दिल्ली एयरपोर्ट की यात्री क्षमता 109 मिलियन (10.9 करोड़) तक पहुंच गई है। इस उपलब्धि के साथ यह एयरपोर्ट एशिया का दूसरा और भारत का अकेला ऐसा हवाई अड्डा बन गया है, जो सालाना 100 मिलियन से अधिक यात्रियों को संभाल सकता है। इससे पहले इस क्लब में केवल टोक्यो हानेडा एयरपोर्ट ही शामिल था। सरकार यदि टर्मिनल-2 के पुनर्निर्माण और आधुनिकीकरण को मंजूरी देती है, तो दिल्ली एयरपोर्ट की कुल क्षमता 140 मिलियन यात्रियों तक बढ़ सकती है।

फिलहाल यह प्रस्ताव विचाराधीन है। दिल्ली-एनसीआर क्षेत्र में नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट (जेवर) के इस साल नवंबर तक शुरू होने की उम्मीद है। इसकी शुरुआती क्षमता सालाना 12 मिलियन यात्रियों की होगी, जो दिल्ली एयरपोर्ट पर बढ़ते दबाव को कम करने में मदद करेगा। 2024 में दिल्ली एयरपोर्ट ने 80 मिलियन से अधिक यात्रियों को सफलतापूर्वक संभाला है। वैश्विक स्तर पर देखें तो ऐसे एयरपोर्ट जिनकी क्षमता 100 मिलियन से ऊपर है, उनमें अटलांटा (125.48 मिलियन), दुबई (120 मिलियन), टोक्यो हानेडा (110 मिलियन), लंदन हीथ्रो (103 मिलियन) और डलास (102.9 मिलियन) शामिल हैं। एयरपोर्ट्स के बीच प्रतिस्पर्धा तेज़ हो रही है। इस्तांबुल एयरपोर्ट की क्षमता इस साल के अंत तक 120 मिलियन तक पहुंचने की उम्मीद है, जबकि सऊदी अरब का किंग सलमान इंटरनेशनल एयरपोर्ट 2030 तक 120 मिलियन और 2050 तक 185 मिलियन यात्रियों की सेवा देने का लक्ष्य रखता है। इस तेजी से बढ़ती क्षमता से वैश्विक हवाई यात्रा का नया युग दिख रहा है।

डेटा सुरक्षा और नवाचार के लिए भारत को स्वदेशी यूपीआई एप की जरूरतः एसबीआई

नई दिल्ली।

भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) की एक ताजा रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत के यूपीआई भुगतान क्षेत्र में फिलहाल कुछ बड़े तीसरे पक्ष एप्लिकेशन का प्रभुत्व है, जिनमें फोनपे, गूगल पे और पेटीएम शीर्ष स्थान पर हैं। जूलाई 2025 के आंकड़ों के अनुसार, फोनपे ने 8931 मिलियन लेनदेन और 12,20,141 करोड़ रुपये के मूल्य के लेनदेन किए हैं। इसके बाद गूगल पे ने 692.3 करोड़ लेनदेन और 8,91,297 करोड़ रुपये के लेनदेन किए, जबकि पेटीएम ने 136.6 करोड़ लेनदेन और 1,43,651 करोड़ रुपये के लेनदेन दर्ज किए। एसबीआई रिपोर्ट में बताया गया है कि इन प्रमुख प्लेटफार्मों पर विदेशी स्वामित्व या प्रभाव मौजूद है, जिससे यूपीआई डेटा कुछ बड़े खिलाड़ियों के पास केंद्रित हो गया है। इस स्थिति में देश के वित्तीय पारिस्थितिकी तंत्र के लिए यह जरूरी है कि एक घरेलू, काउंटर इंट्यूटिव यूपीआई ऐप विकसित किया जाए, जो न केवल लेनदेन डेटा की सुरक्षा को सुनिश्चित करे, बल्कि फिनटेक नवाचार को भी भारत की जरूरतों और प्राथमिकताओं के अनुरूप बनाए। रिपोर्ट में यह भी सुझाव दिया गया है कि घरेलू यूपीआई ऐप की मौजूदगी से भारत को विदेशी प्रभाव से मुक्त होकर वित्तीय डेटा पर अधिक नियंत्रण मिलेगा। इससे देश की डिजिटल

भुगतान प्रणाली की मजबूती के साथ-साथ वित्तीय स्वायत्तता भी बढ़ेगी। इसके अलावा, यह कदम भारतीय स्टार्टअप्स और फिनटेक कंपनियों को भी प्रोत्साहन देगा और नवाचार को बढ़ावा देगा।

रुपया बढ़त पर बंद

मुंबई । अमेरिकी डॉलर के मुकाबले सोमवार को रुपया 20 पैसे की तेजी के साथ ही 87.37 रुपये पर बंद हुआ। वहीं पिछले कारोबारी दिन रुपया 87.57 पर बंद हुआ था। आज सुबह रुपया तेजी और निवेशकों की सकारात्मक धारणा के चलते अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 20 पैसे की मजबूती के साथ 87.39 पर पहुंच गया। अंतरबैंक विदेशी मुद्रा बाजार में रुपया 87.46 पर खुला और फिर 87.39 के स्तर पर पहुंचा, ये पिछले सत्र के बंद स्तर 87.59 से 20 पैसे ऊपर है। शुक्रवार को स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में मुद्रा और शेयर बाजार बंद थे। कारोबारियों के अनुसार भारत और अमेरिका के बीच व्यापार शुल्क को लेकर जारी अनिश्चितता के बीच बाजार सहभागियों ने सतर्क रुख अपनाया है। डॉलर सूचकांक जो छह प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले अमेरिकी डॉलर की स्थिति को दिखाता है, 0.01 फीससदी की हल्की बढ़त के साथ 97.86 पर बंद हुआ।

पेट्रोल-डीजल की कीमतों में स्थिरता जारी

नई दिल्ली । देशभर में पेट्रोल और डीजल की कीमतों में सोमवार को भी कोई बदलाव नहीं किया गया है। सरकारी तेल विपणन कंपनियों ने 18 अगस्त को भी दरों को यथावत बनाए रखा है। राजस्थान की राजधानी जयपुर में एक लीटर पेट्रोल की कीमत 104.72 और डीजल 90.21 रुपए प्रति लीटर पर बनी हुई है। लंबे समय से यहां सौ रुपए से अधिक पेट्रोल खरीदना आम लोगों की जेब पर भारी पड़ रहा है। देश के अन्य प्रमुख शहरों में भी स्थिति लगभग समान है। मुंबई में पेट्रोल 104.21 और डीजल 92.15, कोलकाता में पेट्रोल 103.94 और डीजल 90.76 प्रति लीटर है। वहीं लखनऊ में पेट्रोल 94.69 और डीजल 87.80 लीटर बिक रहा है। इंदौर में पेट्रोल 106.48 प्रति लीटर की ऊंचाई पर पहुंच गया है। गौरतलब है कि मार्च 2024 के बाद से पेट्रोल और डीजल की कीमतों में किसी बड़े बदलाव की घोषणा नहीं की गई है। हालांकि, इस बीच कभी-कभार 1-2 रुपए प्रति लीटर का मामूली उतार-चढ़ाव जरूर देखा गया। तेल कंपनियां प्रतिदिन सुबह 6 बजे नई कीमतें अपडेट करती हैं, लेकिन पिछले कई महीनों से उपभोक्ताओं को राहत नहीं मिल पाई है।

समतल इस्पात पर सुरक्षा शुल्क की सिफारिश सराहनीय कदम-आईएसए

नई दिल्ली। वाणिज्य मंत्रालय के व्यापार उपचार महानिदेशालय (डीजीटीआर) ने कुछ समतल इस्पात उत्पादों के आयात पर तीन वर्षों के लिए 12 फीसदी सुरक्षा शुल्क लगाने की सिफारिश की है। इसका उद्देश्य अचानक आयात वृद्धि से घरेलू उत्पादकों की रक्षा करना है। भारतीय इस्पात संघ (आईएसए) के अध्यक्ष ने इस फैसले का स्वागत किया है। उन्होंने कहा कि यह कदम आत्मनिर्भर भारत अभियान को मजबूती देगा और घरेलू इस्पात उद्योग को संरक्षण प्रदान करेगा। उन्होंने यह भी कहा कि भले ही प्रस्तावित शुल्क वैश्विक मानकों से कम हो, लेकिन इससे यह संकेत मिलता है कि सरकार स्थानीय उद्योगों को समर्थन देने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने न्यूनतम आयात मूल्य जैसी नीतियों को भी उद्योग के लिए एक सकारात्मक सुरक्षा जाल बताया।

सेबी की निपटान याचिकाओं में बड़ी वृद्धि, 798 करोड़ का शुल्क वसूला

- पिछले वर्ष के 434 आवेदनों की तुलना में 62 फीसदी अधिक

नई दिल्ली। वित्त वर्ष 2024-25 में बाजार नियामक सेबी को प्रतिभूति नियमों के उल्लंघन से जुड़े मामलों में 703 निपटान याचिकाएं प्राप्त हुईं, जो पिछले वर्ष के 434 आवेदनों की तुलना में 62 फीसदी अधिक हैं। यह वृद्धि दर्शाती है कि बाजार सहभागियों में लंबी कानूनी प्रक्रिया से बचते हुए विवाद सुलझाने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। सेबी की नवीनतम वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार प्राप्त याचिकाओं में से 284 मामलों का निपटारा किया गया, जबकि 272 याचिकाएं वापस ली गईं, अस्वीकृत की गईं या लौटा दी गईं। निपटाए गए मामलों से सेबी ने 798 करोड़ रुपये निपटान शुल्क और 65 करोड़ रुपये वसूली शुल्क के रूप में प्राप्त किए। निपटान आदेश मुख्य रूप से भेदिया व्यापार, धोखाधड़ीपूर्ण व्यवहार, वैकल्पिक निवेश कोष, म्यूचुअल फंड और विदेशी पोर्टफोलियो निवेशक से संबंधित नियमों के उल्लंघन पर जारी किए गए। सेबी का निपटान तंत्र पक्षकारों को कुछ शर्तों और शुल्क के साथ मामले समाप्त करने का विकल्प देता है, जिससे मुकदमेबाजी से बचा जा सकता है। साथ ही 2024-25 में प्रतिभूति अपीलीय न्यायाधिकरण (सैट) में सेबी से जुड़े 533 नई अपीलें दायर की गईं, जो पिछले वर्ष की 821 अपीलों की तुलना में कम हैं। इनमें से लगभग 62 फीसदी अपीलें धोखाधड़ी और अनुचित व्यापार व्यवहार निषेध विनियम, 2003 के उल्लंघन से जुड़ी थीं।

शेयर बाजार तेजी के साथ बंद

सेंसेक्स 676 , निफ्टी 245 अंक ऊपर आया

मुम्बई ।

भारतीय शेयर बाजार सोमवार को तेजी के साथ बंद हुआ। सप्ताह के पहले ही कारोबारी दिन बाजार में ये तेजी दुनिया भर से मिले अच्छे संकेतों के साथ ही खरीदारी हावी रहने से आई है। दिन भर के कारोबार के बाद 30 शेयरों पर आधारित बीएसई सेंसेक्स 676.09 अंकों की बढ़त के साथ ही 81,273.75 अंकों पर बंद हुआ। इसी तरह 50 शेयरों वाला एनएसई का निफ्टी भी 245.65 अंकों की बढ़त के साथ ही 24,876.95 अंकों पर बंद हुआ।

सेंसेक्स की 30 में से 20 कंपनियों के शेयर बढ़त के साथ ही बंद हुए। वहीं शेष सभी 10 कंपनियों के शेयर नीचे आये। इसी प्रकार निफ्टी 50 की 50 में से 38 कंपनियों के शेयर बढ़त के साथ ऊपर आकर बंद हुए जबकि 12 कंपनियों के शेयर नुकसान के साथ ही नीचे आये। आज सेंसेक्स की कंपनियों में शामिल मारुति सुजुकी के शेयर सबसे ज्यादा 8.94 फीसदी बढ़े। वहीं आईटीसी के शेयर आज सबसे ज्यादा 1.26 फीसदी गिरे।

आज सेंसेक्स की प्रमुख कंपनियों में बजाज

फाइनेंस के शेयर 5.02 फीसदी, अल्ट्राटेक सीमेंट 3.71 फीसदी, बजाज फिनसर्व 3.70 फीसदी, महिंद्रा एंड महिंद्रा 3.54 फीसदी, हिंदुस्तान यूनिलीवर 3.46 फीसदी, ट्रेंट 2.82 फीसदी, एशियन पेंट्स 2.29 फीसदी, अडाणी पोर्ट्स 2.08 फीसदी, टाइटन 1.86 फीसदीकी बढ़त के साथ बंद हुए।

दूसरी ओर, सोमवार को एलएंडटी के शेयरों में 1.18 फीसदी, टेक महिंद्रा 1.02 फीसदी, एनटीपीसी 0.91 फीसदी, इंफोसिस 0.82 फीसदी, बीईएल 0.62 फीसदी, सनफार्मा 0.62 फीसदी की गिरावट रही।

इससे पहले आज सुबह सेंसेक्स 700 अंक से ज्यादा की उछाल के साथ 81,315 पर खुला और । इसी तरह एनएसई का निफ्टी50 भी 315.85 अंक की बढ़त के साथ 24,947 पर कारोबार करता दिखा। बाजार में यह तेजी ऑटो, कंज्यूमर ड्यूरेबल्स, फाइनेंशियल सर्विसेज और एफएमसीजी सेक्टर के शेयरों में जोरदार खरीदारी के चलते देखी गई। आज एशियाई बाजारों में जापान और ताइवान के शेयरों में तेजी रही। जापान का निक्केई 225 इंडेक्स 0.7 फीसदी ऊपर कारोबार कर रहा था। हांगकांग का हैंगसेंग 0.45 फीसदी ऊपर रहा। जबकि दक्षिण कोरिया का कोस्पी सूचकांक 1.23 फीसदी नीचे रहा। वहीं, अमेरिकी शेयर बाजारों में शुक्रवार को गिरावट दर्ज की गई थी।

मणप्पुरम फाइनेंस और टाइटन शेयरों में आई मजबूती

नई दिल्ली । एंजेल वन के एक सीनियर टेक्निकल और डेरिवेटिव एनालिस्ट के अनुसार मणप्पुरम फाइनेंस ने हाल के हफ्तों में जोरदार रिकवरी दिखाई है। इस स्टॉक ने डेली चार्ट पर सभी प्रमुख ईएमए को पार कर लिया है और ब्रेकआउट की नेकलाइन तक लौटकर फिर से तेजी पकड़ता दिख रहा है। पॉजिटिव क्रॉसओवर, मोमेंटम इंडिकेटर्स का सपोर्ट और बढ़ा हुआ वॉल्यूम इस तेजी को मजबूती प्रदान कर रहे हैं। कृष्णन ने निवेशकों को सलाह दी है कि वे मणप्पुरम फाइनेंस को 264 से 260 के स्तर पर खरीद सकते हैं। स्टॉप लॉस 245 रखा जाना चाहिए, जबकि टारगेट प्राइस 294 से 300 रूपए तक निर्धारित है। वहीं टाइटन के शेयरों में भी हाल ही में अच्छी तेजी देखने को मिली है। इस स्टॉक ने डेली चार्ट पर 'डबल बॉटम' जैसा पैटर्न बनाकर मजबूती का संकेत दिया है। टाइटन 20 डेमा के ऊपर कारोबार कर रहा है और इसका ट्रेंड बुलिश बना हुआ है। डेली चार्ट पर हायर लो फॉर्मेशन और पॉजिटिव क्रॉसओवर तकनीकी रूप से तेजी का समर्थन कर रहे हैं। सुपर ट्रेंड इंडिकेटर भी हाल के उछाल के बाद बुलिश सिग्नल दे रहा है।

भारत में इस्पात संयंत्र स्थापित करेंगे जेएसडब्ल्यू स्टील और पॉस्को

– 60 लाख टन प्रति वर्ष (6 एमटीपीए) की क्षमता प्रस्तावित

नई दिल्ली ।

भारतीय इस्पात कंपनी जेएसडब्ल्यू स्टील और दक्षिण कोरिया की अग्रणी इस्पात निर्माता कंपनी पॉस्को ने भारत में 60 लाख टन प्रति वर्ष (6 एमटीपीए) क्षमता वाला एकीकृत इस्पात संयंत्र स्थापित करने की संभावनाओं का अध्ययन करने के लिए एक गैर-बाध्यकारी समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। यह समझौता पिछले वर्ष अक्टूबर में किए गए समझौते की अगली कड़ी है। दोनों कंपनियां अब संयंत्र के स्थान चयन, निवेश शर्तें, संसाधन उपलब्धता और अन्य महत्वपूर्ण पहलुओं पर विचार करेंगी। संभावित स्थान के रूप में ओडिशा को प्राथमिकता दी जा रही है, जहां प्राकृतिक संसाधनों और संभार-तंत्र की बेहतर सुविधाएं उपलब्ध हैं। इस साझेदारी का उद्देश्य भारत में एक वैश्विक स्तर का प्रतिस्पर्धी विनिर्माण केंद्र स्थापित करना है, जो घरेलू और निर्यात दोनों बाजारों की मांग को पूरा करेगा। प्रस्तावित संयंत्र 50-50 संयुक्त उद्यम के रूप में स्थापित किया जाएगा। मुंबई में आयोजित कार्यक्रम में समझौते पर हस्ताक्षर किए गए, जिसमें पॉस्को होल्डिंग्स के अध्यक्ष ली जू-ताई और जेएसडब्ल्यू स्टील के सीईओ जयंत आचार्य उपस्थित थे। जयंत आचार्य ने इसे जेएसडब्ल्यू की निष्पादन क्षमता और पॉस्को की तकनीकी विशेषज्ञता का संयोजन बताया।

वहीं ली जू-ताई ने भारत को वैश्विक इस्पात मांग का भविष्य बताया और इस साझेदारी को दीर्घकालिक मूल्य सृजन की दिशा में महत्वपूर्ण कदम करार दिया।

सेबी करेगा मार्जिन ट्रेडिंग और एंजल फंड्स नियमों की व्यापक समीक्षा

मुंबई ।

सेबी वित्तीय बाजारों में पारदर्शिता और जोखिम प्रबंधन को बेहतर बनाने के लिए मार्जिन ट्रेडिंग फंडिंग (एमटीएफ) के तहत मार्जिन फ्रेमवर्क की समीक्षा करने जा रहा है। वित्त वर्ष 2024-25 की अपनी वार्षिक रिपोर्ट में सेबी ने कहा कि वर्तमान मार्जिनिंग नियमों की व्यापक समीक्षा जारी है। इस प्रक्रिया का उद्देश्य क्लीयरिंग कॉरपोरेशनों में जोखिम प्रबंधन को और प्रभावी बनाना है। मार्जिन ट्रेडिंग के तहत निवेशक बिना पूरी राशि दिए शेयर खरीद सकते हैं, जहां वे केवल कुछ प्रतिशत का भुगतान करते हैं और बाकी रकम मार्जिन या गिरवी रखे शेयरों से कवर होती है। साथ ही, सेबी एमटीएफ के तहत पात्र शेयरों की सूची की भी समीक्षा कर रहा है। इसके अलावा, सेबी एंजल फंड्स के नियामक ढांचे में बदलाव पर भी विचार कर रहा है। इस समीक्षा का मकसद फंड रेजिंग, निवेश की शर्तों और संचालन से जुड़े नियमों को आसान और व्यवस्थित बनाना है, ताकि स्टार्टअप्स को निवेश उपलब्ध कराने में सहायता मिल सके। एंजल फंड्स स्टार्टअप्स के लिए एक महत्वपूर्ण फंडिंग स्रोत हैं।

गुलामी में भारत की हथकरघा उद्योग को नुकसान

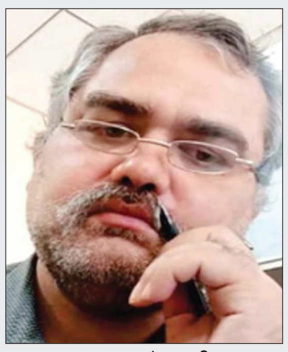

संजय गोस्वामी

भारत में हस्तशिल्प उद्योग सदियों से फलता-फूलता आ रहा था। सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी के आरंभ में भारत में निर्मित वस्तुएं विश्व प्रसिद्ध थीं। प्राचीनकाल से ही मिश्र वासियों, ईरानियों, चीनियों, यूनानियों, रोमनों, अरबों और यूरोपियनों ने भारत के साथ हस्तशिल्प में बने वस्तुओं के लिए व्यापारिक सम्बन्ध रखे। भारतीय हस्तशिल्प उत्पाद इन देशों में प्रशंसा और ईर्ष्या का कारण बना रहा।

भारत के गुलामी के दौरान ब्रिटिश सरकार द्वारा भारत की हथकरघा संस्कृति को पूँजीपति के द्वारा कैसे नष्ट किया गया, इसके बारे में जानना आवश्यक है पुराने हस्तशिल्पों का ह्रास भारत के आर्थिक संक्रमण की सर्वाधिक नाटकीय घटना है। भारत में हस्तशिल्प उद्योग सदियों से फलता-फूलता आ रहा था। सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी के आरंभ में भारत में निर्मित वस्तुएं विश्व प्रसिद्ध थीं। प्राचीनकाल से ही मिश्र वासियों, ईरानियों, चीनियों, यूनानियों, रोमनों, अरबों और यूरोपियनों ने भारत के साथ हस्तशिल्प में बने वस्तुओं के लिए व्यापारिक सम्बन्ध रखे। भारतीय हस्तशिल्प उत्पाद इन देशों में प्रशंसा और ईर्ष्या का कारण बना रहा। युगों तक इसके कारण भारत को 'शानदार भारत' कहा गया। परन्तु भारत में जैसे-जैसे अंग्रेजों की राजनीतिक सत्ता में बढ़ोत्तरी हुई और जब उन्होंने भारत के आर्थिक जीवन में हस्तक्षेप करने शुरू किए, भारत के हस्तशिल्प उद्योगों का बड़ा ही आकस्मिक एवं सर्वग्राही विध्वंस होने लगा।भारतीय हस्तशिल्प उद्योगों में ह्रास के यद्यपि अनेक कारण रहे, परन्तु इसके कई कारण कतिपय रूप से महत्वपूर्ण हैं। जैसे इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप अंग्रेजों द्वारा भारत पर अपने औद्योगिक अर्थव्यवस्था को लादना, भारत में पुराने देशी दरबारों के संरक्षण का लोप, मशीन उद्योगों की शुरूआत, विदेशी शासन की भारत में स्थापना और उसका राजनीतिक दबाव, बिट्रेन की आर्थिक नीति जिसके तहत उसने भारत को मूल रूप से कृषि प्रधान बनाए रखने की कोशिश की, 1813 ई. का चार्टर एक्ट इत्यादि। अर्थशास्त्र का एक आधारभूत सिद्धांत है कि सहज श्रम से या औद्योगिक तकनीकों से वस्तुओं के उत्पादन में अपेक्षाकृत कम खर्च होता है। इस तरह मशीन उद्योगों के द्वारा कम समय में अधिक और सस्ते मालों की बिक्री प्रारंभ हुई, जिससे हस्तशिल्प से निर्मित वस्तुओं की मांग तथा बिक्री में कमी आई।मशीनीकरण से नुकसानरू हस्तशिल्प का विनाश अंग्रेजी सत्ता के राजनीतिक दबाव व विदेशी मशीन उद्योगों के सस्ते उत्पादनों के कारण हुआ। इसके परिणामस्वरूप हस्तशिल्प उद्योगों के कारीगरों की जीविका का साधन नष्ट हो गया। यद्यपि 1850 ई. के पश्चात भारत में आधुनिक उद्योगों की स्थापना भी हुई, परन्तु इतनी तेजी से नहीं कि

बेरोजगारी और बबार्दी के कगार पर पहुँचे कारीगरों और दस्तकारों को पूर्ण रोजगार मिल जाए।भारतीय हस्तशिल्पी अपने द्वारा निर्मित उत्कृष्ट किस्म की वस्तुओं को विदेश भेजते थे तो वहाँ भी केवल अभिजात और कुलीन वर्ग के लोग ही साधारणतया उसे खरीद पाते थे। इस प्रकार की सीमित मंडी तब और भी सीमित हो गई जब भारतीय वस्तुओं के प्रति विदेश में अवरोधक कानून बनाए जाने लगे। इसका भारतीय दस्तकारी व हस्तशिल्प पर बुरा प्रभाव पड़ा। रोजमर्रा की आवश्यकताओं का उत्पादन भारतीय हस्तशिल्प व दस्तकारी उत्पादन के विकास के लिए आवश्यक था, लेकिन इसे प्राथमिकता नहीं मिली।ब्रिटेन तथा अन्य देशों में मशीन से निर्मित सस्ती वस्तुओं की बाढ़ भारत के ग्रामीण इलाकों में हस्तशिल्प के पतन का मूल कारण था। रेलवे तथा परिवहन के अन्य साधनों के विकास से इस बाढ़ को फैलने में मदद मिली, क्योंकि अब ग्रामीण लोगों की पहुँच भी विदेशों में उत्पादित सस्ती वस्तुओं तक होने लगी। कारखानों में विकसित उत्पादन की सस्ती और लाभकारी तकनीक का मुकाबला हस्तशिल्प व दस्तकारी न कर सकी और प्रायः नष्ट हो गई। औद्योगिक क्रांति का दौररू इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति के परिणामस्वरूप भारतीय हस्तशिल्प व दस्तकारी उद्योगों का जम कर विनाश हुआ। ईस्ट इंडिया कम्पनी ने इंग्लैंड के उत्पादन को भारत में खपाने का प्रयास किया। 1813 ई. के कम्पनी चार्टर एक्ट के द्वारा जब भारत में कम्पनी के व्यापारिक एकाधिकार को लगभग समाप्त कर दिया गया तो भारतीय बाजारों में सस्ते दर की अच्छे किस्म की वस्तुओं की बाढ़ आ गई।इससे भारतीय हस्तशिल्प व दस्तकारी उद्योगों द्वारा बनाई गई वस्तुओं की बिक्री में भारी कमी आई। पूँजी की कमी, तकनीकी ज्ञान के अभाव आदि के कारणों से भारत औद्योगिकीकरण का लाभ न उठा सका और आर्थिक रूप से पिछड़ गया। ग्रामीण उत्पादन प्रणाली में मशीन का प्रयोग बढ़ने से भी हस्तशिल्प उद्योगों का ह्रास हुआ, मशीनों द्वारा स्वाभाविक रूप से बढ़ती मांग को पूरा किया जाने लगा।देशी रजवाड़े हस्तशिल्प उद्योगों के संरक्षक थे। उनके संरक्षण के समाप्त होने के कारण हस्तशिल्प में उत्पादित वस्तुओं के खरीददार समाप्त हो गए, जिसका दस्तकारी व हस्तशिल्प पर काफी बुरा प्रभाव पड़ा। ईस्ट इंडिया कम्पनी यद्यपि इन उद्योगों को प्रश्रय प्रदान कर सकती थी, परन्तु उसने अपने गृह राज्य के दबाव में आ कर ऐसा काम किया जो भारतीय हस्तशिल्प उद्योग के लिए अहितकर हुए। हस्तशिल्प व दस्तकारी उद्योगों का इसलिए भी विनाश हुआ कि अंग्रेजों की सीमा शुल्क नीति और परिवहन नियमन के तरीके भारत के हित के प्रतिकूल में थे, जिससे भारतीय व्यापारियों को व्यापार करने में अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। उदाहरण स्वरूप लार्ड लिंटन के शासनकाल में भारत में बनी कपास की वस्तुएं जो बाहर के देशों में भेजी जाती थी, उन पर अतिरिक्त शुल्क लगाया गया, जबकि भारत में इंग्लैंड से लाई कई कपास की वस्तुओं पर इस शुल्क को माफ कर दिया गया। इसके परिणामस्वरूप भारतीय वस्तुओं के मूल्य में वृद्धि हुई, जबकि इंग्लैंड में बनी वस्तुओं के मूल्य में कमी। इससे भारतीय वस्तुओं की मांग पर काफी बुरा प्रभाव पड़ा, जिससे हस्तशिल्प उद्योग भी प्रभावित हुआ। भारतीय हस्तशिल्प और दस्तकारी उद्योगों के ह्रास का एक कारण इनके मंडी या बाजार का सीमित होना भी रहा, चूँकि भारत के हस्त शिल्प उद्योग मध्ययुगीन समाज के सीमित अभिजात्य वर्ग की पहुँच तक ही सीमित थे।ब्रिटेन की आर्थिक नीति के कारण भी परम्परागत हस्तशिल्प व दस्तकारी उद्योगों का विनाश हुआ। इस नीति के तहत भारत में नये उद्योगों को विकसित होने से रोका गया। क्योंकि भारत में नये उद्योगों के विकास से ब्रिटेन में उत्पादित वस्तुओं की भारत में खपत घट जाती। इसके अलावे एक अन्य कारण से भी ब्रिटेन ने भारत को मूलतः कृषि प्रधान बनाए रखने का प्रयास किया। चूँकि इंग्लैंड को अपने उद्योगों को चलाने के लिए भारतीय कच्चे मालों के उत्पाद की जरूरत थी। इस तरह भारत एक औद्योगिक राष्ट्र का कृषि प्रधान औपनिवेशिक उपयोग बन कर रह गया।महात्मा गांधी ने कभी कहा था, ह्यह्यसिर्फ यह कहना ही काफी नहीं है कि हस्तकरघा एक ऐसा उद्योग है जिसे पुनर्जीवित किये जाने की आवश्यकता है। बल्कि सबसे बड़ी आवश्यकता इस बात पर जोर देने की है कि यह हमारा केंद्रीय उद्योग है और अगर हमें अपनी ग्रामीण संस्कृति को वापस पाते हुए दोबारा स्थापित करना चाहते है तो हमें इस ओर भी ध्यान देना होगा।' चाहे वह कलाकारी हो, बुनाई या नक्काशी हो या फिर निर्माण और बढ़ईगीरी हो, जिन लोगों ने इन्हें तैयार करने में अपना अधिकतर समय बिताया होता है वही इस काम से मिलने वाली संतुष्टि को बेहतर तरीके से जान सकते हैं।

संपादकीय

दांव पर दांव

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने स्वतंत्रता दिवस पर अपने संबोधन में देश की जनसांख्यिकी संरचना बदलने की साजिश के प्रति चेतावनी दी और कहा कि आत्मनिर्भरता, आयात-निर्यात, रुपये-पाउंड़ या ड़ॉलर तक सीमित नहीं, बल्कि हमारी अपनी क्षमताओं से जुड़ी है। अपने 103 मिनट लंबे भाषण में मोदी ने भारत की पहली सेमी कंड़क्टर चिप बनाने से लेकर जेट इंजन बनाने और परमाणु ऊर्जा के दस गुना विस्तार की बात की। जीएसटी यानी वस्तु एवं सेवा कर सुधार पर गठित टास्क फोर्स के परिणामस्वरूप आवश्यक वस्तुओं की कीमत में राहत की भी घोषणा की। साथ ही, एक लाख करोड़. रुपये का नया कोष बनाने का ऐलान किया जिसके तहत रोजगार सृजन होगा। निजी क्षेत्र में पहली मर्तबा नौकरी पाने वालों को पंद्रह हजार रुपये का अनुदान देकर इस क्षेत्र को प्रोत्साहित किया जाएगा। साइबर सुरक्षा, एआई, ड़ीप-टेक और ऑपरेटिंग सिस्टम में नवाचार पर भी जोर दिया। 2035 तक सुदर्शन चक्र कवच शस्त्र प्रणाली का निर्माण करने, सटीक जवाबी हमला करने तथा सैन्य और नागरिक क्षेत्रों की रक्षा की प्रतिबद्धता पर प्रकाश ड़ाला। अन्य देशों पर उर्वरक निर्भरता कम करने और महत्त्वपूर्ण खनिजों पर आत्मनिर्भरता की बात भी की। मोदी ने चौतरफा बातें करने के बीच भाजपा और उसकी

वैचारिक मातृ संस्था राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की प्रशंसा करते हुए उसे दुनिया का सबसे बड़ा एनजीओ बताया। राजनीतिक हलकों में इसे रणनीति का हिस्सा माना गया क्योंकि ऐसा किसी प्रधानमंत्री द्वारा पहली बार किया गया। अनुमान है कि मोदी भाजपा और संघ के बीच किसी भी तरह के मतभेद को मिटाते नजर आना चाहते हैं। ध्यातव्य है कि अपने पहले किसी स्वतंत्रता दिवस भाषण में मोदी संघ की चर्चा नहीं करते रहे हैं। इसलिए तमाम परियोजनाओं, आत्म-प्रशंसाओं और विभिन्न विषयों वाले इस लंबे भाषण की केंद्रीय विषयवस्तु संघ बन गया। निरंकुशतापूर्वक भाजपा को चलाने वाले मोदी खास तरह का संतुलन बनाने के प्रति आश्वस्त होते नजर आए। आगामी विधानसभा चुनाव, बेरोजगारी, महंगाई और सुरक्षा को लेकर उन्होंने जो निशाने लगाए वे दूरगामी प्रतीत होते हैं परंतु अन्य बातों की अनदेखी करते हुए आजादी पूर्व संघ की भूमिका को लेकर विपक्षी दलों ने उन्हें घेरना शुरू कर दिया। संघ के प्रति उनका सम्मोहन कहीं उल्टा दांव साबित न साबित हो। संभावना यह भी है कि प्रधानमंत्री ने परंपरा से इतर लाल किले से कोई अनूठा मार्ग प्रशस्त करने का प्रयास किया हो।

चिंतन-मनन

ध्वनि तंरगों से रोगें का उपचार

यह बात जान कर आप सभी को आश्चर्य होगा की ध्वनि तंरगें से भी रोगों के उपाच होते है। यह विश्व जीवों से भरा है। ध्वनि तंरगों की टकराहट से सुक्ष्म जीव मर जाते है, रात्री में सूर्य की पराबैगनी किरणां के अभाव में सूक्ष्म जीव उत्पन्न होते है जो ध्वनि तरगों की टकराहट से मर जाते है। ध्वनि तरगों से जीवों के मरने की खोज सर्वप्रथम बर्लिन विश्वविधालय में 1928 में हुई थी। शिकागों के डॉ.ब्राइन ने ध्वनि तरगों से जीवों के नष्ट होने की बात सिद्ध की है। आधुनिक वैज्ञानिकों ने सिद्ध किया कि शंख और घण्टा की ध्वनि लहरों से 27 घन फुट प्रति सेकिंड वायु शक्ति वेग से 1200फुट दूरी के बैक्टीरिया नष्ट हो जाते है।

पूर्व में मंदिरों का निमार्ण गुम्वजाकार होता था दरवाजे छोटे होते थे अन्दर की ध्वनि बाहर नही निकलती थी, बाहर की ध्वनि अन्दर प्रवेश नही करती थी। मन्दिर में एक ईष्ट देव की प्रतिमा, एक दीपक, एक घण्टा, शंख होता था। यहां कोई भी रोगी श्रद्धा से जाता घण्टा या शंख ध्वनि कर दीप जलता बैठ कर श्रद्धा से प्रार्थना भक्ति करता, मौन ध्यान करता। रोंगों के ठीक होने की कामना करता वह ठीक हो जाता था। इसका बैज्ञानिक कारण घण्टा -शंख ध्वनि भक्ति प्रार्थना की ध्वनि तंरगें बाहर न जाकर गुम्वजाकार शिखर से टकराकर शरीर से टकराती जिससे शरीर के रोगाणु नष्ट हो जाते रोग ठीक हो जाते। आज भी पुराने मंदिरों में यह होता है। इसलिये सीमित मात्रा में बोलना ठीक है। ध्वनि ज्यादा मात्रा में प्रदूषण का रूप ले लेती है, जो शारीरिक एवं मानसिक दृष्टि से हानिकारक होती है। मौन रहने में ही सुख एवं सुख मय जीवन है।

मोदी का 'मिशन सुदर्शन चक्र' राष्ट्रीय सुरक्षा परिदृश्य को पूरी तरह बदल देगा

नीरज कुमार दुबे

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस बार स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले की प्राचीर से 'मिशन सुदर्शन चक्र' की घोषणा की जोकि भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा और रक्षा रणनीति में एक बड़ा मील का पत्थर माना जा रहा है। पाकिस्तान के साथ हालिया सीमा-पार सैन्य झड़पों के महज तीन महीने बाद आया यह ऐलान दशार्ता है कि भारत अपनी सुरक्षा व्यवस्था को लेकर न केवल गंभीर है, बल्कि आने वाले दशकों के लिए दीर्घकालिक तैयारी भी कर रहा है।

प्रधानमंत्री ने कहा था कि 2035 तक देश के सभी महत्त्वपूर्ण स्थल– रणनीतिक क्षेत्र, अस्पताल, रेलवे स्टेशन और धार्मिक स्थल, इस सुरक्षा कवच के दायरे में लाए जाएँगे। यह कवच पूरी तरह स्वदेशी तकनीक पर आधारित होगा और समय के साथ इसे मजबूत, विस्तारित और आधुनिक किया जाएगा। हम आपको बता दें कि मिशन सुदर्शन चक्र को इजराइल के 'आयरन डोम' और अमेरिका के प्रस्तावित 'गोल्डन डोम' जैसी मिसाइल रक्षा प्रणाली के समकक्ष माना जा रहा है। फर्क यह है कि इजराइल एक छोटा देश है जबकि भारत को बहुत बड़े क्षेत्र को सुरक्षा कवच में लेना होगा। इसके लिए बहु-स्तरीय एयर और मिसाइल डिफेंस नेटवर्क, अर्ली वॉर्निंग और ट्रैकिंग सेंसर, भूमि और समुद्र आधारित इंटरसेप्टर मिसाइलें और अंतरिक्ष संसाधनों का प्रभावी उपयोग किया जायेगा।

हम आपको याद दिला दें कि प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन में स्पष्ट किया था कि यह प्रणाली केवल शत्रु के हमलों को विफल नहीं करेगी बल्कि कई गुना ज्यादा ताकत से जवाबी कार्रवाई भी करेगी। इससे संकेत मिलता है कि भारत अपने पारंपरिक (गैर-परमाणु) शस्त्रागार में और विस्तार करने जा रहा है। इसके तहत 500 किमी रेंज की 'प्रलय' क्वासी-बैलिस्टिक मिसाइल, 1000 किमी रेंज की लैंड अटैक क्रूज मिसाइल और ब्रह्मोस की मारक क्षमता 450 किमी से बढ़ाकर 800 किमी करने जैसे ठोस कदम उठाये जा रहे हैं।

हम आपको याद दिला दें कि ऑपरेशन सिंदूर के दौरान भारत की मल्टी-लेयर्ड एयर डिफेंस प्रणाली ने तुर्की ड्रोन और चीनी मिसाइलों को विफल किया था। भारतीय वायुसेना प्रमुख एपी सिंह के अनुसार, रूसी मूल की र-400 प्रणाली ने पाकिस्तान के पाँच लड़ाकू विमान और एक विशेष मिशन विमान (300 किमी दूरी से) मार गिराया था। ये उपलब्धियाँ मिशन सुदर्शन चक्र की दिशा में आत्मविश्वास बढ़ाने वाली हैं।

बताया जा रहा है कि इस मिशन को डीआरडीओ के महत्त्वाकांक्षी प्रोजेक्ट 'कुशा' से भी जोड़ा जा रहा है। यह प्रणाली 150, 250 और 350 किमी रेंज तक दुश्मन के लक्ष्यों को भेद सकेगी। इसका पहला चरण 2028-29 तक तैयार होने की उम्मीद है। साथ ही, स्वदेशी बैलिस्टिक मिसाइल डिफेंस (BMD) प्रणाली भी तैनाती के लिए तैयार की जा सकती है जो 2000 किमी तक की दुश्मन मिसाइलों को धरती के अंदर (एंडो) और बाहर (एक्सो) दोनों परतों में नष्ट करने की क्षमता रखती है। हम आपको याद दिला दें कि पिछले वर्ष भारत ने 5000 किमी रेंज वाली परमाणु-सक्षम दुश्मन मिसाइल को भी इंटरसेप्ट कर सफल परीक्षण किया था।

देखा जाये तो यह घोषणा ऐसे समय में हुई है जब पाकिस्तान के सेना प्रमुख असीम मुनीर भारत की परियोजनाओं को नष्ट करने और परमाणु युद्ध की धमकी दे रहे थे। दूसरी ओर, चीन लगातार अपनी मिसाइल और ड्रोन क्षमताओं का विस्तार कर रहा है। ऐसे माहौल में मिशन सुदर्शन चक्र केवल भारत के लिए सुरक्षा कवच ही नहीं, बल्कि रणनीतिक संदेश भी है कि भारत अब अपनी सीमाओं और नागरिक ढाँचों की सुरक्षा के लिए पूर्णतः आत्मनिर्भर और आक्रामक रक्षा नीति की ओर बढ़ रहा है।

बहरहाल, ह्यमिशन सुदर्शन चक्रह्ण भारत की रक्षा रणनीति में एक निर्णायक कदम है। यह न केवल जनता में सुरक्षा का भरोसा जगाता है, बल्कि दुनिया को यह संकेत भी देता है कि भारत भविष्य के युद्ध परिदृश्यों के लिए तैयार है। जिस प्रकार महाभारत में भगवान श्रीकृष्ण का सुदर्शन चक्र शत्रु के लिए अजेय था, उसी प्रकार यह मिशन आने वाले समय में भारत की सुरक्षा का अटूट प्रतीक बन सकता है।

विश्व फोटोग्राफी दिवस:186 वर्षों में कितनी बदल गई तस्वीरों की दुनिया?

योगेश कुमार गोयल

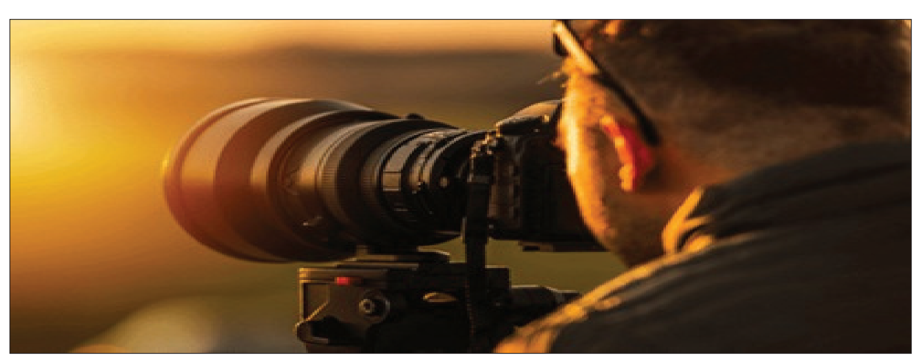

एक जमाना था, जब लोगों को फोटो खिंचवाने के लिए फोटो स्टूडियो तक जाना पड़ता था लेकिन अब छोटे से छोटे तबके के व्यक्तियों के पास भी कैमरे वाले फोन हैं, जिनसे बड़ी आसानी से कहीं भी और कभी भी तस्वीरें खींची जा सकती हैं और उन्हें सहेजकर रखा जा सकता है। फोटोग्राफी की दुनिया आज बिल्कुल बदल चुकी है। हालांकि यह अलग बात है हर जेब में मोबाइल होने और हर व्यक्ति के फोटोग्राफर बन जाने के बाद भी दुनियाभर में अच्छे फोटोग्राफर कम ही हैं। दरअसल एक अच्छा फोटो प्राप्त करने की पहली शर्त है आंखों से दिखाई देने वाले दृश्य को कैमरे की मदद से एक फ्रेम में बांधना, प्रकाश, छाया, कैमरे की स्थिति, उचित एक्सपोजर तथा उचित विषय का चुनाव करना इत्यादि। अच्छे फोटो के बारे में पेशेवर फोटोग्राफरों का कहना है कि कैमरे के फ्रेम में क्या लेना है, इससे ज्यादा किसी भी अच्छे फोटोग्राफर को इस बात का ज्ञान होना बेहद जरूरी है कि उसे फ्रेम के बाहर क्या-क्या छोड़ना है। कोई भी फोटो अच्छा क्यों होता है, इस तथ्य का सही ज्ञान ही किसी फोटोग्राफर को सामान्य से विशिष्ट बनाने के लिए पर्याप्त होता है। जब तक किसी फोटो में मानवीय संवेदनाएं नजर नहीं आएंगी, तब तक उसे बेहतर तस्वीर नहीं माना जा सकता। किसी भी फोटो में स्पष्ट दिखने वाली ऐसी ही मानवीय संवेदनाओं के कारण ही प्रायः कहा भी जाता है कि एक फोटो हजार शब्दों के बराबर होता है। इसलिए कोई भी फोटो तकनीकी रूप में कितना ही अच्छा क्यों न हो, वह तब तक सर्वमान्य नहीं हो सकता, जब तक कि वह मानवीय संवेदना को झकझोर न दे। किसी भी उत्पाद के प्रचार के लिए बनाए जाने वाले विज्ञापन को आकर्षक बनाने में भी एक अच्छे फोटोग्राफर का योगदान बहुत बड़ा होता है।

फोटोग्राफी के क्षेत्र में लोगों के बीच जागरूकता पैदा करने, फोटोग्राफी को लेकर विचारों को एक-दूसरे के बीच साझा करने, फोटोग्राफी के क्षेत्र में आने के लिए लोगों को प्रोत्साहित करने तथा विश्वभर के फोटोग्राफरों को एकजुट करने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष 19 अगस्त को विश्व फोटोग्राफी दिवस मनाया जाता है, जो इस वर्ष ह्यमेरी पसंदीदा तस्वीरह्ण थीम के साथ मनाया जा रहा है। दरअसल दुनियाभर में फोटोग्राफी के शौकीन ऐसे लोगों की कमी नहीं है, जिन्होंने फोटोग्राफी को ही अपना कैरियर बना लिया है। वास्तव में फोटोग्राफी दिवस उन लोगों को समर्पित है, जिन्होंने विशेष पलों को अपने कैमरे से तस्वीरों में कैद कर उन्हें सदा के लिए यादगार बना दिया। यह दिवस इस क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देने वाले ऐसे व्यक्तियों के कार्यों को स्मरण करने के अलावा भावी पीढ़ी को भी फोटोग्राफी में अपना कौशल दिखाने के लिए प्रेरित करता है। विश्व फोटोग्राफी दिवस की योजना की शुरूआत आस्ट्रेलियाई फोटोग्राफर कोर्स्के आरा द्वारा वर्ष 2009 में की गई थी और उसके बाद विश्व फोटोग्राफी दिवस पर 19 अगस्त 2010 को पहली वैश्विक ऑनलाइन फोटो गैलरी का आयोजन किया गया था। उस दिन दुनियाभर के 250 से भी ज्यादा फोटोग्राफरों ने अपनी खींची तस्वीरों के माध्यम से अपने विचारों को साझा किया था और 100 से भी ज्यादा देशों के लोगों ने उस ऑनलाइन फोटो गैलरी को देखा था। इसीलिए वह दिन फोटोग्राफी के शौकीनों और पेशेवर फोटोग्राफरों के लिए एक ऐतिहासिक दिन बन गया था।

ह्यविश्व फोटोग्राफी दिवसह्ण आज से करीब 186 वर्ष पहले फोटोग्राफी को लेकर घटी एक घटना की याद में मनाया जाने लगा। दरअसल जनवरी 1839 में फ्रांस में जोसेफ नीसपोर और लुई डागुएरे ने डॉगोरोटाइप प्रक्रिया के आविष्कार की घोषणा की थी, जिसे दुनिया की पहली ह्यफोटोग्राफी प्रक्रियाह्ण माना जाता है। फोटोग्राफी शब्द की उत्पत्ति ग्रीक शब्द ह्यफोटोजह्ण (प्रकाश) और ह्यग्राफीनह्ण (खींचने) से मिलकर हुई है। वर्ष 1839 में वैज्ञानिक सर जॉन एफ डब्ल्यू हश्रेल ने पहली बार ह्यफोटोग्राफीह्ण शब्द का उपयोग किया था। फ्रांसीसी वैज्ञानिक आर्गो ने 7 जनवरी 1839 को फ्रैंच अकादमी ऑफ साइंस के लिए इस पर एक प्रोसेस रिपोर्ट तैयार की और फ्रांस सरकार ने यह रिपोर्ट खरीदकर 19 अगस्त 1839 को इस आविष्कार की घोषणा करते हुए इसका पेटेंट प्राप्त कर आम लोगों के लिए इस प्रक्रिया को मुफ्त घोषित किया था। इसीलिए ह्यविश्व फोटोग्राफी दिवसह्ण मनाने के लिए 19 अगस्त का दिन ही निर्धारित किया गया। अपने आविष्कार के 186 वर्षों लंबे इस सफर में फोटोग्राफी ने अनेक आयाम देखे हैं।

सही मायनों में दुनियाभर की खूबसूरती को कैमरे में समेटकर उसे जब चाहें मन भरकर देखने का बेहतरीन जरिया है फोटोग्राफी। वास्तव में हमारे जीवन में फोटो ही ऐसी वस्तु हैं, जो पुरानी यादों को अपने भीतर समेटकर उन्हें बरसों तक जिंदा रखती हैं। मोबाइल कैमरे से ली जाने वाली सेल्फी का तो आज की युवा पीढ़ी पर जुनून सा छाया है लेकिन विश्व की पहली सेल्फी 186 वर्ष पूर्व अर्थात वर्ष 1839 में ही ली गई थी और यह सेल्फी ली थी अमेरिकन फोटोग्राफर रॉबर्ट कॉर्नेलियस ने। उन्होंने अपने कैमरे को सैट करने के बाद लेंस कैंप को हटाकर फ्रेम में चलकर फोटो ली थी, जिसे अब सेल्फी कहा जाता है। हालांकि उस समय स्वयं कॉर्नेलियस को भी नहीं पता था कि उनके द्वारा उस अंदाज में खींचा गया वह फोटा भविष्य में सेल्फी के रूप में जाना जाएगा। कॉर्नेलियस द्वारा ली गई सेल्फी वाली वह तस्वीर आज भी यूनाइटेड स्टेट लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस प्रिंट में उपलब्ध है।

तकनीकी और वैज्ञानिक सफलता के इस दौर में फोटोग्राफी के क्षेत्र में भी क्रांतिकारी परिवर्तन हुए हैं, जिनकी बदौलत अब कैमरे का एक बटन दबाने के बाद चंद पलों या मिनटों में बेहतरीन तस्वीर हमारे हाथ में होती है लेकिन तमाम तकनीकी प्रगति के बावजूद बेहतरीन क्वालिटी के प्रिंटर होने पर भी अच्छा फोटो प्राप्त करने के लिए फोटोग्राफी की कुछ बारीकियों का ज्ञान होना भी बहुत जरूरी है। वैसे फोटोग्राफी के आविष्कार ने मानव जीवन में बहुत क्रांतिकारी भूमिका निभाई है और यह इसी से समझा जा सकता है कि दुनिया के किसी भी कोने में खींचे गए चित्रों के माध्यम से अब पलभर में ही वहां के जनजीवन तथा घटनाओं की जानकारी आसानी से प्राप्त हो जाती है। फोटोग्राफी का अनोखा आविष्कार न केवल दुनियाभर में लोगों को एक-दूसरे के बेहद करीब लेकर आया बल्कि इसी आविष्कार की ही बदौलत एक-दूसरे को जानने और उनकी संस्कृति को समझकर इतिहास को समृद्ध बनाने में भी बड़ी मदद मिली है।

संक्षिप्त समाचार

नेपाल के उप पीएम बोले- भारत से संबंध रोटी-बेटी से भी आगे के

काठमांडो, एजेंसी। नेपाल के उपप्रधानमंत्री प्रकाश मान सिंह ने भारत को उसके 79वें स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा, नई दिल्ली-काठमांडो संबंध सिर्फ रोटी और बेटी तक ही सीमित नहीं हैं, बल्कि धार्मिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक आयामों तक भी फैले हुए हैं। उन्होंने शुक्रवार को ललितपुर में भारतीय दूतावास के ध्वजारोहण कार्यक्रम में यह टिप्पणी की। उन्होंने कहा, भारत-नेपाल संबंध अपने आप में बेहद खास हैं। हमारी सीमाएं खुली हैं और हमारे बीच सांस्कृतिक एवं सभ्यतागत निकटता है। सिंह ने कहा, दोनों देशों में द्विपक्षीय संबंधों को आपसी सहयोग और भी प्रगाढ़ किया जाएगा।

म्यांमार के मोगोक में सेना के हमले में 16 महिलाओं समेत 21 की मौत

मोगोक , एजेंसी। म्यांमार के मोगोक शहर में सेना के हवाई हमले में 16 महिलाओं सहित 21 लोग मारे गए और सात घायल हो गए। मृतकों में एक गर्भवती भी थी। इस शहर पर पिछले साल जुलाई में तांग नेशनल लिबरेशन आर्मी (टीएनएलए) ने कब्जा कर लिया था। टीएनएलए, सेना के खिलाफ लड़ने वाले शक्तिशाली जातीय मिलिशिया में से एक है। टीएनएलए के प्रवक्ता लवे याय ऊ ने बताया, हमला बृहस्पतिवार की रात 8 :30 बजे मोगोक टाउनशिप के श्वेगु वार्ड में हुआ। इसमें कई घरों और बौद्ध मठों को भी नुकसान पहुंचा है। फरवरी 2021 में सेना के सत्ता हथियाने के बाद शुरू हुए गृहयुद्ध के बीच विद्रोही समूहों से क्षेत्र को फिर से पाने के लिए यहां हमले तेज हो गए हैं।

पाकिस्तान में ट्रेन हादसा, एक की मौत कई घायल

इस्लामाबाद, एजेंसी। पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में रविवार को हुए एक ट्रेन हादसे में एक यात्री की मौत हो गई और कई अन्य घायल हैं। एक अधिकारी ने बताया कि रविवार को पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में एक ट्रेन के कई डिब्बे पटरी से उतर जाने से कम से कम एक यात्री की मौत हो गई और 25 अन्य घायल हो गए। पेशावर से कराची जा रही आवाम एक्सप्रेस लाहौर से लगभग 400 किलोमीटर दूर पंजाब के लोधरान जिले में पटरी से उतर गई। उन्होंने कहा, ट्रेन के लगभग चार डिब्बे पटरी से उतर गए, जिसमें एक यात्री की मौत हो गई और 25 घायल हो गए। घायलों में तीन यात्रियों की हालत बेहद गंभीर है। इस महीने पंजाब में ट्रेन के पटरी से उतरने की यह तीसरी घटना है। पिछले सोमवार को, लाहौर के रायविंड में मूसा पाक एक्सप्रेस के दो डिब्बे और इंजन पटरी से उतर जाने से पांच यात्री घायल हो गए थे। दुर्घटना के समय ट्रेन लाहौर से मुल्तान जा रही थी। इस महीने की शुरुआत में लाहौर से इस्लामाबाद जा रही इस्लामाबाद एक्सप्रेस के 10 डिब्बे पटरी से उतर गए थे, जिसमें 30 यात्री घायल हो गए थे।

सर्बिया में प्रदर्शनकारियों की पुलिस से झड़प

बेलग्रेड, एजेंसी। सर्बिया में लगातार हो रहे हिंसक प्रदर्शनों के बीच शनिवार को हालात और बिगड़ गए। प्रदर्शनकारियों की राजधानी बेलग्रेड और पश्चिमी सर्बिया के शहर वाल्जेवो में पुलिस के साथ झड़प हो गई। वाल्जेवो में गुस्साए प्रदर्शनकारियों ने राष्ट्रपति अलेक्सांद्र वुसिक के खिलाफ नारे लगाए और सत्तारूढ़ पार्टी सर्बियन प्रोग्रेसिव पार्टी के दफ्तर में आग लगा दी। इसके बाद दंगा पुलिस से भिड़ंत हो गई। पुलिस ने भीड़ को रोकने के लिए आंसू गैस के गोले दागे और गोलियां चलाईं। जवाब में प्रदर्शनकारियों ने पत्थर, बोतलें और आगजनी की। बेलग्रेड में भी शाम को ऐसी ही झड़पें हुईं, जहां प्रदर्शनकारियों ने कूड़ेदान में आग लगा दी। गौरतलब है कि नवंबर में एक रेलवे स्टेशन की छत गिरने से 16 लोगों की मौत हो गई थी। लोगों का आरोप है कि भ्रष्टाचार और घटिया काम की वजह से यह हादसा हुआ। उसी समय से देश में विरोध प्रदर्शन शुरू हुए थे। शुरू में ये शांतिपूर्ण थे, लेकिन अब हिंसक हो गए हैं।

ट्रम्प ने वॉशिंगटन डीसी में नेशनल गार्ड की तैनाती बढ़ाई

तीन राज्यों से 700 सैनिक बुलाए, राष्ट्रपति बोले थे- राजधानी में हालात काबू से बाहर

वॉशिंगटन डी सी, एजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प राजधानी वॉशिंगटन डीसी में और ज्यादा गार्ड तैनात करने की तैयारी कर रहे हैं। उनके आदेश पर वेस्ट वर्जीनिया, साउथ कैरोलिना और ओहियो के गवर्नरों ने शनिवार को अपने राज्यों के नेशनल गार्ड्स को वॉशिंगटन भेजने की घोषणा की है। वेस्ट वर्जीनिया से 300-400, साउथ कैरोलिना से 200 और ओहियो से करीब 150 नेशनल गार्ड आएंगे। अभी वॉशिंगटन में 800 नेशनल गार्ड्स तैनात हैं। इन्हें सीधा ट्रम्प कंट्रोल करते हैं।

इन तीन राज्यों से लगभग 700 एक्स्ट्रा सैनिकों के आने से वॉशिंगटन में नेशनल गार्ड की संख्या लगभग दोगुनी हो जाएगी। हालांकि नेशनल गार्ड्स की तैनाती को लेकर शनिवार को लोगों ने विरोध प्रदर्शन किया। इससे पहले 12 अगस्त को ट्रम्प ने वॉशिंगटन को केंद्र सरकार के कंट्रोल में ले लिया था। उन्होंने कहा कि राजधानी में हालात काबू से बाहर हैं, राजधानी में बिगड़ी कानून व्यवस्था को फिर से पटरी पर लाना जरूरी है।

ट्रम्प ने वॉशिंगटन की पुलिस को कंट्रोल में लिया : ट्रम्प ने व्हाइट हाउस में सोमवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान कहा था कि उन्होंने राजधानी में डिस्ट्रिक्ट ऑफ कोलंबिया होम रूल एक्ट की धारा 740 लागू कर दी है। इसका मतलब है कि डीसी मेट्रोपॉलिटन पुलिस अब सीधे केंद्र सरकार के नियंत्रण में काम करेगी। ट्रम्प ने व्हाइट हाउस में कहा, हमारी राजधानी को हिंसक गिरोहों और अपराधियों ने घेर लिया है। 2024 में हिंसक अपराध 30 साल के निचले स्तर पर पहुंचे। हम नेशनल गार्ड की मदद से कानून और व्यवस्था बहाल करेंगे। इस साल वॉशिंगटन डीसी में 98 लोगों का कत्ल हो चुका है और नस्लीय झगड़ों के कारण 3782 लोग बेघर हुए हैं।

वॉशिंगटन की मेयर बोलीं- शहर में अपराध नहीं बढ़ा : अमेरिका में ट्रम्प के इस कदम की आलोचना हो रही है। वॉशिंगटन की मेयर म्यूरियल बोउजर ने कहा- शहर में क्राइम नहीं बढ़ा है। पुलिस के आंकड़ों के मुताबिक, 2024 में हिंसक अपराध 35प्रतिशत कम हुआ और 2025 के पहले सात महीनों में 26त्न की कमी आई। कुल अपराध भी 7प्रतिशत घटा है। हालांकि, गोलीबारी चिंता का विषय है। 2023 में अमेरिका में गोलीबारी से होने वाली हत्याओं में वॉशिंगटन तीसरे स्थान पर था।

ट्रम्प ने 52 साल पुराने नियम का इस्तेमाल किया : राष्ट्रपति ट्रम्प ने कहा उन्होंने 1970 के होम रूल एक्ट का इस्तेमाल किया है। यह राष्ट्रपति को अधिकार देता है कि वह इमरजेंसी की हालत में 48 घंटे तक शहर की पुलिस का नियंत्रण ले सकते हैं।

कानून के मुताबिक, अगर राष्ट्रपति वॉशिंगटन डीसी से जुड़े कानून बनाने वाली संसद की समितियों के अध्यक्ष और सदस्यों को इसकी जानकारी दे दें, तो पुलिस का नियंत्रण लंबे समय तक रखा जा सकता है। हालांकि अभी यह साफ नहीं है कि ट्रम्प ने यह औपचारिक सूचना दी है या नहीं। नियम के मुताबिक अगर शहर पर कंट्रोल 30 दिनों से ज्यादा रखना हो, तो इसके लिए संसद में कानून पास कराना जरूरी होता है।

ट्रम्प ने लॉस एंजिल्स में 5 हजार नेशनल गार्ड सैनिक तैनात किए थे : ट्रम्प ने हाल ही में लॉस एंजिल्स में भी 5 हजार नेशनल गार्ड तैनात किए थे, जिसका स्थानीय नेताओं ने विरोध किया था। वॉशिंगटन में नेशनल गार्ड की तैनाती का अधिकार राष्ट्रपति के पास है, क्योंकि यह केंद्र शासित क्षेत्र है। पहले भी 2020 में पुलिस क्रूरता के खिलाफ प्रदर्शनों और 2021 में कैपिटल हमले के दौरान नेशनल गार्ड तैनात किए गए थे। इस बीच, सैन फ्रांसिस्को में एक मुकदमा शुरू हुआ है, जिसमें ट्रम्प प्रशासन पर बिना गवर्नर की अनुमति के नेशनल गार्ड और मरीन भेजने का आरोप है। अमेरिकी कानून सैन्य बलों को स्थानीय कानून व्यवस्था में सीधे शामिल होने से रोकता है।

परेशानी बन गए हैं नेतन्याहू, इजरायल पर भी लगें रूस जैसे प्रतिबंध: मेटे फ्रेडरिक्सन

कोपेनहेगन, एजेंसी। गाजा में जारी युद्ध और आम इंसानों की मौत ने दुनिया भर में इजरायल के खिलाफ माहौल बना दिया है। हमेशा इजरायल के सपोर्ट में खड़े दिखने वाले यूरोपीय देश भी अब खुलकर पीएम नेतन्याहू और उनकी नीतियों का विरोध करने लगे हैं। इसी क्रम में अब नया नाम डेनमार्क की प्रधानमंत्री मेटे फ्रेडरिक्सन का भी जुड़ गया है। मेटे ने इजरायली प्रधानमंत्री को एक समस्या बताते हुए कहा कि गाजा में बिगड़ते मानवीय संकट के बीच युद्ध समाप्त करने के लिए यूरोपीय संघ को भी इजरायल पर दबाव डालना चाहिए। अगर तब भी हालात नहीं सुधरते तो फिर इजरायल पर भी रूस की तरफ प्रतिबंध लगाए जाने चाहिए।

डेनमार्क ने कई देशों द्वारा फिलिस्तीन को मान्यता देने को लेकर किए जा रहे विचार पर अपनी सहमति नहीं जताई। पीएम ने कहा कि फिलिस्तीनी राज्य को तत्काल मान्यता देने से संघर्ष कम नहीं होगा। हालांकि उन्होंने कोपेनहेगन के द्वि-राज्य समाधान के समर्थन की पुष्टि की। फ्रेडरिक्सन ने लिखा, फिलिस्तीन को अभी मान्यता देने से उन हजारों बच्चों की मदद नहीं होगी, जो वर्तमान में अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रहे हैं। यह नहीं होगा चाहे आप कितना भी चाह लें। इसके बजाय हमें इजरायल और हमास दोनों पर दबाव बढ़ाने की जरूरत है।

लंबे समय तक इजरायल की मुखर समर्थक रहीं फ्रेडरिक्सन ने नेतन्याहू की नीतियों की कड़ी आलोचना की। उन्होंने नेतन्याहू पर आरोप लगाया कि उनकी सरकार इजरायल के हितों के विरुद्ध काम कर रही है। नेतन्याहू के बिना इजरायल ज्यादा बेहतर तरीकों से काम करेगा।

उन्होंने गाजा युद्ध में इजरायली सेना द्वारा की जा रही मासूम लोगों की हत्याओं की निंदा करते हुए इसे बेहद भयावह और विनाशकारी बताया। अपना रुख दोहराते हुए फ्रेडरिक्सन ने कहा कि डेनमार्क अभी फिलिस्तीन को मान्यता देने वाले देशों में शामिल नहीं होगा। उन्होंने कहा, डेनमार्क हमास को इनाम नहीं देना चाहता। हम फिलिस्तीन को मान्यता तभी देंगे जब इसके जरिए फिलिस्तीनी क्षेत्र में वास्तव में हमास से रहित स्थाई लोकतांत्रिक राज्य स्थापित हो और इजरायल भी उसे मान्यता दे।

आपको बता दें वर्तमान में यूरोपीय संघ की अध्यक्षता डेनमार्क के पास है। कोपेनहेगन की तरफ से बताया गया कि डेनमार्क इजरायल पर भी रूस की तरह ही प्रतिबंध लगाने का विचार कर रहा है। इन प्रतिबंधों का व्यापक और शक्तिशाली प्रभाव होगा। हालांकि अभी किसी भी विचार पर सहमति नहीं बन पाई है और न ही किसी उपाय को खारिज किया गया है।

रूस की इलास्टिक फैक्ट्री में विस्फोट के बाद आग, 11 लोगों की मौत; 130 से ज्यादा घायल

मॉस्को, एजेंसी। रूस से एक बड़ी खबर सामने आ रही है। जहां रयाजान क्षेत्र में एक फैक्ट्री में लगी आग से 11 लोगों की मौत हो गई और लगभग 130 लोग घायल हो गए। यह हादसा शुक्रवार को शिलोवस्की जिले के इलास्टिक प्लांट में हुआ, जो मॉस्को से लगभग 250 किलोमीटर दूर है। आपातकालीन टीमें मलबे में तलाश जारी रखे हुए हैं और शनिवार तक दो और शव बरामद किए गए।

मामले में रूसी अधिकारियों ने बताया कि फैक्ट्री के गनपाउडर वर्कशॉप में आग लगी, जिससे विस्फोट हुआ। घायलों में से 29 लोगों का इलाज अस्पताल में चल रहा है, जिनमें 13 रयाजान और 16 को मॉस्को के मेडिकल सेंटर में स्थानांतरित किया गया है।

बता दें कि रूसी आपातकाल मंत्रालय ने बताया कि फैक्ट्री में मौजूद गनपाउडर वर्कशॉप में आग लगने से धमाका हुआ। राहत और बचाव कार्य जारी है और मलबे से शनिवार सुबह तक दो और शव निकाले गए।

प्रशासन ने बताया कि तीन लोगों को मलबे से जिंदा निकाला गया है। घटना की जांच शुरू कर दी गई है और सोमवार को रियाजान क्षेत्र में शोक दिवस घोषित किया गया है। इस दिन झंडे झुके रहेंगे और सभी सांस्कृतिक व मनोरंजन कार्यक्रम रद्द रहेंगे। गौरतलब है कि इसी फैक्ट्री में अक्तूबर 2021 में भी एक बड़ा धमाका हुआ था, जिसमें 17 लोगों की जान गई थी।

असीम मुनीर ने राष्ट्रपति जरदारी को हटाने की बात को किया खारिज, कहा- राजनीतिक अराजकता फैलाने की साजिश

इस्लामाबाद, एजेंसी। पाकिस्तान के राष्ट्रपति आसिफ अली जरदारी को उनके पद से हटाने को लेकर चल रहे अटकलों के बीच पाकिस्तान सेना प्रमुख असिम मुनीर का बड़ा बयान आया है। उन्होंने इन अटकलों को पूरी तरह से खारिज करते हुए इसे पूरी तरह से गलत बताया है। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, मुनीर ने कहा कि ऐसी अफवाहें राजनीतिक अराजकता फैलाने की साजिश हैं।

बता दें कि जुलाई में सोशल मीडिया पर यह खबरें आई थीं कि राष्ट्रपति जरदारी को हटाया जा सकता है। साथ ही सेना प्रमुख खुद देश के शीर्ष पद पर आ सकते हैं। लेकिन प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ और गृहमंत्री मोहसिन नकवी ने इसको सिरे से खारिज कर दिया था।

ब्रुसेल्स में हुई बैठक में बोले पाकिस्तानी सेना प्रमुख : मामले में पत्रकार सुहैल वर्रैच ने बताया कि ब्रुसेल्स में हुई एक बैठक के दौरान सेना प्रमुख मुनीर ने उन्हें बताया कि ये अफवाहें पूरी तरह गलत हैं।

मुनीर ने कहा कि भगवान ने मुझे देश का रक्षक बनाया है, मैं किसी भी पद की इच्छा नहीं रखता। इसके साथ ही राजनीतिक मेल-मिलाप के बारे में मुनीर ने कहा कि यह तभी संभव है जब सभी पक्ष ईमानदारी से माफी मांगें। यहां पर मुनीर का इशारा पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) और उसके नेता इमरान खान की तरफ था।

विदेशी मामलों पर भी बोले मुनीर : इसके साथ ही विदेशी मामलों पर मुनीर ने कहा कि पाकिस्तान अमेरिका और चीन के बीच संतुलन बनाए रखेगा और किसी एक को दूसरों के लिए कुर्बान नहीं करेगा। उन्होंने अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के शांति प्रयासों को ईमानदार बताया। साथ ही कहा कि पाकिस्तान ने उन्हें नोबेल शांति पुरस्कार के लिए नामित करने में पहल की थी।

मेलेनिया ने पुतिन के नाम लिखा खत, ट्रंप ने अपने हाथों से रूसी राष्ट्रपति को दिया; क्या लिखा था?

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और उनके रूसी समकक्ष पुतिन के बीच अलास्का में हुई बैठक पर दुनिया भर की नजरें थीं। यह मीटिंग भले ही रूस और यूक्रेन का युद्ध अभी रुकवा नहीं पाई हो लेकिन दोनों पक्षों की तरफ से इस मीटिंग को प्रोडक्टिव बताया जा रहा है। रिपोर्ट्स के मुताबिक इस मीटिंग के पहले ट्रंप ने अपनी पत्नी मेलेनिया द्वारा लिखा एक खत राष्ट्रपति पुतिन को अपने हाथों से दिया। इस खत में उन्होंने यूक्रेन के अगली पीढ़ी के लिए हमले रोकने की अपील की। फॉक्स न्यूज की रिपोर्ट के मुताबिक ट्रंप ने जैसे ही यह खत पुतिन को दिया। उन्होंने बिना कोई समय गंवाए वहीं पर इसे पढ़ना शुरू कर दिया। इस पत्र को अब सार्वजनिक कर दिया है। इसमें अमेरिका की प्रथम महिला ने लिखा, हर बच्चे के दिन में एक जैसे शांत सपने होते हैं। वह ग्रामीण, शहरी क्षेत्र में या किसी भी देश में पैदा हुआ हो। वह केवल प्यार, संभावना और खतरे से सुरक्षा के सपने देखते हैं। माता-पिता होने के नाते... अगली पीढ़ी की इस आशा को पोषित करना और उसे बनाए रखना हमारा कर्तव्य है। अपने-अपने देशों के नेताओं के रूप में हमारी जिम्मेदारी कुछ और आगे तक है।

उन्होंने लिखा, बिना किसी शक के मैं यह कह सकती हूं कि हम सभी को एक गरिमापूर्ण विश्व की कल्पना करनी चाहिए। ताकि हर इंसान शांति के साथ जाग सके और भविष्य पूरी तरह से सुरक्षित रहे।

प्रथम महिला ने लिखा, राष्ट्रपति पुतिन मुझे इस बात का यकीन है कि आप भी इस बात से सहमत होंगे कि प्रत्येक पीढ़ी के वंशज अपने जीवन की शुरुआत पवित्रता के साथ करें। एक मासूमियत के साथ, जिसमें भूगोल, सरकार या किसी विचारधारा का कोई हस्तक्षेप न हो। आज की दुनिया में कुछ बच्चे अपने आस-पास के अंधेरे में, अपनी हंसी को शांत रखने के लिए मजबूर हैं। राष्ट्रपति पुतिन आप अकेले ही इन बच्चों को उनकी प्यारी हंसी वापस कर सकते हैं। इन बच्चों की रक्षा करके आप केवल रूस की ही सेवा नहीं करेंगे, बल्कि आप मानवता की सेवा भी करेंगे।

अपनी बात को खत्म करते हुए मेलेनिया ने कहा, ऐसा साहसिक विचार सभी मानवीय भेदभावों से परे है और आप केवल पेन के एक झटके से इस बात को लागू कर सकते हैं। अमेरिका की प्रथम महिला के इस खत को सार्वजनिक करते हुए अटॉर्नी जनरल पाम बांडी ने लिखा, वह हर अमेरिकी के दिल की बात को कहती हैं और एक ऐसे विश्व का आह्वान कर रही हैं, जहां चाहे कहीं भी पैदा हुए बच्चे शांति के साथ रह सकें।

आपको बता दें कि अलास्का में हुई बैठक के बाद दोनों ही पक्षों ने इस बैठक को उपयोगी करार दिया था। हालांकि दोनों ने किसी समझौते पर पहुंचने से इनकार किया। बैठक के बाद ट्रंप ने कहा कि ज्यादातर मुद्दे सुलझ गए हैं यह अब जेलेंस्की के हाथ में हैं कि वह कैसे करते हैं। इसी बीच यह खबर सामने आई है कि यूक्रेनी राष्ट्रपति जेलेंस्की सोमवार को अपने अमेरिकी समकक्ष से मिलने के लिए वाशिंगटन जा रहे हैं।

22 अगस्त को ट्रंप, जेलेंस्की और पुतिन के बीच हो सकती है संयुक्त बैठक, रिपोर्ट्स में बड़ा दावा

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अलास्का में रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के साथ अपनी बैठक के बाद यूरोपीय नेताओं से फोन पर बात की। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, इस बातचीत में ट्रंप ने यूरोपीय नेताओं से कहा कि वे 22 अगस्त तक पुतिन और यूक्रेनी राष्ट्रपति जेलेंस्की के साथ एक त्रिपक्षीय शिखर सम्मेलन आयोजित करना चाहते हैं। पुतिन से मुलाकात के बाद ट्रंप ने यूक्रेनी राष्ट्रपति जेलेंस्की से भी बात की। इस बातचीत में दोनों नेताओं के बीच सोमवार को वॉशिंगटन में मुलाकात करने पर सहमति बनी।

जर्मन चांसलर ने भी त्रि-पक्षीय बैठक के दिए संकेत : यूक्रेनी राष्ट्रपति ने सोशल मीडिया पर साझा एक पोस्ट में सोमवार को वॉशिंगटन में अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप से मिलने की पुष्टि की। अमेरिकी ऑनलाइन मीडिया आउटलेट एक्सियोस के अनुसार, ट्रंप ने यूरोपीय नेताओं को भी सोमवार को व्हाइट हाउस में होने वाली बैठक में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया। जर्मन चांसलर फ्रेडरिक मर्ज ने शनिवार को कहा कि जेलेंस्की और ट्रंप के बीच सोमवार को होने वाली बैठक के बाद एक त्रिपक्षीय शिखर सम्मेलन होने की उम्मीद है। हालांकि अभी तक रूस की तरफ से त्रि-पक्षीय बैठक में शामिल होने को लेकर कोई जानकारी या बयान सामने नहीं आया है।

शांति समझौते पर हो रही चर्चा : रूसी समाचार एजेंसी तास ने अमेरिकी मीडिया की रिपोर्ट्स के हवाले से बताया कि पुतिन के साथ अपनी बैठक के बाद, ट्रंप ने यूरोपीय नेताओं के साथ बातचीत में एक शांति समझौते का प्रस्ताव रखा, जिसके तहत यूक्रेन, रूस को डोनबास क्षेत्र सौंप देगा। वहीं बदले में यूक्रेन और यूरोप दोनों को सुरक्षा गारंटी की पेशकश की जाएगी। 15 अगस्त को अमेरिका के अलास्का में डोनाल्ड ट्रंप और व्लादिमीर पुतिन के बीच बैठक हुई। दोनों नेताओं की बैठक करीब तीन घंटे चली। बैठक के बाद मीडिया बातचीत में ट्रंप ने शिखर वार्ता को बहुत ही उपयोगी बताया था।

हमास के खिलाफ आखिरी जंग का ऐलान, गाजा में इजरायल का नया प्लान तैयार

येरूशलम, एजेंसी। पिछले 22 महीनों से गाजा में चल रहे युद्ध को लेकर अब इजरायली भी परेशान हो गए हैं। युद्धविराम के लिए हजारों लोगों ने सड़कों पर उतरकर प्रदर्शन किया। उधर इजरायली सेना गाजा में नया प्लान तैयार कर रही है। वह फिलिस्तीनियों को दक्षिणी गाजा में शिफ्ट करने की योजना बना रही है जिससे कि घनी बस्ती वाले इलाकों में हमले किए जा सकें। इजरायली सेना का कहना है कि हमास के बचे-कुचे लड़ाके घनी बस्ती वाले इलाकों में छिपे हुए हैं। ऐसे में हमास को पूरी तरह खत्म करने के लिए इन इलाकों में ऑपरेशन चलाया जाएगा और आम लोगों को दक्षिणी गाजा में शिफ्ट कर दिया जाएगा।

पहले भी धोखा खा चुके हैं फिलिस्तीनी

इजरायल गाजा में कई बार इस तरह के ऐलान कर चुका है। इजरायली सेना ने जब भी किसी इलाके को खाली करने का आदेश दिया तब अप्रत्याशित हमले भी किए गए।

कई बार ऐसा हुआ कि लोग जहां शिफ्ट हो रहे थे, वहीं बम गिरा दिए गए। ऐसे में फिलिस्तीनियों को इजरायल पर एकदम भरोसा नहीं है। हालांकि हमले के डर से बहुत सारे लोग दक्षिणी गाजा में जाने को तैयार भी हैं।

गाजा में मानवीय सहायता के लिए जिम्मेदार इजरायली सेना के विभाग कोगैट ने कहा कि रविवार से गाजा में टेंट और राहत सामग्री की सप्लाई सुचारु रूप से शुरू हो जाएगी। इजरायल के रक्षा मंत्री ने कहा है कि अब गाजा में हमास को हराने की आखिरी जंग जल रही है।

इजरायल की बात करें तो युद्ध से ऊब चुके लोग अब सड़कों पर आ चुके हैं। वहीं बंधकों के परिवारों को डर है कि अगर युद्ध आगे बढ़ता है तो बचे हुए 20 बंधकों के जीवन को भी खतरा हो सकता है। हमास समय-समय पर बंधकों के वीडियो जारी करता है। इससे इजरायली परिवारों में बेचैनी और बढ़ जाती है।

गाजा में भुखमरी की शिकार महिला की इटली में मौत : फिलिस्तीन की उस 20 वर्षीय महिला की मौत हो गई है, जिसे गाजा पट्टी में युद्ध के बीच शारीरिक रूप से बहुत कमजोर हो जाने के कारण इलाज के लिए इटली ले जाया गया था। महिला का इलाज कर रहे चिकित्सकों ने शनिवार को यह जानकारी दी। डॉक्टरों ने बताया कि महिला को बुधवार देर रात पीसा यूनिवर्सिटी अस्पताल में भर्ती कराया गया था और शुक्रवार को उसने इलाज के दौरान दम तोड़ दिया।

संतुलित मात्रा में ही लें प्रोटीन

कम और ज्यादा मात्रा से शरीर को नुकसान

प्रोटीन को मांसपेशियों का भोजन कहा जाता है। प्रोटीन ऑक्सीजन, हाइड्रोजन और नाइट्रोजन से बनने वाला तत्व है, जो शरीर को बीमारियों से बचाने का काम करता है। प्रोटीन ही शरीर को अंदर और बाहर से मजबूत बनाता है, लेकिन प्रोटीन लेने की भी एक उम्र होती है जिसके बाद प्रोटीन शरीर के लिए नुकसानदायक होता है। क्योंकि यह सीधे पाचन शक्ति को प्रभावित करता है।

शरीर को कब किस उम्र में कितने प्रोटीन की जरूरत होती है इसके बारे में आहार विशेषज्ञ बता रहे हैं-

प्रोटीन कितना जरूरी

इस बात में शायद ही कोई संदेह हो कि शरीर के विकास के लिए प्रोटीन जरूरी है। हमारे शरीर में 1000 से अधिक प्रोटीन पाए जाते हैं। शरीर की जरूरत को ध्यान में न रखकर केवल लंबे समय तक उच्च प्रोटीन डाइट लेना ही शरीर को नुकसान पहुंचाता है। प्रोटीन शरीर के लिए बेहद जरूरी है। हमारे शरीर का 18-20प्रतिशत भार प्रोटीन के कारण होता है। प्रोटीन से मांसपेशियों व पाचन तंत्र को मजबूती मिलती है। प्रोटीन, हृदय व फेफड़े के ऊतक स्वस्थ रखते हैं।

प्रोटीन शरीर के सुचारू रूप से कार्य करने के लिए जरूरी है। शरीर से टॉक्सिन को बाहर निकालता है। शरीर का पीएच लेवल बनाए रखता है। प्रोटीन मूड भी ठीक रखता है। तनाव के स्तर को कम करता है।

किसमें कितना है प्रोटीन

प्रति 100 ग्रा. - ग्राम

मूंगफली 23-28 ग्राम, ब्रेड की एक स्लाइस 3 ग्राम, अंडा 12 ग्राम, कच्ची सब्जियां 4 ग्राम, चावल/पास्ता 5 ग्राम, चिकन 29ग्राम, पनीर 18-20 ग्राम, सोयाबीन 35 ग्राम, काजू 25-27ग्राम, अखरोट 16 ग्राम, बादाम 21ग्राम

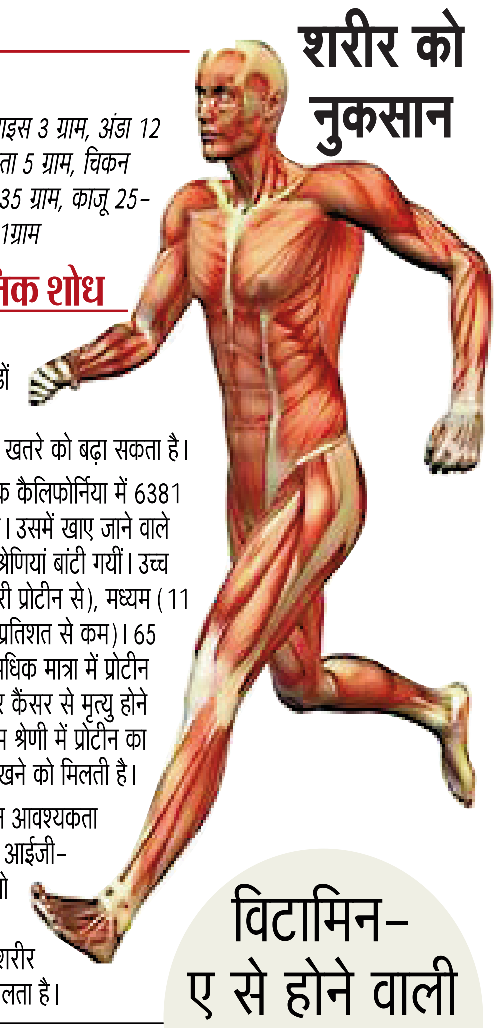

प्रोटीन से जुड़े आधुनिक शोध

- एक शोध के अनुसार लो-कोलेस्ट्रॉल डाइट लेने वालों को अंडों के सेवन से बचना चाहिए। अंडे का अधिक सेवन टाइप 2 डायबिटीज के खतरे को बढ़ा सकता है।
- लॉस एंजिल्स स्थित यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया में 6381 वयस्कों पर एक अध्ययन किया गया। उसमें खाए जाने वाले प्रोटीन की मात्रा के आधार पर कई श्रेणियां बांटी गयीं। उच्च प्रोटीन (20 प्रतिशत से अधिक कैलोरी प्रोटीन से), मध्यम (11 से 19 प्रतिशत) व कम प्रोटीन (10 प्रतिशत से कम)। 65 वर्ष से अधिक की उम्र के लोग जो अधिक मात्रा में प्रोटीन का सेवन करते हैं, उनमें मधुमेह और कैंसर से मृत्यु होने की आशंका बढ़ जाती है। वहीं मध्यम श्रेणी में प्रोटीन का सेवन करने वालों में आशंका कम देखने को मिलती है।
- आयु बढ़ने के साथ शरीर की प्रोटीन आवश्यकता कम हो जाती है। प्रोटीन से शरीर में आईजी-एफवन हार्मोन सक्रिय हो जाता है, जो शरीर में ऊतकों की वृद्धि के लिए जिम्मेदार हैं। ऐसे में अधिक प्रोटीन शरीर कोशिकाओं में वृद्धि के लिए दबाव डालता है।

क्यों हानिकारक है अधिक प्रोटीन?

अधिक मात्रा में प्रोटीन का सेवन (कुल कैलोरी में 30 प्रतिशत से अधिक प्रोटीन डाइट का भाग) शरीर को नुकसान पहुंचाता है। इससे शरीर में कीटोंस की मात्रा बढ़ जाती है, जो कि विषैला पदार्थ है। इस पूरी प्रक्रिया में शरीर से ज्यादा मात्रा में पानी बाहर निकल जाता है, जिससे डीहाइड्रेशन भी हो सकता है। अधिक व्यायाम करने वालों में ऐसा अधिक होता है। ऐसी डाइट को कीटोजेनिक डाइट भी कहते हैं। किडनी की समस्या से जूझ रहे लोगों को भी उच्च प्रोटीन डाइट से परहेज रखने की सलाह दी जाती है। अधिक प्रोटीन डाइट लेने से किडनी पर दबाव अधिक पड़ जाता है। हड्डियों की समस्या जैसे रूमेटाइड आर्थराइटिस की स्थिति से जूझ रहे लोगों को भी उच्च प्रोटीन डाइट से बचने की सलाह दी जाती है। चूंकि प्रोटीन के अवशोषण के लिए अधिक कैल्शियम की आवश्यकता होती है, ऐसे में मांसपेशियों एवं हड्डियां का कैल्शियम घटने लगता है।

शाकाहारी लोगों के लिए अधिक प्रोटीन लेने के तरीके

शाकाहारी भोजन से पर्याप्त मात्रा में प्रोटीन मिलना थोड़ा मुश्किल होता है, इसलिए आपको अपने डाइट में प्रोटीन वाले चीजों की मात्रा बढ़ानी पड़ेगी, जिससे आप पर्याप्त प्रोटीन पा सकें। हम यहां आपको कुछ आसान तरीकों के बारे में बता रहे हैं- आहार विशेषज्ञ के अनुसार, शाकाहारियों को अपने आहार में डेयरी प्रोडक्ट ज्यादा प्रयोग करने चाहिए जैसे कि दूध, दही, पनीर आदि। आपको रोजाना लंच के बाद छाछ या दही, और रोज सुबह और रात में सोने से पहले एक ग्लास दूध पीना चाहिए। सोयाबीन और स्प्राउट्सल लें। दलिया, चने, अलसी का बीज और फलियां ये सब प्रोटीन के मुख्य स्रोत हैं। अपने खानपान में बींस, मटर, दालें आदि शामिल करें। आप इन्हें गेहूं या चावल जैसे अनाज के साथ लें तो आपको इनसे सारे पोषक तत्व एक साथ मिल जाएंगे।

विटामिन-ए से होने वाली बीमारियां

विटामिन ए दो फार्म में पाए जाते हैं, रेटिनॉल और कैरोटीन। विटामिन ए आंखों के लिए बहुत जरूरी होता है। यह विटामिन शरीर में अनेक अंगों जैसे त्वचा,बाल, नाखून, ग्रंथि, दांत, मसूड़ा और हड्डी को सामान्य रूप में बनाए रखने में मदद करता है। विटामिन ए की कमी से ज्यादातर आंखों की बीमारियां होती हैं, जैसे रतौंधी, आंख के सफेद हिस्से में धब्बे। यह रक्त में कैल्शियम का स्तर बनाए रखने में भी मदद करती है और हड्डियों को मजबूत करती है। स्रोत शरीर में विटामिन ए की कमी न होने के लिए चुकंदर, गाजर, पनीर, दूध, टमाटर, हरी सब्जियां, पीले रंग के फल खाने चाहिए। इसमें विटामिन ए भरपूर मात्रा में पाया जाता है, जो शरीर में इसकी पूर्ति करता है।

रेसिपी

साबूदाना नमकीन

सामग्री

- आलू: 4
- साबूदाना: आधा कप
- काली मिर्च: एक चम्मच स्पून
- नमक : स्वाद के अनुसार
- तेल: अंजाद के अनुसार

विधि

कुरकुरे साबूदाना नमकीन बनाने के लिए सबसे पहले आलू को उबाल लें। इसके बाद साबूदाने को दरदरा पीस लें। इसके बाद सैंधा नमक डालकर पीसे हुए साबूदाने और उबले आलूओं को अच्छे से मिला लें और पिसी हुई काली मिर्च मिला लें। अब इसे थोड़ी देर रख दें। इसके बाद सेव बनाने वाली मशीन में इस पेस्ट को डालें। अब कढ़ाही गर्म करके और मशीन से सेव कढ़ाही में डालें और सुनहरा होने तक भूनें। इसके बाद इसे हल्का भूरा तक हो जाने तक भूनें।

गर्मागर्म जलेबियां

सामग्री

- मैदा: 1 कटोरी
- यीस्ट: आधा चम्मच
- घी
- चीनी: 4 कप
- दूध: 1 बड़ा चम्मच
- केसर: 8-10 रेशे

विधि

सबसे पहले यीस्ट में आधी कटोरी गुनगुना पानी डालें और इसे फूलने दें। इसके बाद एक बर्तन में मैदा डालें और यीस्ट का पानी डालते हुए इसे घोलते जाएं। इस बात का ध्यान रखें कि घोल ज्यादा पतला और गाढ़ा न हो। इसके बाद इस घोल को रखकर छोड़ दें। अब इस मैदे में खमीर उठने लगेगा। इसके बाद जलेबी के लिए चाश्नी तैयार कर लें। इसके लिए कढ़ाही में पानी और चीनी डालकर धीमी आंच पर पकने दें। इसे चलाते रहें। इसके बाद एक तार की चाश्नी बनने दें। इसके बाद इसमें केसर डालकर थोड़ी देर थीमी आंच पर पकाएं। अब जलेबी बनाने के लिए कढ़ाही में घी डालकर इसमें जलेबी बनाने वाले कपड़े या सॉस बॉटल से जलेबी के डिजाइन के टुकड़े में तल लें।

टाईम पास

आज का राशिफल

मेष — चू चे चो ला ली लू ले लो आ
सभा-गोष्ठियों में मान-सम्मान बढ़ेगा। धार्मिक आस्थाएं फलीभूत होंगी। निर्मूल शंकाओं के कारण मनस्ताप भी पैदा हो सकते है। सुख-आनंद कारक समय है। लाभदायक कार्यों की चेष्टाएं प्रबल होंगी। सक्रियता से अल्प लाभ का हर्ष होगा। कुछ महत्वपूर्ण कार्य बनाने के लिए भाग-दौड़ रहेगी। शुभांक-4-5-6

वृष — इ उ ए ओ वा वी वू वे वो
मनोविनोद बढ़ेगे। व्ययाधिक्य का अवसर आ सकता है। शुभ कार्यों का लाभदायक परिणाम होगा। कामकाज की अधिकता रहेगी। लाभ होगा और पुराने मित्रों से समागम। व्यवसायिक अभ्युदय भी होगा और प्रसन्नताएं भी बढ़ेगी। कामकाज की व्यस्तता से सुख-आराम प्रभावित होगा। शुभांक-4-6-7

मिथुन — का की कू घ ड छ के को हा
व्यापार में वृद्धि होगी। नौकरी में सहयोगियों का सहयोग प्राप्त होगा। शत्रुपक्ष पर आप हावी रहेंगे। पारिवारिक परेशानी बढ़ेगी। कुछ प्रतिकूल गोचर का क्षोभ दिन-भर रहेगा। सुबह की महत्त्वपूर्ण सिद्धि के बाद दिन-भर उत्साह रहेगा। किसी लाभदायक कार्य के लिए व्ययकारक स्थितियां पैदा होगी। शुभांक-4-6-7

कर्क — ही हू हे हो डा डी डू डे डो
आध्यात्मिक रुचि बनेगी। प्रसन्नता के साथ सभी जरूरी कार्य बनते नजर आएंगे। प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए कुछ सामाजिक कार्य संपन्न होंगे। कई प्रकार के हर्ष उल्लास के बीच अप्रत्याशित विघ्न पैदा होंगे। आमोद-प्रमोद का दिन होगा और व्यावसायिक प्रगति भी होगी। भाई-बहनों का प्रेम बढ़ेगा। शुभांक-1-7-9

सिंह — मा मी मू मे मो टा टी टू टे
स्वास्थ्य और जीवन स्तर में सुधार की अपेक्षा रहेगी। ज्ञान-विज्ञान की वृद्धि होगी और सज्जनों का साथ भी रहेगा। कुछ कार्य भी सिद्ध होंगे। व्यर्थ की भाग-दौड़ से यदि बचा ही जाए तो अच्छा है। प्रियजनों से समागम का अवसर मिलेगा। अवरुद्ध कार्य संपन्न हो जाएंगे। वाहन चालन में सावधानी बरतें। शुभांक-3-5-8

कन्या — टो पा पी पू ष ण ठ पे पो
आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। मानसिक एवं शारीरिक शिथिलता पैदा होगी। शनैः-शनैः स्थिती पक्ष की बनने लगेगी। मेल-मिलाप से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। यात्रा का दूरगामी परिणाम मिल जाएगा। आशा और उत्साह के कारण सक्रियता बढ़ेगी। स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। शुभांक-2-5-7

तुला — रा री रु रे रो ता ती तू ते
स्वास्थ्य की ओर विशेष ध्यान रहें। व्यापार में वृद्धि होगी। नौकरी में सहयोगियों का सहयोग प्राप्त होगा। शत्रुपक्ष पर आप हावी रहेंगे। पारिवारिक परेशानी बढ़ेगी। कुछ प्रतिकूल गोचर का क्षोभ दिन-भर रहेगा। यश-प्रतिष्ठा में वृद्धि व शिक्षा में परेशानी आ सकती है। स्वास्थ्य की ओर विशेष ध्यान रखें। शुभांक-2-6-8

वृश्चिक — तो ना नी नू ने नो य यी यू
आवेश में आना आपके हित में नही होगा इसलिए व्यवहार व वाणी पर नियत्रंण रखें। पारिवारिक परेशानी बढ़ेगी। पठन-पाठन में स्थिति कमजोर रहेगी। अपने अधीनस्त लोगों से कम सहयोग मिलेगा। बाहरी सहयोग की अपेक्षा रहेगी। जो चल रहा हैं उसे सावधानीपूर्वक संभालें। शुभांक-3-6-8

धनु — ये यो भा भी भू धा फा ढा भे
धर्म-कर्म के प्रति रुचि जागृत होगी। मानसिक एवं शारीरिक शिथिलता पैदा होगी। श्रेष्ठजनों की सहानुभूतियां होगी। रुका हुआ लाभ प्राप्त हो सकता है। पूर्व नियोजित कार्यक्रम सरलता से संपन्न हो जाएंगे। जोखिम से दूर रहना ही बुद्धिमानी होगी। शुभ कार्यों में प्रवृत्ति बनेगी और शुभ समाचार भी मिलेंगे। शुभांक-4-6-7

मकर — भे जा जी खी खू खे खो गा गी
लाभकारी गतिविधियों में सक्रियता रहेगी। कामकाज की व्यस्तता बढ़ेगी। धर्म-कर्म के प्रति रुचि जागृत होगी। मानसिक एवं शारीरिक शिथिलता पैदा होगी। श्रेष्ठजनों की सहानुभूतियां होंगी। अपने हितैषी समझे जाने वाले ही पीठ पीछे नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेंगे। आज का परिश्रम आगे लाभ देगा। शुभांक-3-5-6

कुंभ — गू गे गो सा सी सू से सो दा
कारोबारी यात्रा को फिलहाल टालें। परिवारजन का सहयोग व समन्वय काम को बनाना आसान करेगा। आशा और उत्साह के कारण सक्रियता बढ़ेगी। स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। मानसिक एवं शारीरिक शिथिलता पैदा होगी। श्रेष्ठजनों की सहानुभूतियां होगी। इच्छित कार्य सफल होंगे। शुभांक-4-6-8

मीन — दी दू थ झ ञ दे दो चा ची
ले देकर की जा रही काम की कोशिश ठीक नहीं। समय नकारात्मक परिणाम देने वाला बन रहा है। कार्यक्षेत्र में आगे बढ़ने में रुकावट का एहसास होगा। विरोधियों के सक्रिय होने की संभावना है। जो चल रहा हैं उसे सावधानीपूर्वक संभालें। भाई-बहनों का प्रेम बढ़ेगा। इच्छित कार्य सफल होंगें। शुभांक-5-6-8

काकुरो पहेली - 1801

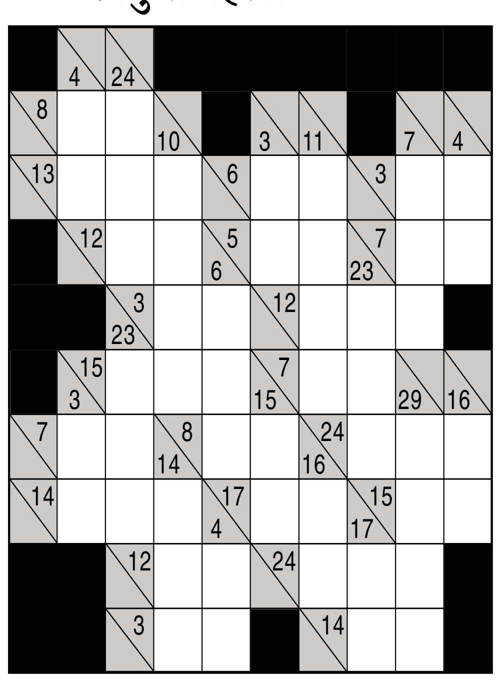

खाली वर्गों में 1 से 9 तक के अंक लिखकर नीचे से ऊपर व दाएं से बाएं की जोड़ हल्के रंग के आधे वर्ग की संख्या से मेल खानी चाहिए.किसी भी अंक का उस जोड़ में पुनः उपयोग नहीं किया जा सकता.

उदाहरणत:

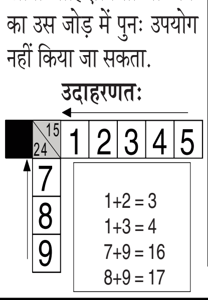

1+2 = 3
1+3 = 4
7+9 = 16
8+9 = 17

काकुरो - 1800 का हल

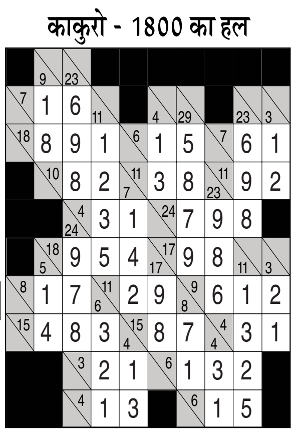

सूडोकु -1801

3				8				9
		8	6		9	5		
6	5			4			7	1
	4						2	
1	2			6			9	8
		6	4		5	8		
9				1				7

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु -1800 का हल

2	3	8	5	1	9	6	4	7
9	6	4	7	3	8	2	5	1
5	1	7	4	6	2	8	3	9
3	2	5	1	9	7	4	6	8
1	8	9	6	4	3	7	2	5
4	7	6	2	8	5	1	9	3
6	4	3	8	5	1	9	7	2
8	9	2	3	7	4	5	1	6
7	5	1	9	2	6	3	8	4

लॉफिंग ज़ोन

पति (पत्नी से) प्रिये यदि मुझे कुछ हो गया तो तुम क्या दूसरी शादी कर लोगी।

नहीं, कभी नहीं। मैं अपना बचा जीवन अपनी बड़ी बहन के साथ गुजार दूँगी लेकिन दूसरी शादी नहीं करूँगी।

पत्नी (पति से) : लेकिन यदि मुझे कुछ हो गया तो क्या तुम दूसरी शादी कर लोगे।

पति : नहीं, मैं भी तुम्हारी बहन के साथ ही रह लूँगा।

□ □ □

अपने प्रेमी की शिकायत करते हुए शीला ने गीता से कहा- यह रमन का बच्चा आजकल मुझसे फ्लर्ट कर रहा है।

गीता- क्यों क्या किया रमन ने?

शीला- कल शाम जब मैं एक रेस्त्राँ में उससे मिलने गई तो वह बहुत देर बाद आया। कारण पूछने पर कहने लगा- अरे, वो नरेश मुझे जबरदस्ती टॉकिज ले गया था फिल्म दिखाने।

गीता- तो इसमें फ्लर्ट की क्या बात है?

शीला- दरअसल, कल नरेश के साथ टॉकिज तो मैं गई थी।

□ □ □

फिल्म वर्ग पहेली- 1801

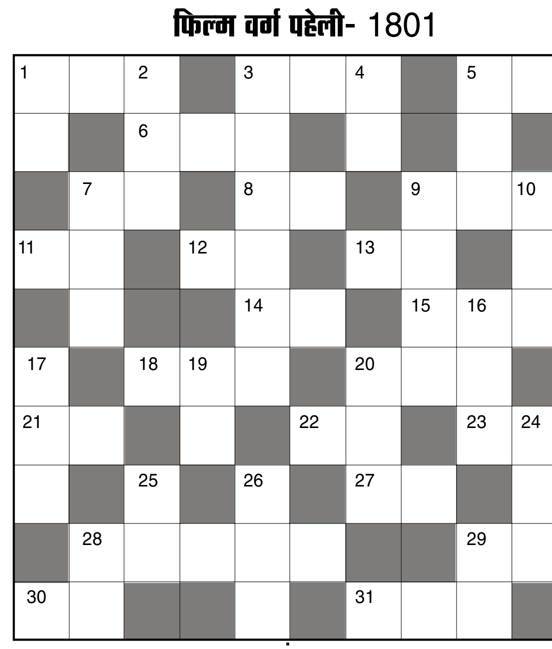

बायें से दायें:-

१. अनिल कपूर, श्रीदेवी, उर्मिला की 'हो मुझे प्यार हुआ' गीत वाली फिल्म-३
३. 'मन क्यों बहका रे' गीत वाली फिल्म-३
५. जैकी, संजयदत्त, रवीना की 'याइला रे लड़की मस्त मस्त' गीत वाली फिल्म-२
६. 'छोटा बच्चा जानके' गीतवाली फिल्म-३
७. अक्षय, जैकी, सुनील, रवीना, लारा की 'कोई प्यार ना करे' गीतवाली फिल्म-२
८. फिल्म 'चलते चलते' में नायिका-२
९. शाहरूख, मनीषा, प्रीति की 'जिया जले जान' गीत वाली फिल्म-२,१
११. 'खुल गया नसीब देखो साला' गीत वाली सुनील शेट्टी, पूजा की फिल्म-२
१२. अमिताभ, फरदीन, करीना की 'जब नहीं आये थे' गीत वाली फिल्म-२
१३. 'भैया मेरे पापा को' गीत वाली मनोज बाजपेयी, रवीना टंडन की फिल्म-२
१४. बिश्वजीत, माला सिन्हा की 'अकेला हूँ मैं' गीत वाली फिल्म-२
१५. 'तेरी दुनिया से दूर' गीत वाली महीपाल, श्यामा की फिल्म-३
१८. कंवलजीत, वहीदा रहमान की 'पर्वतों के पेड़ों पर' गीत वाली फिल्म-३
२०. मिथुन, आयशा जुल्का की फिल्म-३
२१. राजेशखन्ना, मुमताज की 'गोरे रंग पे ना इतना' गीत वाली फिल्म-२
२२. 'दुनिया जब जलती है' गीत वाली धर्मेन्द्र, हेमा मालिनी की फिल्म-२
२३. देव आनंद, माला की 'कोई सोने के दिल वाला' गीत वाली फिल्म-२
२७. 'मेरी उमर के नौजवानों' गीत वाली ऋषिकपूर, टीना मुनीम की फिल्म-२
२८. नसीर, आमिर, सोनाली की 'होशवलों को खबर' गीत वाली फिल्म-५
२९. 'प्रहार' में डिम्पल के साथ नायक ?-२
३०. गोविंदा, नीलम की 'मैं प्यार का पुजारी' गीत वाली फिल्म-२
३१.'मैं क्या करूं राम' गीतवाली फिल्म-३

ऊपर से नीचे:-

१. 'जब कोई बात बिगड़ जाये' गीत वाली विनोद खन्ना, मीनाक्षी शेशद्रि की फिल्म-२
२. संजीवकुमार, लीना चंदावरकर की 'पैसे बिना प्यार फिजूल है' गीत वाली फिल्म-३
३. 'इन आँखों की मस्ती के' गीत वाली नसीर, फारूख शेख, रेखा की फिल्म-४,२
४. राजकुमार, सुनीलदत्त, साधना, शर्मिला की 'हम जब सिमट' गीत वाली फिल्म-२
५. 'दो प्यार करने वाले' गीत वाली फिल्म-३
७. जैकी श्रॉफ, जूही, अमृता की 'मेरी बन्नो की' गीत वाली फिल्म-३
९. 'शाम है धुआं धुआं' गीत वाली अजय देवगन, मधु, सोनाली बेंद्रे की फिल्म-४
१०. विनोद खन्ना, नीतूसिंह की 'बनके संवरके मैं निकली' गीत वाली फिल्म-३
१६. 'अगर जिंदगी हो तेरे' गीत वाली अविनाश वधावन, आयशा की फिल्म-३
१७. गुरूदत्त, आशा पारेख की 'वो दिल कहाँ से लाऊं' गीत वाली फिल्म-३
१९. 'दुनिया हसीनों का मेला' गीत वाली बॉबी, मनीषा, काजोल की फिल्म-२
२०. संजीवकुमार, रेहाना सुल्तान की फिल्म-३
२४. 'छू कर मेरे मन' गीत वाली अमिताभ, अमजदखान, नीतूसिंह की फिल्म-३
२५. 'मैं कुड़ी अनजानी' गीत वाली फिल्म-२
२६. 'तू लाली है सवेरे वाली' गीत वाली विनोद मेहरा, सायराबानो की फिल्म-३
२८. मनोज वाजपेयी, उर्मिला की 'मेरे पास भी है' गीत वाली फिल्म-४
२९. संजयदत्त, कुमार गौरव, पूनम की फिल्म-२

फिल्म वर्ग पहेली- 1800

स्व	दे	श		स	ड़	क		आ	ह
र्ग		ग	हु	ल		स	र	ग	म
	बॉ	बी		मा	लि	क			जो
अ	क्स		डॉ	न			जं	ग	ली
ध	र	ती		खा	मो	शी		र्व	
र्म		स		न		बा	जी		का
	क	री	ना		प		त	ला	श
स		क		सू	र	ज		वा	
प	ड़ो	स	न		वा		बा	रि	श
ने		म		गु	ना	ह		स	

शब्द पहेली - 1801

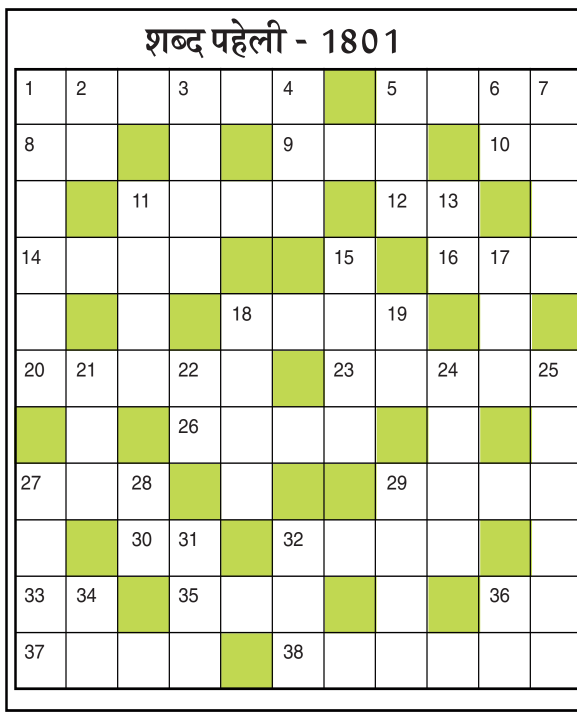

बाएँ से दाएँ

1.पवनपुत्र,हनुमान-3,3
5.मजार-4
8.बगीचा (अंग्रेजी में-2)
9.तहजीब,तमीज-3
10.सत्य,तेज-2
11.पतंगा-4
12.ईसाई साध्वी-2
14.इंकार करना-4
16.उत्तम,आदर्शवादी-3
18.रोमांच,उद्वेग-4
20.पागलपन,सनक-5
23.पालन-पोषण-5
26.आनंद लेना-2,2
27.बेईमानी,अमानत में खयानत-3
29.अप्रधान,गौण-4
30.ठाठ-बाट-2
32.अति काला,एक प्रकार की लकड़ी-4
33.रहस्य-2
35.गरुड़ जो रावण से लड़ा था-3
36.कमरा,रूम-2
37.जल में रहने वाला-4
38.धर्म के उपदेश देनेवाला-6

ऊपर से नीचे

1.पलायन करने वाला-6
2.जंगल-2
3.दांत से छोटे टुकड़े करना-4
4.जिव्हा,जीभ-3
5.घर,भवन-3
6.यात्री गाड़ी-2
7.चौबीस घंटे का समय-4
11.परीक्षण करना-4
13.भीगा हुआ-2
15.खीजना-4
17.उपस्थिती-3
18.रोमांच,उद्वेग-4
19.संपत्ति-2
21.उचित,सही-3
22.पंख,पराया-2
24.देश निर्वासन-4
25.अंगरक्षक-3,3
27.हाथी-4
28.मद,सरूर-2
29.अनुसार,समान-4
31.निगाह,दृष्टि-3
32.हथियार-3
34.पानी,नीर-2
36.सिगरेट का धुआं खींचना,सुट्टा-2

शब्द पहेली - 1800 का हल

उ	प	चा	र		नि		वि	रा	स	त
	र		घु		ग	द	र		ही	न
क			व	रा	ह		ह			हा
म	हा	वी	र		बा	ल		क	मा	ई
जो		रा		ना	न		श		ख	
र	म	णी	य	ता		भा	व	ही	न	ता
	न		म		ज	ल		ट		र
अ	का	ल		शू	ल		नी	र	व	ता
प			न		प्र	ख	र			र
रा	ल		म	हु	वा		स		मी	
ध	ड़	क	न		ह		ता	र	त	म्य

बिहार में मुजफ्फरपुर जिले के कटरा प्रखंड में पानी में डूबने से पांच बच्चों की मौत

एजेंसी

पटना। बिहार में मुजफ्फरपुर जिले के कटरा प्रखंड अन्तर्गत खंगराडीह गांव में रविवार को नहाने के दौरान पांच बच्चे की डूबने से मौत हो गई। पुलिस ने शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजवा दिया है। पुलिस के अनुसार कटरा प्रखंड के खंगुराडीह एवं बंधपुरा पंचायत के सीमा पर चौर (खाली जगह) में गोरधुवा पुल के नजदीक डूबने से खंगुराडीह गांव के पांच बच्चो की मौत हो गयी। यह घटना नहाने के दौरान घटी। मृतकों की पहचान खंगुराडीह के ही मोहम्मद अनस (15), पिता मोहम्मद शहजाद, मोहम्मद हिदायतुल्ला (14), पिता मोहम्मद रेयाज, मोहम्मद हमजा अली (12), पिता कल्लू उर्फ मुस्तफा, मोहम्मद रहमान (12) पिता मोहम्मद अफताब और मोहम्मद अब्बू तालीम (12), माता नर्गिस प्रवीण के रूप में हुई है। पुलिस ने बताया कि सभी बच्चे नहाने के दौरान गड्ढे में फंस गये और फिर डूबने से उनकी मौत हो गयी। पुलिस ने शवों को पोस्टमार्टम के लिए श्रीकृष्णा मेडिलक कॉलेज एंड हॉस्पिटल (एसकेएमसीएच) भेज दिया है। इस बड़े हादसे को लेकर पीड़ित परिवार के साथ ही गांव-समाज में मामतम का माहौल है।

रामनगर से मालवाहक जलयान सीमेंट लेकर झारखंड रवाना

वाराणसी। उत्तर प्रदेश के वाराणसी जनपद में दिन जल परिवहन के लिए खास बन गया। प्रधानमंत्री गति शक्ति योजना के कार्गो प्रमोशन के तहत मालवाहक जलयान एमवी होमी भाभा 300 मीट्रिक टन सीमेंट (पुट्टी) के साथ रामनगर बंदरगाह से एमएमटी साहिबगंज (झारखंड) के लिए रवाना हुआ। इस मालवाहक जहाज़ को केंद्रीय पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय के सचिव टीके रामचंद्रन, वाराणसी परिक्षेत्र के मंडलायुक्त एस. राजलिंगम, वाराणसी के जिलाधिकारी सत्येंद्र कुमार, चंदौली के जिलाधिकारी चंद्रमोहन गर्ग ने सयुंक्त रूप से हरी झंडी दिखा कर जहाज को रवाना किया। मालवाहक जहाज की रवानगी के बाद सचिव तथा मंडलायुक्त ने पोर्ट परिसर में आम के पौधे का रोपण भी किया। उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री गति शक्ति योजना, जिसे राष्ट्रीय मास्टर प्लान भी कहा जाता है, भारत में बुनियादी ढांचे के विकास और मल्टीमॉडल कनेक्टिविटी को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वाकांक्षी योजना है। इसका उद्देश्य विभिन्न मंत्रालयों और विभागों को एक साथ लाना है ताकि परियोजनाओं की योजना, कार्यान्वयन और निगरानी को एकीकृत किया जा सके, जिससे लॉजिस्टिक दक्षता में सुधार हो और आर्थिक विकास को बढ़ावा मिले।

कठुआ आपदा : मृतकों के परिजनों को 2 लाख, घायलों और घरों के नुकसान पर भी मिलेगा मुआवजा

श्रीनगर। कठुआ आपदा पर जम्मू-कश्मीर सरकार ने पीड़ित परिवारों के लिए मुआवजे की घोषणा की है। मृतकों के परिजनों को 2-2 लाख रुपए का मुआवजा दिया जाएगा। गंभीर रूप से घायलों को एक लाख रुपए और मामूली रूप से घायलों को 50 हजार रुपए दिए जाएंगे। जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री कार्यालय ने इसकी जानकारी दी है। जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री कार्यालय ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, कठुआ में हाल ही में हुए बादल फटने से प्रभावित लोगों के जीवन और संपत्ति के प्रति गहरी चिंता व्यक्त करते हुए मुख्यमंत्री ने एसडीआरएफ सहायता के अलावा मुख्यमंत्री राहत कोष से अनुग्रह राशि की घोषणा की है। प्रत्येक मृतक के लिए 2 लाख रुपए, गंभीर रूप से घायलों के लिए 1 लाख और मामूली रूप से घायलों के लिए 50 हजार रुपए दिए जाएंगे। आपदा में घरों को हुए नुकसान को लेकर भी मुख्यमंत्री ने मुआवजे की घोषणा की है। मुख्यमंत्री कार्यालय ने बताया, पूरी तरह क्षतिग्रस्त घरों के लिए 1 लाख रुपए, गंभीर रूप से क्षतिग्रस्त घरों के लिए 50 हजार रुपए और आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त घरों के लिए 25 हजार रुपये की सहायता दी गई है। इस सहायता का उद्देश्य तत्काल राहत प्रदान करना और प्रभावित परिवारों को अपना जीवन फिर से शुरू करने में सहायता प्रदान करना है।

अनिल विज का विपक्ष पर निशाना : राहुल गांधी की यात्रा से सुप्रीम कोर्ट पर अविश्वास झलकता है

अंबाला। हरियाणा के ऊर्जा, परिवहन एवं श्रम मंत्री अनिल विज ने आज विपक्ष और कांग्रेस पर तीखा हमला बोला है। उन्होंने कांग्रेस नेता राहुल गांधी की बिहार यात्रा के संबंध में पूछे गए सवाल का जवाब देते हुए कहा कि इस यात्रा से यह अर्थ निकलता है कि विपक्ष को सुप्रीम कोर्ट पर विश्वास नहीं है। उन्होंने कहा कि मतदाताओं के नाम कटने का मामला सुप्रीम कोर्ट में है और कोर्ट ने इस पर अंतरिम आदेश भी दिए हैं, इसलिए विपक्ष को कोर्ट का सम्मान करना चाहिए। विज ने कहा कि विपक्ष की यात्रा से कोर्ट अपने फैसले नहीं बदल सकता। उन्होंने तंज कसते हुए कहा कि हमारे देश में जो भी देशप्रेम की बात करेगा और देश के लिए काम करेगा, वह कांग्रेस को विलेन नजर आता है। एनसीईआरटी के मॉड्यूल में जिन्ना, माउंटबेटन और कांग्रेस को देश के विभाजन का जिम्मेदार ठहराए जाने के सवाल पर विज ने कहा कि यह बिल्कुल ठीक है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस खुद को धर्मनिरपेक्ष बताती है, जबकि उसी ने धर्म के आधार पर देश का बंटवारा कराया। उन्होंने कहा कि विभाजन के दस्तावेज पर कांग्रेस, जिन्ना और माउंटबेटन के हस्ताक्षर हैं, इसलिए वे ही इसके लिए जिम्मेदार हैं। प्रधानमंत्री द्वारा लाल किले की प्राचीर से आरएसएस का जिक्र किए जाने के सवाल पर विज ने कहा कि इसमें कुछ भी गलत नहीं है।

बुजुर्गों को अब घर बैठे ही मिलेंगी जरूरी दवाएं, सीएम भजनलाल की अनूठी पहल

एजेंसी

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने प्रदेश के बुजुर्गों के लिए एक अनूठी पहल की घोषणा की है। अब 70 वर्ष से अधिक आयु के वृद्धजनों को जरूरी दवाएं घर बैठे ही उपलब्ध कराई जाएंगी। यह सुविधा मुख्यमंत्री द्वारा आयोजित चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग की समीक्षा बैठक में दिए गए निर्देशों के बाद शुरू की जा रही है। मुख्यमंत्री ने कहा कि इस योजना को सुचारू रूप से लागू करने के लिए पहले किसी एक जिले में पायलट प्रोजेक्ट के रूप में इसे शुरू किया जाएगा और इसके सफल होने पर चरणबद्ध तरीके से पूरे प्रदेश में लागू किया जाएगा। इस पहल का उद्देश्य बुजुर्गों को स्वास्थ्य सेवाओं तक आसान पहुंच प्रदान करना और उन्हें दवाएं लेने के लिए अस्पतालों के चक्कर लगाने की परेशानी से बचाना है। इस कदम को प्रधानमंत्री

नरेंद्र मोदी के स्वस्थ एवं समृद्ध भारत के संकल्प को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। सरकार की इस पहल से प्रदेश के लाखों बुजुर्गों को बड़ी राहत मिलने की उम्मीद है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा है कि राज्य सरकार का लक्ष्य प्रदेश के हर गांव और ढाणी तक गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचाना है। इसी सोच के साथ सरकार ने अपने पहले बजट में कुल बजट का 8.26 प्रतिशत स्वास्थ्य क्षेत्र के लिए आवंटित किया था। उन्होंने चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग से संबंधित बजट घोषणाओं के क्रियान्वयन की समीक्षा बैठक में कहा कि निर्माण संबंधी कार्यों के लिए समयसीमा तय कर नियमित मॉनिटरिंग सुनिश्चित की जाए।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के स्वस्थ और समृद्ध भारत के संकल्प को मजबूत करने की दिशा में राजस्थान स्वास्थ्य के क्षेत्र में अग्रणी बनने की ओर अग्रसर है। उन्होंने बताया कि 6 करोड़ 20 लाख से अधिक आभा आईडी बनाकर राजस्थान देशभर में दूसरे स्थान पर है।

साथ ही, स्वास्थ्य शिविरों के माध्यम से 1 करोड़ 68 लाख से अधिक आभा लिंक्ड ई-हेल्थ रिकॉर्ड भी बनाए जा चुके हैं। मुख्यमंत्री ने घोषणा की कि राजस्थान यूनिवर्सिटी ऑफ हेल्थ साइंसेज को एम्स, दिल्ली की तर्ज पर राजस्थान इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज के रूप में विकसित किया जा रहा है। इस पर चरणबद्ध रूप से 750 करोड़ खर्च किए जाएंगे। शर्मा ने सरकारी कर्मचारियों और पेंशनभोगियों के लिए संचालित आरजीएचएस योजना के दुरुपयोग पर सख्त कार्रवाई करने का निर्देश दिया।

राजद के अध्यक्ष लालू यादव पुराने अंदाज में दिखे, कहा- भाजपा को नहीं आने देना है

एजेंसी

सासाराम। राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के प्रमुख लालू यादव रविवार को अपने पुराने अंदाज में दिखे। इंडिया ब्लॉक की वोटर अधिकार यात्रा से पहले सासाराम में आयोजित एक जनसभा को संबोधित करते हुए उन्होंने भाजपा को भगाने का आह्वान करते हुए कहा कि अब भाजपा को नहीं आने देना है। इंडिया' ब्लॉक की 'वोटर अधिकार यात्रा' की शुरुआत के मौके पर सासाराम में आयोजित सभा को संबोधित करते हुए लालू यादव ने कहा, सभी लोग एक हो जाइए। राहुल गांधी, तेजस्वी यादव और हम सबको एकजुट होकर भाजपा को उखाड़ फेंकना है। लोकतंत्र को मजबूत होने दीजिए। उन्होंने इस दौरान अपनी पुरानी एक कहावत भी कही। इधर, कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि हम लोग सिर्फ चुनाव के लिए नहीं, बल्कि लोकतंत्र के लिए लड़ रहे हैं। संविधान बचाने के लिए लड़ रहे हैं। वोट की सुरक्षा के लिए लड़ रहे हैं। ये वोट काट-काटकर अपनी हुकूमत चलाना चाहते हैं। ऐसी सरकार को उखाड़ फेंकना है। उन्होंने उपस्थित लोगों से मजबूती के साथ गठबंधन के लोगों के साथ रहने की अपील करते हुए कहा कि सरकार जरूर बदलेगी। आपके सहयोग से बिहार में भी सरकार बदलेगी। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में कांग्रेस की भूमिका को याद किया। उन्होंने कहा कि भारत की आजादी की कहानी कांग्रेस पार्टी की कहानी है। उन्होंने 1947 के बाद एक मजबूत लोकतंत्र की नींव रखने के लिए कांग्रेस नेताओं के प्रयासों का जिक्र किया।

हिमाचल में फिर बरपा मॉनसून का कहर, मंडी और कुल्लु में भारी नुकसान, 71 घर क्षतिग्रस्त, 3 एनएच व 352 सड़कें बंद

एजेंसी

शिमला। हिमाचल प्रदेश में मॉनसून की तबाही लगातार जारी है। भारी बारिश, बादल फटने, भूस्खलन और बाढ़ से जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया है। कई जिलों में घर, दुकानें, पशुशालाएं और सड़कें क्षतिग्रस्त हो गई हैं, वहीं नदी-नाले उफान पर हैं। राज्य आपातकालीन परिचालन केंद्र की दैनिक रिपोर्ट के अनुसार बीते 24 घण्टों में राज्य में 71 घर क्षतिग्रस्त हुए हैं। रिपोर्ट के अनुसार, तक प्रदेश में तीन नेशनल हाईवे और 352 सड़कें अवरुद्ध रहीं, जिनमें अकेले मंडी जिले की 201 सड़कें शामिल हैं।

कुल्लू में 63, सिरमौर में 28 और कांगड़ा में 27 सड़कें ठप रहीं। कुल्लू में एनएच-305, किन्नौर में एनएच-5 और मंडी में एनएच-21 पर यातायात प्रभावित है। राज्य में 1,067 ट्रांसफार्मर बंद पड़े हैं, जिनमें से 557 सिर्फ कुल्लू जिले में हैं। 116 पेयजल योजनाएं भी ठप हो चुकी हैं। बीते 24 घंटों में कटुआला (मंडी) में 120 मिमी, कांगड़ा और नगरोटा सूरियां में 110-110 मिमी, नाहन में 100 मिमी, जोगिंद्रनगर में 80, पांवटा साहिब में 70 और भुंतर में 60 मिमी बारिश दर्ज की गई। मौसम विभाग ने 18 अगस्त को चंबा और कांगड़ा जिलों के लिए

भारी बारिश का येलो अलर्ट जारी किया है। 19 और 20 अगस्त को भी वर्षा के आसार हैं, जबकि 21 से 23 अगस्त के बीच तेज बारिश और अंधड़ का नया दौर शुरू होने की संभावना है। आपातकालीन परिचालन केंद्र की रिपोर्ट के अनुसार, इस मानसून सीजन में अब तक 263 लोगों की मौत हो चुकी है, 37 लापता हैं और 332 घायल हुए हैं। मृतकों में मंडी में सर्वाधिक 47, कांगड़ा में 41, चंबा में 31, शिमला में 26, किन्नौर में 24, कुल्लू में 22, हमीरपुर और सोलन में 16-16, ऊना में 14, बिलासपुर में 10, सिरमौर में 9 और लाहौल-स्पीति में 7 लोगों की जान गई है। मॉनसून सीजन में बारिश व भूस्खलन से 2456 मकान क्षतिग्रस्त हुए जिनमें 581 पूरी तरह ढह गए हैं, 361 दुकानें और 2201 पशुशालाएं भी नष्ट हो चुकी हैं। अकेले मंडी में 1296 मकानों को नुकसान हुआ है जिनमें 442 पूरी तरह गिर गए। 287 दुकानें और 1219 पशुशालाएं भी इसी जिले में तबाह हुई हैं।

बिहार में वोट चोरों को बाहर करना जनता, इंडिया गठबंधन की जिम्मेदारी : खरगे

एजेंसी

सासाराम। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने कहा है कि बिहार में वोट चोरी करके दलितों पिछड़ों और अन्य सभी कमजोर वर्गों का शोषण किया जा रहा है इसलिए कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने वोटर अधिकार यात्रा शुरू की है और बिहार की जनता तथा विपक्ष के सभी दलों के नेताओं को एकजुट होकर इसमें शामिल होना चाहिए। उन्होंने कहा कि वोट हर एक व्यक्ति का अधिकार है लेकिन भाजपा सरकार चुनाव आयोग के साथ मिलकर इस अधिकार को छीन रही है और बिहार में मतदाता पुनरीक्षण का काम करवा कर लोगों के वोट चोरी करवा रही है। इसे सबको मिलकर रोकना है और इंडिया गठबंधन की सभी पार्टियों और बिहार की जनता को इस साजिश को सफल नहीं होने देना है। यह सभी का संकल्प होना चाहिए। उन्होंने आह्वान किया और बिहार की जनता मिलकर वोट चोरों को बाहर करे। श्री खरगे ने यहां लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी की वोटर अधिकार यात्रा को हरी झंडी दिखाने से पहले यहां जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि श्री गांधी की यह यात्रा संविधान बचाने के लिए है और इस यात्रा को सफल बनाने के लिए बिहार की जनता को उन्हें अपना पूरा समर्थन देना चाहिए। संविधान में हर गरीब को

वोटिंग का अधिकार दिया गया है। डॉ राजेंद्र प्रसाद, बाबा साहब अंबेडकर और महान चित्रकार नंदलाल बोस ने लिखित संविधान को सजाने के लिए चित्र बनाकर बड़ा योगदान दिया है।उन्होंने कहा कि श्री गांधी की यात्रा उस ऐतिहासिक सासाराम से शुरू हो रही है जहां बाबू जगजीवन राम आजीवन दलितों, पिछडों के हितों के लड़ते रहे। उनकी विरासत को उनकी पुत्री मीरा कुमार ने बखूबी आगे बढ़ाया और वह देश में लोकसभा की पहली अध्यक्ष बनी। उनका कहना था कि कांग्रेस और इंडिया गठबंधन गरीबों और दलितों के वोट के हक़ की लड़ाई लड़ रहा है। सबको इस लड़ाई में शामिल होना चाहिए और और बिहार में वोट चोरी की जो साजिश की जा रही है उसे मिलकर नाकाम किया जाना चाहिए। कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा, हमें जो वोटिंग का अधिकार मिला है उसे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भाजपा छीन रही है।

श्री मोदी लाल किला से कहते हैं कि आरएसएस ने देश की सेवा की है जबकि यह संगठन आजादी के खिलाफ रहा है। उन्होंने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का हमेशा विरोध किया है और उनको अलग-थलग रखने का काम किया है। जिस संगठन के लोगों ने आजादी की लड़ाई में अंग्रेजों का साथ दिया था, प्रधानमंत्री का लाल किला से उसकी तारीफ करना आजादी की लड़ाई लड़ने वाले और देश के लिए कुर्बान होने वाले लोगों के खिलाफ है।

प्रधानमंत्री 22 अगस्त को औंटा घाट-सिमरिया 6 लेन गंगा ब्रिज का करेंगे उद्घाटन

एजेंसी

पटना। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी आगामी 22 अगस्त को अपने बिहार दौरे के दौरान औंटा घाट-सिमरिया छह (06) लेन गंगा पुल (ब्रिज) का उद्घाटन करेंगे। विकासशील बिहार का प्रतीक यह पुल मोकामा के औंटा और बेगूसराय के सिमरिया को जोड़ेगा। औंटा-सिमरिया पुल की लम्बाई 1.865 किलोमीटर है। पहुंच पथ सहित परियोजना की कुल लंबाई 8.150 किलोमीटर है। परियोजना की कुल लागत 1,871 करोड़ रूपये है। इस पुल के बन जाने से उत्तर और दक्षिण बिहार की संपर्कता में व्यापक सुधार होगा। यहां पहले से मात्र दो (02) लेन का रेल-सह-सड़क पुल राजेंद्र सेतु (सड़क-सह-रेल पुल) था, जिसका शिलान्यास देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने वर्ष 1956 में किया था, जबकि उद्घाटन तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू और राज्य के पहले मुख्यमंत्री श्री कृष्ण सिंह ने वर्ष 1959 में किया था।पिछले 70 वर्षों में यातायात में हुई वृद्धि के फलस्वरूप यह पुल अब आवश्यकता की पूर्ति करने में सक्षम नहीं रहा था। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वर्ष 2015 में बिहार के लिए विशेष पैकेज की घोषणा की थी, जिसके अंतर्गत औंटा घाट से सिमरिया के बीच छह लेन नए गंगा ब्रिज के निर्माण की योजना शामिल थी। प्रधानमंत्री ने वर्ष 2017 में मोकामा में आयोजित एक समारोह में इस पुल की आधारशिला रखी थी। अब यह पुल बनकर तैयार हो गया है, जिसका उद्घाटन प्रधानमंत्री करेंगे । इस पुल के बन जाने से पटना से मोकामा, बेगूसराय होते हुए खगड़िया तक चार (4) लेन सपर्कता सुनिश्चित हो गयी है। पटना से बख्तियारपुर 4 लेन पथ चालू है। बख्तियारपुर से मोकामा 4 लेन सड़क का उद्घाटन प्रधानमंत्री द्वारा 22 अगस्त को ही किया जाएगा। इसकी कुल लंबाई 44.60 किलोमीटर एवं लागत 1,899 करोड़ रुपये है। सिमरिया से खगड़िया तक का 4 लेन सड़क का चैड़ीकरण पूर्ण हो चुका है। खगड़िया से पूर्णियां पथ को 4 लेन सड़क की योजना पर भारत सरकार काम कर रही है। उल्लेखनीय है कि औंटा घाट-सिमरिया रेल-सह-सड़क पुल के पूरब में सड़क पुल बना है एवं पश्चिम में नया रेल पुल भी बन रहा है। इस पुल के बन जाने से भारी वाहनों के आवागमन में सहूलियत होगी। पूर्वोत्तर भारत की ओर आने-जाने वाले ट्रकों के आवागमन को भी सहूलियत मिलेगी एवं दक्षिण बिहार से उत्तर बिहार पत्थर एवं बालू लदे ट्रकों के आवागमन में व्यापक सहूलियत होगी। इस पुल के बन जाने से बेगूसराय सहित संपूर्ण क्षेत्र के विकास को एक नई गति मिलेगी।

वोट की चोरी नहीं, डकैती की जा रही है : तेजस्वी यादव

एजेंसी

सासाराम। बिहार विधानसभा में विपक्ष के नेता तेजस्वी यादव ने आज एसआईआर के मामले को लेकर भाजपा एवं चुनाव आयोग पर जोरदार निशाना साधते हुए कहा कि इसके जरिए वोट की चोरी नहीं, डकैती की जा रही है। उन्होंने यह भी कहा कि बिहार लोकतंत्र की जननी रही है और बिहार से लोकतंत्र खत्म नहीं करने दिया जाएगा। 'इंडिया' गठबंधन की 'वोटर अधिकार यात्रा' की शुरुआत के मौके पर सासाराम में आयोजित सभा को संबोधित करते हुए उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बिहारियों को चूना लगाना चाहते हैं, लेकिन यह बिहार है; यहां चूना खैनी के साथ रगड़ दिया जाता है। बिहारी भले ही गरीब हैं, लेकिन यहां का बच्चा-बच्चा तीखी मिर्ची वाला काम करता है। हम बेईमानी नहीं होने देंगे। तेजस्वी ने आरोप लगाया कि चुनाव आयोग भाजपा के इशारे पर काम कर रहा है और मतदाता सूची में गड़बड़ी की गई है। उन्होंने तंज कसते हुए कहा कि जिन लोगों को मृत घोषित किया गया, उनके साथ राहुल गांधी ने चाय पी, जो चुनाव आयोग की बेईमानी को उजागर करता है। बिहार सरकार को निशाने पर लेते हुए उन्होंने इसे नकलची सरकार बताया। उन्होंने कहा कि वे जिन वादों की घोषणा करते हैं, बिहार की नीतीश कुमार सरकार नकल करके वही घोषणाएं कर रही है। उन्होंने सरकार को खटारा सरकार बताते हुए कहा कि हमें मौका मिला तो हम बिहार में विकास करने वाली सरकार देंगे। राजद नेता ने अपने 17 महीने के कार्यकाल की भी चर्चा की।

केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह ने मप्र के विदिशा में क्षतिग्रस्त सोयाबीन फसल का खेत में पहुंचकर किया निरीक्षण

एजेंसी

विदिशा। केंद्रीय किसान कल्याण, कृषि एवं ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने रविवार को मध्य प्रदेश के विदिशा जिले के अल्प प्रवास के दौरान विदिशा विकासखण्ड के ग्राम छीरखेड़ा में पहुंचकर किसानों से संवाद कर खरीफ फसलों की जानकारी प्राप्त की। इस दौरान गांव वालों ने सोयाबीन की अफलन और असरविहिन दवाओं की शिकायत की। केन्द्रीय कृषि मंत्री चौहान ने इस दौरान छीरखेड़ा गांव के किसान भगवान सिंह लोधी के खेत में पहुंचकर दवा छिड़काव से क्षतिग्रस्त हुई सोयाबीन की फसल का मौके पर निरीक्षण किया। स्थानीय किसानबंधुओं ने केन्द्रीय कृषि मंत्री को फसलों पर कीटनाशक दवा छिडकाव के उपरांत निर्मित स्थितियों की विस्तृत जानकारियां दीं। उन्होंने जिन किसानों की फसल कीटनाशक दवा के छिड़काव से नष्ट हो गई है, उनका निरीक्षण कर किसानों को हर संभव मदद और संबंधित दवा निर्माता कंपनी के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने का आश्वासन दिया।

कृषि केंद्रीय मंत्री ने इस दौरान किसानों से संवाद में कहा कि शिकायतें मिली थीं कि दवा के

छिड़काव से किसानों की सोयाबीन की फसल जलकर खाक हो गई है, तो उन्होंने तय किया कि वह स्वयं खेतों का निरीक्षण करेंगे। उन्होंने किसानों और कृषि विभाग के अमले के साथ खेतों का निरीक्षण किया और मौके पर किसानों को ढांढस बंधाते हुए कहा कि इस विषम परिस्थितियों में किसान भाई अपने आपको अकेला न समझे। पीड़ित किसानों की हर संभव मदद की जाएगी।

उन्होंने इस दौरान मीडिया से बातचीत करते हुए कहा कि खेत में सोयाबीन की फसल जलकर नष्ट हो गई है, खेत में सोयाबीन की जगह खरपतवार दिखाई पड़ रही है। किसी कंपनी की दवाई के छिड़काव से यह फसले नष्ट हुई हैं। इसके लिए एक उच्च स्तरीय वैज्ञानिकों का दल खेतों का निरीक्षण करेगा और जिस कंपनी ने ऐसी दवाई छिड़काव के लिए किसानों को दी है, उसके खिलाफ विधि संगत सख्त कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कहा कि किसानों को राहत देने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ेंगे और यह कंपनी की भी जिम्मेदारी है।

गोविंद देव जी में नंदोत्सव पर उमड़ा जनसैलाब, मुख्यमंत्री भजनलाल ने की रथ की आरती

जयपुर। आज भाद्रपद कृष्ण पक्ष नवमी, जयपुर के श्री गोविंद देवजी मंदिर में नंदोत्सव का आयोजन भक्ति और उल्लास के साथ किया गया। सुबह ठाकुर श्रीजी को विशेष केसरिया पोशाक, पुष्प शृंगार और अलंकार धारण कराए गए। मंदिर परिसर में परंपरागत नंदोत्सव के दौरान एक हजार किलो से अधिक कपड़े, फल और खिलौने उत्साहित भक्तों के बीच उछाले गए। नन्द के घर आनंद भयो, जय कन्हैया लाल की के जयघोष से पूरा मंदिर परिसर गूंज उठा। शाम को ठाकुर श्रीजी की भव्य शोभायात्रा मंदिर से शुरू हुई, जिसे मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने आरती करके रवाना किया। फूलों से सजे रथ पर विराजमान ठाकुर श्रीजी जब नगर भ्रमण के लिए निकले, तो पूरा मार्ग श्रद्धा और भक्ति से भर गया। शोभायात्रा में कुल 22 झांकियां शामिल थीं, जिनमें गणेश जी, तिरुपति बालाजी और राधा-कृष्ण स्वरूप की झांकियां मुख्य आकर्षण थीं।

स्वस्थ भारत के निर्माण के लिए फिट इंडिया मोबाइल ऐप डाउनलोड करे: मांडविया

एजेंसी

पालीताणा। केंद्रीय खेल मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया ने ऑन साइक्लिंग के 36वें संस्करण में सभी नागरिकों से सक्रिय जीवनशैली के लिए फिट इंडिया मोबाइल ऐप डाउनलोड करने आह्वान किया।

डा. मांडविया ने गुजरात के पालीताणा स्थित अपने गृह ग्राम हनोल से फिट इंडिया संडे ऑन साइकिल पहल में भाग लेकर सभी नागरिकों से एक सक्रिय जीवनशैली अपनाने का आह्वान किया। संडे ऑन साइकिल के 36वें संस्करण में राष्ट्रीय कैडेट कोर के युवाओं की भी भागीदारी रही। डॉ. मांडविया ने गांव के पुरुषों और महिलाओं से फिट इंडिया मोबाइल ऐप डाउनलोड करने और कार्बन क्रेडिट सुविधा का उपयोग करने का आग्रह किया।उन्होंने कहा, मैं सभी से फिट इंडिया मोबाइल ऐप डाउनलोड करने और यह देखने का आग्रह करता हूं कि साइकिल से काम पर जाने या गांव में घूमने से कितना कार्बन बच रहा है। इस ऐप को इस तरह से विकसित किया गया है कि यह आपको दूरी

और लगने वाले समय से लेकर हृदय गति आदि तक, आपके स्वास्थ्य के बारे में सभी जानकारी देता है, जो आपके स्वास्थ्य पर नजर रखने के लिए फायदेमंद है। साइकिल चलाना मोटापे से लड़ने और प्रदूषण से निपटने का एक बेहतरीन साधन है। मैं सभी से हमारे फिट इंडिया संडे ऑन साइकिल अभियान का हिस्सा बनने का आग्रह करता हूं। एक स्वस्थ और प्रदूषण मुक्त भारत के निर्माण के अपने मिशन को जारी रखते हुए, युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय ने आज राष्ट्रीय कैडेट कोर के साथ मिलकर देश भर में 5000 स्थानों पर 'फिट इंडिया संडे ऑन साइकिल'का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में लगभग 3000 नमो फिट इंडिया क्लबों ने भी भाग लिया। दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम में 1200 से अधिक उत्साही साइकिल चालकों ने जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम का चक्कर लगाया और डॉ. शिखा गुप्ता द्वारा आयोजित रस्सी कूदने की गतिविधि के अलावा जुम्बा, ध्यान और योग सत्रों का आनंद लिया। इसके अलावा, तलवारबाज नाजिया शेख और बेनी क्रेभा ने साइक्लिंग अभियान के प्रति अपना समर्थन व्यक्त करते हुए कहा कि यह टियर 1 और टियर 2/3 शहरों में मोटापे और वायु प्रदूषण के दुष्प्रभावों के बारे में बहुत जरूरी जागरूकता फैला रहा है। इस अवसर पर तलवारबाज बेनी क्रेभा ने कहा, इतनी बड़ी भीड़ के साथ साइकिल चलाने का यह मेरा पहला अनुभव है। मैं इसका हिस्सा बनकर बहुत खुश हूं। फिट इंडिया संडे ऑन साइकिल लोगों को मोटापे और प्रदूषण जैसी जीवनशैली से जुड़ी बीमारियों के बारे में जागरूक करने की एक बेहतरीन पहल है। लोगों को एक ही जगह पर जुम्बा, योग, रस्सी कूदने से लेकर बैडमिंटन, नेट क्रिकेट आदि जैसी विभिन्न शारीरिक गतिविधियों का आनंद लेते देखना बहुत अच्छा लगा।

हिमाचल प्रदेश में 19 अगस्त तक भारी वर्षा का येलो अलर्ट, शिमला में भूस्खलन

एजेंसी

शिमला। हिमाचल प्रदेश में मानसून का कहर लगातार जारी है। मौसम विभाग ने 19 अगस्त तक राज्य के कई जिलों में भारी वर्षा का येलो अलर्ट जारी किया है। मौसम विभाग के अनुसार, 17 अगस्त को चंबा, कांगड़ा, मंडी, शिमला और सिरमौर जिलों में, 18 अगस्त को केवल कांगड़ा में और 19 अगस्त को कांगड़ा व मंडी जिलों में भारी बारिश की चेतावनी दी गई है। वहीं 20 से 22 अगस्त तक मौसम खराब रहेगा, लेकिन इन दिनों के लिए कोई अलर्ट जारी नहीं किया गया है।

शिमला में भूस्खलन और सुन्नी में बाढ़ जैसे हालात

राजधानी शिमला में बारिश नहीं हुई, जिससे लोगों ने थोड़ी राहत महसूस की, लेकिन छोटा शिमला थाना क्षेत्र के विकासनगर- पंथाघाटी मार्ग पर भारी भूस्खलन हुआ। पहाड़ी से भारी मात्रा में मलबा गिरने के कारण सड़क कई घंटे अवरुद्ध रही। मशीनरी की मदद से एक लेन को खोल दिया गया है, लेकिन पूरी तरह बहाल होने में अभी समय लगेगा। आशंका जताई जा रही है कि सड़क किनारे खड़ी कुछ गाड़ियां भी मलबे में दब सकती हैं। उधर, शिमला के सुन्नी क्षेत्र में सतलुज नदी के उफान पर आने से बाढ़ जैसे हालात बन गए हैं। नदी का पानी आईटीआई, फॉरेस्ट रेस्ट हाउस और सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट तक पहुंच गया। सुन्नी पुल पर आवाजाही बंद कर दी गई है और लोगों को सतलुज से दूर रहने की चेतावनी दी गई है। कांगड़ा जिले में पौंग बांध से छोड़े गए पानी ने भी हालात बिगाड़े हैं। व्यास नदी का जलस्तर अचानक बढ़ने से मंड भोग्रवां गांव में एक बहुमंजिला मकान का हिस्सा बह गया। हालांकि समय रहते घर खाली करा लिया गया, जिससे बड़ा हादसा टल गया। भारी बारिश से सड़कों और यातायात पर सबसे ज्यादा असर पड़ा है। राज्य आपातकालीन परिचालन केंद्र के अनुसार शनिवार शाम तक प्रदेश में दो नेशनल हाईवे और 311 सड़कें अवरुद्ध थीं। इनमें अकेले मंडी जिले की 175 सड़कें शामिल हैं। कुल्लू में 63, कांगड़ा में 25, चंबा में 12 और शिमला में 13 सड़कें ठप रही। कुल्लू में नेशनल हाईवे 305 जहेड खनग के पास बंद है, जबकि किन्नौर में एनएच-5 बाधित है। प्रदेश में बिजली और पेयजल आपूर्ति भी बुरी तरह प्रभावित हुई है। कुल 348 ट्रांसफार्मर बंद पड़े हैं जिनमें से 322 केवल मंडी जिले में हैं। 119 पेयजल योजनाएं ठप हैं, जिनमें मंडी की 44, कांगड़ा की 41 और शिमला की 11 योजनाएं शामिल हैं।

शुभमन गिल हो सकते हैं बाहर, यशस्वी जायसवाल एशिया कप टीम में होंगे : रिपोर्ट

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंग्लैंड के खिलाफ हालिया टेस्ट सीरीज में शानदार बल्लेबाजी प्रदर्शन के बावजूद भारत के टेस्ट कप्तान शुभमन गिल आगामी एशिया कप 2025 टीम में जगह बनाने से चूक सकते हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार टीम प्रबंधन और चयनकर्ताओं का मानना है कि गिल फिलहाल उनकी टी20 योजनाओं में फिट नहीं बैठते, जिससे टूर्नामेंट में उनका खेलना मुश्किल हो जाता है। संयुक्त अरब अमीरात में आयोजित होने वाला एशिया कप 9 सितंबर से शुरू होगा और टी20 प्रारूप में खेला जाएगा। भारत 10 सितंबर को यूएई के खिलाफ अपने अभियान की शुरुआत करेगा। अजीत अगरकर की अगुवाई वाली चयन समिति मंगलवार, 19 अगस्त को मुंबई में टीम की घोषणा करेगी।

जानकारी के मुताबिक गिल की जगह यशस्वी जायसवाल को तीसरे सलामी बल्लेबाज की भूमिका निभाने के लिए चुना जा सकता है। जायसवाल भारत की 2024 टी20 विश्व कप विजेता टीम का हिस्सा थे, लेकिन किसी भी मैच में नहीं खेले। हालांकि गिल के पक्ष में जायसवाल को हटाने के बारे में अनौपचारिक चर्चा हुई थी, लेकिन ऐसा लगता है कि इस सुझाव को खारिज कर दिया गया है। गिल ने आखिरी बार पिछले साल जुलाई में श्रीलंका सीरीज के दौरान भारत का प्रतिनिधित्व टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच में किया था।

गिल ने गुजरात टाइटन्स के साथ ढ्ढक्क 2025 का सफल सीजन खेला जिससे सलामी बल्लेबाज के रूप में उनकी दावेदारी मजबूत हुई। फिर भी प्रबंधन संजू सैमसन और अभिषेक शर्मा की स्थापित सलामी जोड़ी को बनाए रखने के लिए उत्सुक है, जिन्होंने शीर्ष क्रम में अच्छा प्रदर्शन किया है। रिपोर्ट के अनुसार गिल को शामिल करने के लिए तिलक वर्मा को हटाने पर भी चर्चा हुई थी, लेकिन आईसीसी टी20आई बल्लेबाजी रैंकिंग में वर्मा की दूसरे नंबर के बाएं हाथ के बल्लेबाज के रूप में प्रभावशाली स्थिति को देखते हुए इसे अनुचित माना गया।

बीसीसीआई के एक सूत्र के हवाले से कहा गया, 'अगर गिल को शामिल किया जाता है, तो वह सीधे ऊपरी क्रम में बल्लेबाजी करेंगे। अगर उन्हें कोई मैच नहीं मिलता है तो उन्हें टीम में रखने का कोई मतलब नहीं है। साथ ही यह संजू के साथ अन्याय होगा जिन्होंने अच्छा प्रदर्शन किया है। अगर गिल टीम में आते हैं, तो संजू को टीम में जगह नहीं

मिल सकती है और जितेश शर्मा को एक मैच मिल सकता है।'

चीन में आयोजित हुआ रोबोट ओलंपिक्स, जहां रोबोट बने मुक्केबाज, पहलवान और धावक

नई दिल्ली (एजेंसी)। चीन पूरी दुनिया में अपनी टेक्नोलॉजी और अनोखे कामों के लिए जाना जाता है। इस कड़ी में चीन में द वर्ल्ड ह्यूमनॉइड रोबोट गेम्स का आयोजन हुआ। जिसमें 16 देशों की 280 टीमों ने हिस्सा लिया। इस इवेंट में करीब 500 रोबोट्स ने टेबल टेनिस, फुटबॉल, बॉक्सिंग और एथलैटिक्स के कई गेम्स खेले जिसे देखने के लिए बड़ी संख्या में लोग भी जुटे। वहीं ये आयोजन करीब 4दिन चला और रविवार को इसका समापन हुआ।

दरअसल, दुनिया भर में रोबोट्स और आर्टिफिशिएल इंटेलिजेंस को लेकर उत्सुकता है। तेजी से रोबोटिक्स, ऑटोमेशन और एआई का विकास हो रहा है। वहीं चीन ने इस मामले में भी छलांग लगाते हुए दुनिया को अचरज में डाल दिया है। चीन में हुए इस रोबोट ओलंपिक्स ने पूरी दुनिया को रोमांचित किया है। इस आयोजन को ह्यूमनॉयड रोबोट गेम्स नाम दिया गया है, जिसे रोबोट ओलंपिक्स भी कहा जा रहा है।

अक्सर फुटबॉल मैदान पर दिग्गज फुटबॉलर रोनाल्डो, मेसी, बेकहम जैसे खिलाड़ियों को गोल करते हुए देखा गया है। लेकिन इस बार चीन में रोबोट्स ने भी फुटबॉल मैच खेला। इस दौरान इनके दांव देखने वालों की भीड़ जमकर तालियां बजाती दिखीं।

वैभव सूर्यवंशी को एशिया कप के लिए भारतीय टीम में शामिल करें, पूर्व मुख्य चयनकर्ता ने किया समर्थन

मुम्बई (एजेंसी)। पूर्व भारतीय सलामी बल्लेबाज और मुख्य चयनकर्ता क्रिस श्रीकांत ने आगामी एशिया कप 2025 के लिए 14 वर्षीय सनसनी वैभव सूर्यवंशी को भारतीय टीम में शामिल करने का सुझाव दिया है। श्रीकांत का मानना है कि जब असाधारण प्रतिभा और फॉर्म मौजूद हो, तो उम्र कोई बाधा नहीं बननी चाहिए।

अजीत अगरकर की अगुवाई वाली चयन समिति 19 अगस्त को मुंबई में बैठक करेगी जिसमें 9 से 28 सितंबर तक यूएई में होने वाले टी20 एशिया कप के लिए भारतीय टीम को अंतिम रूप दिया जाएगा। भारत का पहला मैच 10 सितंबर को है, इसलिए चयनकर्ता कुछ कठिन फैसले लेने की तैयारी में हैं जिनमें श्रेयस अय्यर, रिंकू सिंह, जितेश शर्मा और रियान पराग जैसे नाम शामिल हैं। इस बीच श्रीकांत द्वारा सूर्यवंशी को सीनियर टीम में जल्द ही शामिल करने के फैसले ने चयन प्रक्रिया को एक नया आयाम दिया है।

सूर्यवंशी ने 2025 में राजस्थान रॉयल्स के लिए आईपीएल में पदार्पण किया। सूर्यवंशी ने गुजरात टाइटन्स के खिलाफ 35 गेंदों में शतक जड़कर IPL इतिहास में किसी भी भारतीय द्वारा बनाया गया सबसे तेज शतक बनाया। उन्होंने अपनी इसी फॉर्म को भारत के अंडर-19 इंग्लैंड दौरे तक जारी रखा, जहां उन्होंने 5 मैचों में 355 रन बनाए जिसमें चौथे वनडे में 143 रन की पारी भी शामिल है।

श्रीकांत ने अपने यूट्यूब चैनल पर कहा, 'आपको निडर होकर खेलना होगा। उसे इंतजार मत करवाइए। उसे परिपक्व होने दीजिए जैसी बातें मत कहिए। वह पहले से ही उल्लेखनीय परिपक्वता के साथ खेल रहा है। उसकी शॉट-मेकिंग एक अलग ही स्तर की है। अगर मैं अध्यक्ष होता, तो मैं उसे अंतिम 15 में शामिल करता।'

साउथ अफ्रीका बनाम ऑस्ट्रेलिया: टी20 सीरीज में शानदार प्रदर्शन का तोहफा, क्वेना मफाका-डेवाल्ड ब्रेविस वनडे टीम में शामिल

केर्न्स (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टी20 सीरीज में चमक बिखेरने वाले क्वेना मफाका और डेवाल्ड ब्रेविस को साउथ अफ्रीका की वनडे टीम में शामिल किया गया है। वनडे सीरीज की शुरुआत से पहले साउथ अफ्रीकी कप्तान टेंबा बावुमा ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा,÷जब आप युवा खिलाड़ियों को देखते हैं, तो यह हमेशा रोमांचक होता है। जाहिर है कि ब्रेविस पर ही सभी की निगाहें हैं। वह अपना दमखम दिखा रहे हैं। अपनी क्षमता दिखा रहे हैं। मैं यह देखने के लिए उत्साहित हूं कि वह वनडे में कितना कमाल दिखा सकते हैं।÷

19 वर्षीय तेज गेंदबाज क्वेना मफाका ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टी20 सीरीज में नौ विकेट अपने नाम किए थे। पहले मैच में उन्होंने 20 रन देकर चार विकेट हासिल किए। अगले मुकाबले में 57 रन देकर तीन शिकार किए। तीसरे मैच में मफाका ने 36

रन देकर दो विकेट चटकाए। वहीं, डेवाल्ड ब्रेविस ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सीरीज में सर्वाधिक रन बनाने वाले बल्लेबाज रहे। उन्होंने तीन पारियों में 90 की औसत के साथ 180 रन बनाए।

ब्रेविस सीरीज के पहले मैच में सिर्फ दो ही रन बना सके थे, जिसके बाद उन्होंने अगले मुकाबले में नाबाद 125 रन की पारी खेली। तीसरे और निर्णायक मैच में ब्रेविस के बल्ले से 53 रन निकले। अब दाएं हाथ के इस बल्लेबाज को वनडे फॉर्मेट में डेब्यू का मौका मिला है। ऑस्ट्रेलिया-साउथ अफ्रीका के बीच 19 अगस्त से वनडे सीरीज की शुरुआत होने जा रही है। पहला मैच केर्न्स में खेला जाना है, जिसके बाद 22 अगस्त को मैके में दूसरा वनडे मैच खेला जाएगा। सीरीज का तीसरा और अंतिम मुकाबला भी मैके में 24 अगस्त को आयोजित होगा।

वनडे सीरीज के लिए साउथ टीम- टेंबा बावुमा (कप्तान), कॉर्बिन बॉश, मैथ्यू ब्रीत्जके, डेवाल्ड ब्रेविस, नंद्रे बर्गर, टोनी डी जोरजी, एडेन मार्करम, क्वेना मफाका, सेनुरन मुथुसामी, केशव महाराज, वियान मुल्डर, लुंगी एनगिडी, लुआन-ड्रे प्रीटोरियस, कगिसो रबाडा, रयान रिकेल्टन, ट्रिस्टन स्टब्स और प्रेनेलन सुब्रायन।

बुमराह 24 कैरेट सोना है, उनके जैसा कोई गेंदबाज नही: पूर्व भारतीय क्रिकेटर

नई दिल्ली (एजेंसी)। पूर्व भारतीय बल्लेबाज आकाश चोपड़ा ने जसप्रीत बुमराह का समर्थन किया है। बुमराह की हाल के दिनो में लगातार आलोचना हो रही है। बुमराह आखिरी बार इंग्लैंड के खिलाफ पांच मैचो की टेस्ट सीरीज में खेले थे। जहा उन्होंने तीन मैच खेले। लेकिन अपने कार्यभार को नियंत्रित करने के लिए अंतिम मैच नही खेल पाए। उस समय भारत 1-2 से पिछड़ रहा था। ऐसे में उनकी अनुपस्थिति ने प्रशंसको और विशेषज्ञो के बीच व्यापक बहस छेड़ दी थी।

आकाश चोपड़ा ने आलोचको को इस तेज गेंदबाज पर अनावश्यक दबाव डालने के प्रति आगाह किया है। उन्होंने जोर देकर कहा कि बुमराह एक दुर्लभ प्रतिभा है और उनके करियर को आगे बढ़ाने के लिए उन्हें सावधानी से संभाला जाना चाहिए।उन्होंने कहा, 'बुमराह जैसा कोई गेंदबाज नही है। उन्हें जबरदस्ती जल्दी रिटायरमेंट के लिए मजबूर न करें क्योंकि वह 24 कैरेट शुद्ध सोना है। वह कोहिनूर हीरा है। वह जितना ज़्यादा खेलेंगे, उतना ही बेहतर होगा। मुझे नहीं लगता

कि वह ज़्यादा टेस्ट क्रिकेट खेलेंगे। लेकिन मैं कहूगा कि जब तक वह खेलने चाहे, तब तक खेलते रहे।'चोपड़ा ने आगे कहा, 'ईमानदारी से कहू तो मुझे नहीं लगता कि वह सभी टेस्ट मैच खेलेंगे। वह अपनी पसंद के हिसाब से खेलेंगे। सही है या गलत, यह कोई नैतिक बहस का विषय नही है। अगर आपके पास उस स्तर का कोई खिलाड़ी उपलब्ध है, तो उसे जब भी मौका मिले, खिलाए।'

नीरज चोपड़ा ने ज्यूरिख में डायमंड लीग 2025 फाइनल के लिए किया क्वालीफाई

नई दिल्ली। मौजूदा विश्व चैंपियन नीरज चोपड़ा ने सिलेसिया चरण के बाद जारी नवीनतम स्टैंडिंग के अनुसार स्विट्जरलैंड के ज्यूरिख में होने वाली डायमंड लीग 2025 फाइनल में पुरुषों की भाला फेंक स्पर्धा के लिए क्वालीफाई कर लिया है। दो बार के ओलंपिक पदक विजेता नीरज चोपड़ा ने सिलेसिया डायमंड लीग में भाग नहीं लिया था, लेकिन इस वर्ष दो डायमंड लीग मैचों में 15 अंक हासिल करने के साथ वह 27 और 28 अगस्त को स्विट्जरलैंड में होने वाले ग्रैंड फाइनल के लिए पहले ही स्थान बना चुके हैं। 2025 डायमंड लीग चैंपियन का फैसला करने के लिए पुरुषों की भाला फेंक स्पर्धा 28 अगस्त को आयोजित की जाएगी। इस सीजन में अपने दो डायमंड लीग मुकाबलों में 27 वर्षीय भारतीय एथलीट ने पेरिस चरण में 88.16 मीटर के थ्रो के साथ जीत हासिल की, जबकि दोहा में उन्होंने 90.23 मीटर का राष्ट्रीय रिकॉर्ड तोड़कर स्वर्ण पदक जीता था। चोपड़ा और वेबर दोनों 15 अंकों के साथ संयुक्त रूप से दूसरे स्थान पर हैं, जबकि त्रिनिदाद और टोबैगो के केशोर्न वाल्कॉट तीन स्पर्धाओं में 17 अंकों के साथ शीर्ष पर हैं। 2012 लंदन ओलंपिक चैंपियन वाल्कॉट सिलेसिया में 82.54 मीटर के साथ दूसरे स्थान पर रहे थे। दो बार के विश्व चैंपियन एंडरसन पीटर्स और ब्राजील के लुईज मौरिसियो दा सिल्वा के भी ज्यूरिख में होने वाले ग्रैंड फाइनल में जगह बनाने की उम्मीद है। नीरज चोपड़ा ने अभी तक ज्यूरिख डायमंड लीग फाइनल में अपनी भागीदारी की पुष्टि नहीं की है।

फिट और बेहतर प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को ही प्राथमिकता दें : मांजरेकर

मुम्बई। पूर्व क्रिकेटर संजय मांजरेकर का मानना है कि भारतीय टीम के मुख्य तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह अगर लगातार दो से अधिक मैच नहीं खेल सकते तो उन्हें मुख्य गेंदबाजी आक्रमण में जगह न देते हुए आराम दिना चाहिये। मांजरेकर के अनसार फिट और बेहतर प्रदर्शन करने के इच्छुक खिलाड़ियों को ही पहले प्राथमिकता दी जानी चाहिए। इस पूर्व बल्लेबाज ने कहा कि मेरे लिए, मैच फिट, उत्साही, और प्रदर्शन करने के इच्छुक खिलाड़ी पहले आते हैं और इन्हें बड़े खिलाड़ियों से पहले टीम में जगह देनी चाहिये। मांजरेकर ने ये बातें बुमराह के कार्यभार प्रबंधन के कारण टीम के लिए लगातार उपलब्धि न रहने को देखते हुए कही है। बुमराह हाल में समाप्त हुई एंडरसन-तेंदुलकर ट्रॉफी में केवल तीन मैच ही खेले। ये भी संयोग रहा कि जिन मैचों में भी वह शामिल नहीं थे। उसमें टीम को जीत

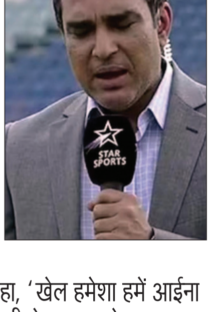

मिली। मांजरेकर ने इसी को लेकर कहा, 'खेल हमेशा हमें आईना दिखाएगा, चाहे हम चीजों को कितना भी बेहतर बताने का प्रयास करें। भारत ने जिन दो टेस्ट मैचों में जीत हासिल की, वे दो मैच थे जिनमें बुमराह नहीं खेले इस सीरीज ने उन्हें और हमें भी एक बड़ा सबक सिखाया है, भारत ने जिन दो टेस्ट जीत हासिल कीं उसमें युवा खिलाड़ी ही शामिल थे। संजय ने आगे कहा, 'इस बार टीम में विराट कोहली, रोहित शर्मा और मोहम्मद शमी जैसे अनुभवी खिलाड़ी भी नहीं थे। इसने हमें खेल ने बताया कि इसी तरह भारत को बुमराह को संभालना चाहिए। अगर वह लगातार दो से अधिक मैच नहीं खेल सकते या कभी-कभी एक से भी अधिक नहीं खेल सकते, तो उन्हें मुख्य टीम में नहीं होना चाहिए।'

ईशान किशन दलीप ट्रॉफी के पहले मैच से बाहर, आकाश दीप को आराम की सलाह

नई दिल्ली (एजेंसी)। विकेटकीपर-बल्लेबाज ईशान किशन दलीप ट्रॉफी के पूर्वी क्षेत्र के पहले मैच से बाहर रहेंगे क्योंकि वह वर्तमान में यूके में नॉटिंघमशायर के साथ काउंटी क्रिकेट के दौरान लगी चोट से उबर रहे हैं। 28 नवंबर से शुरू होने वाले इस मुकाबले के लिए किशन की जगह पूर्वी क्षेत्र की टीम में ओडिशा के आशीर्वाद स्वैन को शामिल किया गया है। किशन को चोट के कारण कई टांके लगाने पड़े, यही वजह है कि उन्हें इंग्लैंड के खिलाफ ओवल में होने वाले पांचवें और अंतिम टेस्ट से पहले ऋषभ पंत की जगह नहीं चुना गया था, क्योंकि सुपरस्टार बल्लेबाज पैर की चोट के कारण बाहर हो गए थे। आखिरकार, ध्रुव जुरेल के बैकअप के रूप में तमिलनाडु के नारायण जगदीशन को उनकी जगह लिया गया।

किशन की चोट गंभीर नहीं है क्योंकि पूर्वी क्षेत्र के लिए अभियान के पहले मैच में न खेल पाना एहतियाती कदम है क्योंकि वह अगले महीने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ घरेलू मैदान पर दो चार दिवसीय मैच खेलने वाली भारत ए टीम में शामिल होने के लिए दौड़ में हो सकते हैं। किशन बेंगलुरु स्थित भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (BCCI) के सेंटर ऑफ एक्सीलेंस (COE) में अपनी रिकवरी और मूल्यांकन जारी रखेंगे। कुमार कुशाग्र उनकी जगह पहली पसंद के विकेटकीपर के रूप में खेल सकते हैं।

इसके अलावा पूर्वी क्षेत्र को तेज गेंदबाज आकाश दीप की सेवाएं भी नहीं मिलेंगी क्योंकि उन्हें आराम करने की सलाह दी गई है। उनकी चोट या अन्य परेशानी को लेकर कोई जानकारी नहीं है। हाल ही में इंग्लैंड दौरे पर जहां वह पीठ दर्द के कारण चौथे टेस्ट मैच में नहीं खेल पाए थे, उन्होंने तीन टेस्ट मैचों में 13 विकेट लिए थे, जिसमें बर्मिंघम में 10 विकेट भी शामिल है और उन्होंने ओवल में अंतिम टेस्ट मैच में एक शानदार अर्धशतक भी बनाया था। असम के मुख्तार हुसैन ने अभिमन्यु ईश्वरन की अगुवाई वाली टीम में उनकी जगह ली है।

ईस्ट जोन अपने अभियान की शुरुआत शुभमन गिल की अगुवाई वाले नॉर्थ जोन के खिलाफ स्टेडियम में करेगा। रियान पराग, ईश्वरन को उप-कप्तान के रूप में अपनी सेवाएं देंगे। टीम में मोहम्मद शमी भी शामिल हैं, जिन्होंने पिछले दो सालों में सिर्फ एक प्रथम श्रेणी मैच खेला है और मुकेश कुमार भी।

दलीप ट्रॉफी के पहले मैच के लिए ईस्ट जोन की टीम

अभिमन्यु ईश्वरन (कप्तान), आशीर्वाद स्वैन (विकेट कीपर), संदीप पटनायक, विराट सिंह, दानिश दास, श्रीदम पॉल, शरणदीप सिंह, कुमार कुशाग्र (विकेट कीपर), रियान पराग (उप-कप्तान), उत्कर्ष सिंह, मनीषी, सूरज सिंधु जायसवाल, मुकेश कुमार, मुख्तार हुसैन और मोहम्मद शमी।

सैंटोस की करारी हार से टूटे स्टार फुटबॉलर नेमार, बीच मैदान पर फूट-फूटकर रोने लगे

ब्राजील के स्टार फुटबॉलर नेमार को अपने पेशेवर क्लब करियर की सबसे बड़ी हार झेलनी पड़ी जिसके बाद वो टूट गए। इस दौरान वह फूट-फूटकर रोते दिखे। सैंटोस को ब्राजीलियन सेरी ए मैच में वास्को दा गामा के हाथों 0-6 से हार झेलनी पड़ी। दूसरे हाफ में 6 में से 5 गोल दागे जाने के बाद सदमे में डूबे नेमार फुल टाइम के बाद रोते दिखे। इस जीत के साथ 16वें स्थान पर काबिज वास्को दा गामा का सैंटोस से दो अंक पीछे 19 अंक रह गया। दोनों क्लब चार टीमों वाले रीलोगेशन जोन से बस थोड़ा आगे थे। लुकास पिटोन के शुरुआती गोल के बाद लिवरपूल और बार्सिलोना के पूर्व फॉरवर्ड कॉटिन्हो ने दूसरे हाफ में वास्को के लिए दो गोल किए। डेविड कोरेया डी फोंसेका, रेयान और डैनिलो नेवेस के गोल ने बेहतरी स्कोरलाइन को और मजबूत किया। नेमार को सहयोगी स्टाफ के एक सदस्य और वास्को दा गामा के मुख्य कोच फर्नांडो डिनिज ने सांत्वना दी जब वह ड्रेसिंग रूम की ओर वापस लौट रहे थे। सैंटोस ने परिणाम पर अपनी नाराजगी व्यक्त की और मैदान की ओर पीठ करके विरोध जताया। इस अपमानजनक हार के परिणामस्वरूप मुख्य कोच क्लेबर जेवियर को तत्काल बर्खास्त कर दिया गया। इस दौरान नेमार ने कहा कि, मुझे शर्म आ रही है। मैं हमारे प्रदर्शन से पूरी तरह निराश हूं। फैंस को विरोध करने का पूरा अधिकार है जाहिर है बिना हिंसा के... लेकिन अगर वे गाली देना और अपमान करना चाहते हैं तो उन्हें पूरा हक है। नेमार ने आगे कहा कि, ये बेहद शर्मिंदगी का एहसास है। मैंने जिंदगी में ऐसा पहले कभी नहीं देखा। बदकिस्मती से ऐसा हुआ। आंसू गुस्से से थे। बदकिस्मती से मैं किसी भी तरह से मदद नहीं कर सकता। खैर ये पूरी तरह से बकवास था। यही सच्चाई है। जले पर नमक छिड़कते हुए नेमार को इस सत्र का तीसरा येलो कार्ड भी मिला। इससे वह बहियो खिलाफ अगले मैच से बाहर हो गए।

सिनसिनाटी ओपन : मेक्टिक-राजीव ने जीता मेंस डबल्स खिताब, डाब्रोव्स्की-राउटलिफ ने विमेंस डबल्स में मारी बाजी

सिनसिनाटी। सिनसिनाटी ओपन के मेंस डबल्स में निकोला मेक्टिक-राजीव राम ने लोरेंजो मुसेट्टी-लोरेंजो सोनेगो को शिकस्त देकर बतौर जोड़ी अपना पहला मास्टर्स 1000 खिताब जीत लिया है। साल के अपने तीसरे ही इवेंट में एक साथ अपना पहला टूर-स्तरीय फाइनल खेलते हुए मेकटिक-राम की जोड़ी ने 90 मिनट तक चले मुकाबले में इतालवी जोड़ी को 4-6, 6-3, 10-5 से शिकस्त देकर बतौर टीम अपनी पहली ट्रॉफी जीती। 41 साल 4 महीने की उम्र में राजीव राम सिनसिनाटी में ओपन एरा के दूसरे सबसे उम्रदराज मेंस डबल्स चैंपियन बन गए हैं। इस मामले में उनसे आगे 42 वर्षीय डेनियल नेस्टर हैं, जिन्होंने 2015 में एडवर्ड रोजर-वेसलिन के साथ यह खिताब जीता था। फाइनल में पहुंचकर मेक्टिक उन चुनिंदा सक्रिय डबल्स खिलाड़ियों में शामिल हो गए, जिन्होंने सभी नौ एटीपी मास्टर्स 1000 टूर्नामेंट्स फाइनल खेले। उनसे पहले यह उपलब्धि सिर्फ रोहन बोपन्ना और माटे पाविक के नाम थी। वहीं दूसरी ओर, विमेंस डबल्स फाइनल में गैब्रिएला डाब्रोव्स्की-एरिन राउटलिफ ने गुओ हान्यू-एलेक्जेंड्रा पानोवा को 6-4, 6-3 से शिकस्त देकर बतौर जोड़ी अपना पहला डब्ल्यूटीए 1000 खिताब जीत लिया। सिनसिनाटी की यह जीत इस सीजन उनका दूसरा और बतौर जोड़ी कुल छठा खिताब है। इस जीत के बाद डब्ल्यूटीए डबल्स रैंकिंग में राउटलिफ सातवें नंबर पर बनी रहेंगी। वहीं, डाब्रोव्स्की पांच स्थान की छलांग लगाकर नंबर 8 पर पहुंच जाएंगी। डाब्रोव्स्की-राउटलिफ ने दो साल पहले मॉन्ट्रियल में पहली बार जोड़ी बनाई थी, जिसके बाद दोनों ने मिलकर पांच खिताब जीते। इनमें यूएस ओपन और डब्ल्यूटीए फाइनल शामिल हैं। इस दौरान जोड़ी ने अपने करियर की सर्वश्रेष्ठ रैंकिंग भी हासिल की। यह सिनसिनाटी में राउटलिफ का लगातार दूसरा खिताब है।

कपिल बैंसला ने एशियाई निशानेबाजी चैंपियनशिप में जीता गोल्ड

नई दिल्ली (एजेंसी)। हरियाणा के पलवल के कपिल बैंसला ने कजाकिस्तान के श्यामकेंट में चल रही 16वीं एशियाई निशानेबाजी चैंपियनशिप राइफल/ पिस्टल/ शॉटगन में भारत को पहला स्वर्ण पदक दिलाया। उन्होंने 10 मीटर एयर पिस्टल पुरुष जूनियर फाइनल में 243.0 का स्कोर बनाया और उज्बेकिस्तान के इल्खोमबेक ओबिदजोनोव को 0.6 अंक से पीछे छोड़कर दूसरे स्थान पर रहे।

कपिल के हमवतन जोनाथन गेविन एंटनी ने 220.7 अंक बनाकर कांस्य पदक जीता, लेकिन 24 शॉट के फाइनल में 22वें शॉट के बाद बाहर हो गए। इससे पहले कपिल ने क्वालीफिकेशन में 579 अंक बनाकर चौथा स्थान हासिल किया था और जोनाथन के साथ शीर्ष आठ में जगह बनाई थी। जोनाथन 582 अंक के साथ दूसरे स्थान पर रहे थे। मुकेश नेलावली जोनाथन से केवल दो इनर 10 अंक कम थे और तीसरे स्थान पर रहे।

इस तरह फाइनल में तीन भारतीय खिलाड़ी पहुंच गए। कोरियाई खिलाड़ी किम डूयोन ने भी 582 अंक हासिल करके शीर्ष स्थान हासिल किया, लेकिन जोनाथन की तुलना में आंतरिक 10-रिंग में कम से कम छह शॉट ज्यादा लगाए। इल्खोमबेक फाइनल में सबसे तेज रहे, कपिल लगातार उनका पीछा करते रहे और फिर 15वें शॉट के बाद पहली बार उनसे आगे निकल गए। उज्बेक खिलाड़ी ने 20वें शॉट के बाद बढ़त हासिल कर ली और अंतिम दो में कपिल से पूरे एक अंक आगे थे।

इसके बाद युवा भारतीय खिलाड़ी ने 10.8 और 10.6 अंक हासिल किए जबकि इल्खोमबेक ने 10.4 अंक हासिल करने के बाद 23वें शॉट में 9.4 अंक हासिल किए और कपिल को खिताब दिला दिया। कपिल और जोनाथन ने विजय तोमर के साथ मिलकर कुल 1723 अंक हासिल करके इस स्पर्धा का टीम रजत पदक जीता। कोरिया ने 1734 अंक के साथ स्वर्ण और मेज़बान कजाकिस्तान ने कांस्य पदक जीता।

सीनियर पुरुष वर्ग के फाइनल में एकमात्र भारतीय अनमोल जैन 155.1 अंकों के साथ छठे स्थान पर रहे। चीन के हू काई ने स्वर्ण पदक जीता जबकि चीन ने इस स्पर्धा में टीम स्पर्धा का स्वर्ण भी जीता। अनमोल ने आदित्य मालरा और सौरभ चौधरी के साथ मिलकर 1735 अंकों के संयुक्त प्रयास से टीम स्पर्धा का रजत पदक जीता। इस प्रकार भारत ने पहले दिन का अंत एक स्वर्ण और दो रजत पदक के साथ किया, जबकि दूसरे दिन मंगलवार को महिला और जूनियर महिला एयर पिस्टल के फ़ाइनल निर्धारित समय पर खेले जाने थे।

डब्ल्यूडब्लयूई चैम्पियन लोगन पॉल की नेटवर्थ करोड़ों में पहुंची

सेन डियागो। मॉडल नीना अगडल से शादी करने वाले डब्ल्यूडब्लयूई के अमेरिकी चैम्पियन लोगन पॉल करोड़ों की संपत्ति के भी मालिक हैं। लोगन ने रेसलर के साथ ही यूट्यूबर के तौर पर भी काम करके मोटी कमाई की है। उनकी नेटवर्थ करोड़ों में पहुंच गयी है। लोगन डब्ल्यूडब्लयूई के अलावा प्राइम हाइड्रेशन, यूट्यूब चैनल और स्पॉन्सरशिप से से भी कमाई करते हैं। उनकी कुल संपत्ति लगभग 150 मिलियन डॉलर है। वहीं एक रिपोर्ट के अनुसार, यूट्यूब से उनकी अनुमानित मासिक आय 300,000 डॉलर से 600,000 डॉलर के बीच है। वह 2017, 2018 और 2021 में सबसे ज्यादा कमाई करने वाले यूट्यूबर भी थे। उनका पॉडकास्ट भी बहुत लोकप्रिय है। वह अक्सर पॉडकास्ट पर डब्ल्यूडब्लयूई के आंकड़े पेश करते हैं, जिससे भी इसकी लोकप्रियता तेजी से बढ़ी है। इसके अलावा, उनके पास अलग-अलग प्लेटफॉर्म पर 90 मिलियन से ज्यादा फॉलोअर्स हैं, जिससे उन्हें कमाई करने और स्पॉन्सरशिप डील हासिल करने में सहायता मिलती है। एक अनुमान के अनुसार वह वह प्रायोजकों से किये करार से हर महीने 150,000 डॉलर से 300,000 डॉलर कमाते हैं।

'सैयारा' में कम स्क्रीन प्रेजेंस पर शाद रंधावा ने दिया रिएक्शन

मोहित सूरी की फिल्म सैयारा में एक्टर शाद रंधावा ने रॉकस्टार प्रिंस का किरदार निभाया है। वह मोहित सूरी की लगभग हर फिल्म में नजर आते हैं। हाल ही में बातचीत के दौरान शाद ने मोहित सूरी के साथ अपने रिश्ते को लेकर बात की।

फिल्म सैयारा में आपकी स्क्रीन प्रेजेंस भले ही कम है, लेकिन आपका किरदार बेहद दमदार है। इसके लिए आपने क्या तैयारी की?

मैं पहले से ही कुछ अलग करने की कोशिश कर रहा था। उसी दौरान निर्देशक मोहित सूरी ने मेरी मेहनत और लगन को नोटिस किया। शायद उन्होंने मेरी कुछ तस्वीरें यशराज फिल्म्स की कास्टिंग डायरेक्टर शानू शर्मा जी को भेजीं। इसके बाद शानू जी का मेरे पास कॉल आया और उन्होंने मुझे इस रोल के बारे में बताया। इसके बाद हमने वर्कशॉप्स कीं, किरदार को समझा और उसके लिए तैयारी की। जब सबको लगा कि मैं इस किरदार के लिए ठीक हूं, तब जाकर मुझे यह रोल मिला। इस किरदार से जुड़ी एक दिलचस्प बात यह थी कि हम अलग-अलग लुक्स ट्राय कर रहे थे। एक समय ऐसा भी आया जब हमने 'रॉकस्टार' जैसी लंबे बालों वाली स्टाइल पर विचार किया। लेकिन जब हम मेकअप रूम में उस लुक की टेस्टिंग कर रहे थे, तभी मोहित सर आए और बोले कि यह लुक जम नहीं रहा। फिर हमने कॉर्नर हेयरस्टाइल ट्राय की और वो सबको पसंद आ गई। अंत में वही लुक फाइनल हुआ।

क्या आपने मोहित सूरी से कभी कहा कि फिल्म सैयारा में आपकी स्क्रीन प्रेजेंस और ज्यादा होनी चाहिए थी?

देखिए, इस तरह की बातें तो अक्सर हर एक्टर और डायरेक्टर के बीच होती रहती हैं। हर एक्टर को लगता है कि उसका रोल थोड़ा और बड़ा होना चाहिए था। कभी लगता है कि कोई सीन कट कर दिया गया जो फिल्म में रह सकता था। मैं मोहित सूरी का दोस्त हूं, लेकिन ऐसा नहीं है कि मैं इसलिए कुछ नहीं कहता। ये बातें हर एक्टर के मन में होती हैं और डायरेक्टर से शेयर भी की जाती हैं। मगर एक पॉजिटिव तरीके से बिना किसी झगड़े के। असल में, सेट पर भले ही कुछ मतभेद हो जाएं, लेकिन जैसे ही हम सेट से बाहर आते हैं, सारी शिकायतें भूलकर फिर से दोस्त बन जाते हैं।

'एक चतुर नार' बनीं दिव्या खोसला की चालाकी में फंसेंगे नील

दिव्या खोसला और नील नितिन मुकेश की आगामी फिल्म 'एक चतुर नार' का टाइटल और फर्स्ट लुक आज जारी किया गया है। टाइटल और मोशन पोस्टर से फिल्म एक कॉमेडी-ड्रामा मालूम पड़ता है। फिल्म के पहले लुक के सामने आने के बाद अब दर्शक फिल्म को लेकर उत्साहित हैं।

सब्जी काटती नजर आईं दिव्या

मेकर्स ने फिल्म के दो मोशन पोस्टर जारी किए हैं। एक पोस्टर में दिव्या खोसला और नील नितिन मुकेश एक टेबल के पास खड़े हैं। टेबल पर टमाटर और शिमला मिर्च समेत कुछ सब्जियां रखी हुई हैं। दिव्या गाजर को चाकू से काटते हुए कैमरे की तरफ चालाकी भरी नजरों से देख रही हैं। बगल में नील नितिन मुकेश थ्री पीस पहने हाथों में बंदूक लिए खड़े हैं। इस मोशन पोस्टर में पीछे कैलाश खेर की आवाज में कुछ लाइन्स भी फिल्म के टाइटल से जुड़ी सुनाई दे रही हैं।

एक दूसरा पोस्टर जारी किया गया है। इसमें दिव्या खोसला आंखों में काला चश्मा लगाए दिख रही हैं। जबकि उनकी चोटी नागिन के शेप में मुंह फैलाए हुए है और उस पर एक फिलप वाले फोन में नील नितिन मुकेश घबराए हुए नजर आ रहे हैं। इस मोशन पोस्टर में भी पीछे गाने की कुछ लाइन्स सुनाई दे रही हैं।

12 सितंबर को रिलीज होगी फिल्म इस कॉमेडी ड्रामा फिल्म में नील और दिव्या एक दम अलग अवतार में दिखाई देंगे। टी-सीरीज द्वारा निर्मित इस फिल्म को उमेश शुक्ला ने निर्देशित किया है। 'एक चतुर नार' 12 सितंबर को सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली है।

फ्रेंचाइजी फिल्मों में काम करने पर खुद को लकी मानते हैं रितेश

अभिनेता रितेश देशमुख पिछले दो दशक से भी ज्यादा समय से इंडस्ट्री में सक्रिय हैं। इस दौरान उन्होंने अलग-अलग जॉनर की कई फिल्मों में काम किया है। हालांकि, रितेश अपने करियर में कुछ एक फ्रेंचाइजी फिल्मों का भी हिस्सा रहे हैं, जो उनके करियर में हिट फिल्में लेकर आया है। इसमें 'हाउसफुल' और 'मस्ती' जैसी फ्रेंचाइजी फिल्में शामिल हैं। वो एक बार फिर 'मस्ती' के चौथे पार्ट में भी नजर आने वाले हैं। अब इन फ्रेंचाइजी फिल्मों को लेकर बात करते हुए अभिनेता ने इन्हें अपने लिए भाग्यशाली बताया है।

अभिनेता रितेश देशमुख ने अपने करियर में फ्रेंचाइजी फिल्मों में काम करने को लेकर बात की। अभिनेता ने कहा कि मुझे लगता है कि हर अभिनेता को भाग्यशाली महसूस करना चाहिए अगर वे किसी फ्रेंचाइजी का हिस्सा हैं या किसी का दूसरा भाग बना है। आप जानते हैं कि वर्तमान में मैं शायद 4 फिल्में कर रहा हूं। मैं उन फिल्मों का हिस्सा बनकर बेहद खुशकिस्मत महसूस करता हूं जिन्हें लोग शायद इतना पसंद करते हैं कि हम तीसरा और चौथा भाग बना पा रहे हैं। यह सब दर्शकों की बदौलत है।

हालांकि, फिल्मों के लगातार सीक्वल बनने और उनके स्वाभाविक रूप से बंद हो जाने के सवाल पर रितेश का कहना है कि थकान दर्शकों पर या दर्शकों की थकान पर निर्भर करेगी और साथ ही ये किश्तें लंबे गैप पर आ रही हैं। ये पांच साल और यहां तक कि दस साल के गैप पर भी आ रही हैं। इसलिए ऐसा नहीं है कि वे हर महीने वापस आ रही हैं।

वर्कफ्रंट की बात करें तो रितेश देशमुख आखिरी बार फ्रेंचाइजी फिल्म 'हाउसफुल 5' में नजर आए थे। इसके अलावा आने वाले वक्त में भी वो दो फ्रेंचाइजी फिल्मों 'मस्ती 4' और 'धमाल 4' में नजर आएंगे। इसके अलावा वो मराठी फिल्म 'राजा शिवाजी' में भी प्रमुख भूमिका में नजर आएंगे। इस फिल्म का निर्देशन भी खुद रितेश देशमुख कर रहे हैं।

ईशा कोप्पिकर अपनी अगली फिल्म रॉकेटशिप में निभा रही हैं एक स्नेही माँ का किरदार

नवोदित कलाकारों को प्रोत्साहित करने में हमेशा आगे रहने वाली ईशा कोप्पिकर ने एक बार फिर युवा प्रतिभाओं के समर्थन में अपनी प्रतिबद्धता दिखाई है। अभिनेत्री, जो नए और उभरते टैलेंट को बढ़ावा देने की पुरजोर समर्थक रही हैं, उन्होंने एक बार फिर सुभाष घई के प्रतिष्ठित संस्थान व्हिसलिंग वुड्स इंटरनेशनल अकेडमी में फिल्म निर्माण के छात्रों को अपना प्यार और समर्थन देकर यह सिद्ध किया है। यह प्रतिभाशाली अभिनेत्री छात्रों के डिप्लोमा प्रोजेक्ट रॉकेटशिप में अभिनय कर उन्हें अपनी अनुभवपूर्ण उपस्थिति और स्टार पॉवर के जरिए सहयोग प्रदान किया है, जिससे इन नवोदित फिल्मकारों की रचनात्मक दृष्टि को साकार करने में मदद मिली है।

ईशा कहती हैं, जब छात्रों ने मुझसे संपर्क किया, तो मैं इस प्रोजेक्ट में उनका साथ देने के लिए निःसंकोच तैयार हो गई। इन बच्चों में अपार क्षमता है, जो उस वक्त साफ़ नजर आई जब इन्होंने मुझे अपनी कहानी और स्क्रिप्ट सुनाई। मैं इन बच्चों से खुद को जोड़ पाती हूँ क्योंकि इन्होंने भी सब कुछ ज़ीरो से शुरू किया है, ठीक वैसे ही जैसे मैंने किया था। मेरे पास इंडस्ट्री में कोई गॉडफादर नहीं था। इसलिए जब मैं इन्हें अपने सपनों की शुरुआत करते देखती हूँ, तो वो मेरे लिए प्रेरणादायक और संतोषजनक अनुभव होता है। आज रॉकेटशिप का पहला पोस्टर जारी किया गया, जो यह दर्शाता है कि यह फिल्म एक भावनात्मक और दिल को छू लेने वाली कहानी पेश करेगी जैसी दर्शकों ने पहले शायद ही कभी देखी हो। फिल्म में माँ-बेटी के रिश्ते को केंद्र में रखा गया है, और ईशा कोप्पिकर का किरदार विशेष रूप से दर्शकों की भावनाओं को झकझोरने के लिए गढ़ा गया है। यह फिल्म व्हिसलिंग वुड्स के छात्रों की अकादमिक यात्रा का एक समापन प्रोजेक्ट है, और एक प्रतिष्ठित अभिनेत्री जैसे ईशा की भागीदारी इस प्रोडक्शन को ऊँचाई प्रदान करती है, साथ ही छात्रों को इंडस्ट्री का वास्तविक अनुभव भी मिल रहा है। उनका इस शैक्षिक पहल का हिस्सा बनना यह दर्शाता है कि वे मेंटरशिप और व्यावहारिक अनुभव की महत्ता को भलीभांति समझती हैं, जो आने वाली पीढ़ी के फिल्म निर्माताओं और कहानीकारों के विकास के लिए बेहद आवश्यक है। ईशा की यह भागीदारी सिर्फ एक अभिनय तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक खूबसूरत सहयोग का प्रतीक है—जहां उनका अनुभव युवा दिमागों को दिशा देता है और युवाओं की नई सोच व नवाचार उनके खुद के रचनात्मक सफर को भी प्रेरित करती है। स्थापित और उभरती प्रतिभाओं के इस मेल से एक ऐसा सीखने का माहौल बनता है जहाँ पारंपरिक फिल्म निर्माण की समझ और आधुनिक कहानी कहने की तकनीकें एक-दूसरे को समृद्ध करती हैं।

अनिल शर्मा का ऐलान, जल्द आएगी गदर 3

सनी देओल और अमीषा पटेल अभिनीत फिल्म गदर-2 को रिलीज हुए दो साल पूरे हो चुके हैं। अब इसके निर्देशक अनिल शर्मा ने आगे की योजनाओं पर अपनी बात साझा की। अनिल शर्मा ने बातचीत में इसके सीक्वल की सबसे खास बात बताई और साथ ही आगे आने वाले गदर 3 की योजना भी साझा की। अनिल शर्मा ने बताया कि गदर 2 की सबसे अच्छी बात यह रही कि पहले भाग में बच्चे दिखे उत्कर्ष शर्मा बड़े होकर उसी भूमिका में नजर आए। उन्होंने कहा, शायद ऐसा पहली बार है कि एक बच्चे का किरदार निभाने वाला कलाकार बड़ा होकर उसी भूमिका को दोबारा निभा रहा है।

फिल्म बनाते समय सबसे बड़ी चुनौती कहानी को पहले भाग से आगे बढ़ाना था। अनिल शर्मा ने कहा, हमें कहानी को आगे ले जाने के लिए काफी समय सोचना पड़ा। जब कहानी सही ढंग से बनी, तो इंतजार वाकई सफल साबित हुआ। फिल्म निर्देशक से पूछा गया कि क्या गदर की सफलता ने उनकी उम्मीदें गदर 2 के लिए बढ़ा दी थीं? उन्होंने बताया, गदर दर्शकों के दिलों में बस गई थी।

पिछले बीस सालों से हर कोई मुझसे पूछता रहा कि मैंने गदर 2 क्यों नहीं बनाई। मुझे पता था कि लोगों को इन किरदारों से बहुत प्यार है। मुझे फिल्म की सफलता पर पूरा भरोसा था। असल में, मैंने रिलीज से पहले ही कहा था कि यह फिल्म 500 करोड़ रुपए कमाएगी। शुक्र है कि भगवान ने मेरी बात सुन ली। अनिल शर्मा ने कहा, फिल्म के किरदारों से जुड़ी मोहब्बत ही इसे एक विरासत बनाती है। उन्होंने बताया, गदर 3 पर काम शुरू हो चुका है। कहानी जारी रहेगी क्योंकि दर्शकों के दिलों में यह कहानी और किरदारों की खास जगह बनी हुई है।

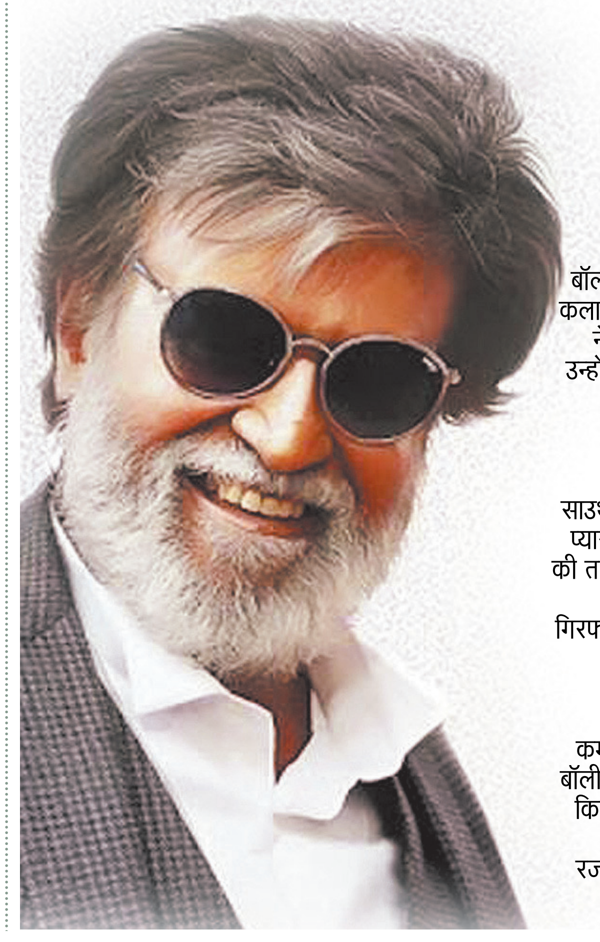

रजनीकांत से लेकर श्रुति हासन तक, साउथ के इन कलाकारों ने बॉलीवुड में जमाई धाक

बॉलीवुड इंडस्ट्री में कभी हॉलीवुड तो कभी साउथ के कलाकारों ने काम किया है। साउथ के कई कलाकारों ने साउथ की फिल्मों में बेहतरीन अदाकारी की तो उन्होंने बॉलीवुड में भी खूब नाम कमाया है। आज हम साउथ के उन कलाकारों के बारे में जानेंगे जिन्हें बॉलीवुड के दर्शकों ने खूब प्यार दिया।

रजनीकांत

साउथ के जिस अभिनेता को बॉलीवुड में सबसे ज्यादा प्यार मिला वह रजनीकांत हैं। साउथ में उन्हें भगवान की तरह माना जाता है। हालांकि बॉलीवुड में भी उनका योगदान कुछ कम नहीं है। उन्होंने बॉलीवुड में गिरफ्तार, चालबाज, हम और बुलंदी जैसी फिल्में कीं। इसके लिए उनकी खूब सराहना हुई।

कमल हासन

कमल हासन साउथ के दिग्गज कलाकार हैं। उन्होंने बॉलीवुड में सदमा, सागर और चाची 420 में अभिनय किया है। बॉलीवुड में उनके अभिनय को खूब सराहा गया है। बॉलीवुड में शोहरत के मामले में वह रजनीकांत से कम नहीं हैं। उन्होंने 4 नेशनल अवॉर्ड और 19 फिल्मफेयर अवॉर्ड जीते हैं।

श्रुति हासन

पिता कमल हासन की तरह श्रुति हासन ने साउथ में खूब नाम कमाया है। बॉलीवुड में कई बेहतरीन फिल्मों से उन्होंने अपनी अदाकारी की छाप छोड़ी है। उन्होंने रमैया वस्तावैया में बेहतरीन अदाकारी की। इसके अलावा अक्षय कुमार के साथ गब्बर फिल्म की। बॉलीवुड के दर्शकों को उनकी अगली फिल्म का इंतजार है।

आर माधवन

आर माधवन ने न सिर्फ अलग-अलग भाषाओं की फिल्मों में काम किया बल्कि वह हर किरदार में आसानी से ढल गए। फिल्म रहना है तेरे दिल में से उन्हें बॉलीवुड में पहचान मिली। साला खड़ूस में उनके अभिनय की काफी तारीफ हुई। बॉलीवुड में उन्होंने रंग दे बसंती, 3 इडियट्स और तनु वेड्स मनु में अच्छा काम किया है।

धनुष

साउथ के सुपरस्टार धनुष ने बॉलीवुड में कई फिल्मों में काम किया। उन्होंने फिल्म रांझणा से दर्शकों का दिल जीत लिया। उन्होंने बॉलीवुड को दिग्गज कलाकार अमिताभ बच्चन के साथ फिल्म शमिताभ में बेहतरीन अदाकारी की। उनका गाना कोलावेरी डी भी काफी लोकप्रिय हुआ।

असिन

बॉलीवुड में आने से पहले ही असिन साउथ में काफी मशहूर हो चुकी थीं। उन्होंने तमिल और तेलुगु में कई कामयाब फिल्में कीं। उन्होंने बॉलीवुड में आमिर खान के साथ फिल्म गजनी में काम किया। इसके बाद उन्होंने सलमान खान, अक्षय कुमार और अजय देवगन के साथ काम किया।

सिद्धार्थ

सिद्धार्थ ने बॉलीवुड में ज्यादा फिल्में नहीं कीं हैं लेकिन फिल्म रंग दे बसंती में उन्होंने बेहतरीन किरदार निभाया है। बताया जाता है कि उन्हें बॉलीवुड से कई ऑफर मिले लेकिन उन्होंने कई ऑफर स्वीकार नहीं किए। अभिनेत्री अदिति राव हैदरी के साथ शादी को लेकर वह सुर्खियों में रहे।

तमन्ना भाटिया

तमन्ना भाटिया साउथ की मशहूर अभिनेत्री हैं। उन्होंने बाहुबली से खूब नाम कमाया। बॉलीवुड में उनकी एंट्री बहुत खास नहीं रही। उन्होंने चांद सा रोशन चेहरा और हिम्मतवाला में अभिनय किया। बॉलीवुड में उनके आइटम गानों आज की रात और नशा को खूब पसंद किया गया।

मेकअप के कुछ नए फंडे

प्राचीन समय से ही सुंदर लगना महिलाओं को प्रिय लगता है तब नानी-दादी जो भी घरेलू उपाय खुद करती थीं, वही वे आगे बेटियों को बताती थीं इसलिए वही पुराने उपाय आगे चलते जाते थे मगर अब तो महिलाएं पढ़-लिख कर बहुत आगे तक जा चुकी हैं।

अब उन्हें नए जमाने के साथ सौंदर्य साधनों के फंडों को भी बदलना चाहिए। उन्हें तोड़ देने चाहिएं पुराने प्रयोग और अपनाने चाहिएं नए प्रयोग। बस ध्यान देना चाहिए कि नया प्रयोग आप पर फूहड़ न लगे। ड्रैस के अनुसार और अवसर के अनुसार उनका प्रयोग करना चाहिए।

रैड लिपस्टिक मानी जाती है कि बहुत लाऊड लगती है। ऐसा नहीं है। यदि आप ब्राऊनिश रैड या मैरूनिश रैड लगाती हैं तो ये अक्सर सब पर जंचती हैं। बिल्कुल रैड लिपस्टिक सभी पर नहीं जंचती। हॉट रैड लिपस्टिक जब भी लगाएं उसके साथ मेकअप बहुत कम करें। आई मेकअप भी बिल्कुल हल्का करें। हॉट रैड लिपस्टिक के साथ डार्क मेकअप अच्छा नहीं लगता। वैसे आजकल रैड कलर फैशन में है।

पाऊडर यदि कम मात्रा में एकसार चेहरे और गर्दन पर लगाया जाए तो चेहरा आकर्षक लगता है और पाऊडर की मोटी परत लगाई जाए तो त्वचा पपड़ीदार फ्लैकी लगती है इसलिए जब भी पाऊडर लगाएं, एकस्ट्रा पाऊडर को ब्रश से झाड़ कर कम कर दें। पुराने लोगों का मानना है कि पाऊडर लगाने से महिला उम्र से बड़ी लगती हैं।

हाथों और पैरों की उंगलियों की नेल पालिश पहले लोग एक ही रंग की लगाते थे। बहुत सालों तक इसी प्रयोग को अपनाया जाता रहा है। अब लोग हाथों और पैरों की उंगलियों पर अलग-अलग नेल पालिश लगाते हैं। पहले लिपग्लॉस बस 40 वर्ष तक की महिलाएं लगाती थीं पर अब 30 वर्ष के बाद लिपग्लॉस लोग अक्सर नहीं लगाते। फिर भी आप लिपग्लॉस लगाना चाहें तो पहले होंठों पर लिप बाम लगाएं, फिर लिप डिफाइनर से लिप को आकार देकर उसमें लिपग्लॉस लगाएं ताकि लिपग्लॉस होंठों से बाहर न फैले। पहले महिलाएं लिपस्टिक लगाते समय लिप लाइनर से आऊट लाइन बनाती थीं और उसमें लिपस्टिक लगाती थीं। नए फैशन में लिपस्टिक सीधी होंठों पर लगाई जाती है क्योंकि इससे नैचुरल लुक आती है। इससे होंठ सॉफ्ट रहते हैं। वैसे आजकल लाइट शेड की लिपस्टिक ज्यादा पसंद की जाती है। अगर आप आऊटलाइन लगाना ही चाहते हैं तो हल्की आऊट लाइन करें और उसे ब्लैंड कर लें।

शिमरी मेकअप आज का नया फंडा है। यह मेकअप यदि ढंग से किया जाए तो आपको जवां बना देता है। शिमर का प्रयोग आप कहीं भी, कभी भी कर सकते हैं। कैमल, पिंक शिमर वाला मेकअप आप दिन और रात कभी भी कर सकते हैं। लिपस्टिक त्वचा से मेल करती लगाएं। यह नया फंडा है। पहले लोग ड्रैस और मेकअप अनुसार लिपस्टिक के रंग का चयन करते थे, अब त्वचा से मेल खाती लगाते हैं। आंखों के प्राकृतिक रंग से मेला खाता आईशैडो लगाने से आंखों की तरफ ध्यान ही नहीं जाता। नए फंडे के अनुसार शैडो का रंग आंखों के प्राकृतिक रंग से विपरीत होना चाहिए जैसे ग्रीन आंखों वाले को पर्पल, मोव, सिल्वर, गोल्ड या कोरल टोन वाला आई शैडो लगाना चाहिए। नीली आंखों वाले को लाइट पिंक पीच, कॉपर, ब्रांज और गोल्ड लगाना चाहिए। भूरी आंखें वालों को एमरल्ड ग्रीन, मोव, पर्पल, डीप प्लम शेड का प्रयोग करना चाहिए।

बिखर गयी हरियाली

बारिश की बूंदों के साथ ही हर ओर खिल गयी है हरियाली। प्रकृति भी में घुल गया है एक अलग ताजगी का अहसास। इस पर दस्तक दे चुका है सावन का महीना यानी हरी-हरी मेहंदी और चूड़ियों के श्रंगार के साथ इठलाने का मौसम आ गया। प्रकृति से प्रेरित आशाओं, उमंगों और ऊर्जा का प्रतीक हरा रंग इन दिनों फैशन व होम डेकोर में ट्रेंड बनकर उभरा है। यह रंग आत्मसम्मान और जीवन में आगे बढने् का उत्साह जगाता है। ऐसे में हरे रंग की ड्रेस न सिर्फ ट्रेंडी है, बल्कि उसे पहनकर आप अपने भीतर महसूस करेंगी आत्मविश्वास के भाव। ऐसा ही कुछ है हरे रंग की एक्सेसरीज के साथ। हरे रंग की बेल्ट, हैंडबैग से लेकर फुटवेयर, ईयरिंग्स इत्यादि भी हैं फैशन में टॉप पर। मेकअप की बात करें तो हरे रंग की नेलपॉलिश लगती है फैशनेबल व ऐलीगेंट, जबकि ग्रीन आईलाइनर देता है नाइट पार्टीज में ग्लैमरस लुक। वहीं होम डेकोर आइटम्स व एक्सेसरीज में भी ग्रीन कलर है चलन में। विशेषज्ञों के मुताबिक इंटीरियर डेकोरेशन में इस रंग का इस्तेमाल तनाव से दूर रखने में मदद करता है। हरे रंग के कुशन्स, पर्दे, लैंप इत्यादि के सुरुचिपूर्ण इस्तेमाल से आप जगा सकती हैं अपने घर में फ्रेशनेस व सौंदर्य का अहसास।

खूबसूरत आंखों के लिए 3 स्टेप्स

आंखों को आकर्षक बनाने के लिए मस्कारा का दो कोट ही काफी है। आंखें चेहरे की जुबां होती हैं, इसलिए इन्हें आकर्षक बनाने के लिए आप मस्कारा का प्रयोग कैसे करें, बता रहे हैं मेकअप आर्टिस्ट भारत एंड डोरिस।

मस्कारा आंखों के मेकअप का अहम हिस्सा है। इसका सही तरीके से प्रयोग किया जाए तो यह सबकी नजर आपकी ओर खींच सकता है। लैशेज को बढ़ाने, उन्हें वॉल्यूम देने और आकर्षक बनाने के लिए आप यहां दी गई बातों पर गौर जरूर फरमाएं।

बढ़ाएं 1,2,3 कदम

ब्लैक लिक्विड आई लाइनर से लैशेज के एकदम पास बारीक रेखा खीं चें। ताकि बरौनियों के बालों के बीच का खाली हिस्सा नजर न आए और अगर आप आर्टिफिशियल लैशेज भी लगाएं तो वह अप्राकृतिक न लगे। नीचे वाली बरौनियां बहुत हलकी हों तो काजल जरूर लगाएं।

पहला कदम

सबसे पहले लैशेज को घना और मोटा दिखाने के लिए लैश प्राइमर लगाएं। जब बरौनियों के सिरों पर पहुंचे तो आहिस्ता से हिलाएं ताकि बाल एक-दूसरे से चिपकें नहीं। जब लैशेज (बरौनियां) सूख जाएं तब दूसरा कोट लगाएं।

दूसरा कदम

लैशेज को तीन हिस्सों में बांटकर मस्कारा लगाएं। बीच वाले बालों को माथे की तरफ, भीतर वाले बालों को भीतरी भौंहों की तरफऔर आंख के बाहरी कोने वाले बालों को कान के थोड़ा ऊपर वाले हिस्से की तरफ। ऐसा करने से बरौनियों को सही आकार मिलेगा और वह लंबी व घनी भी नजर आएंगी।

तीसरा कदम

अब नीचे की बरौनियों के पतले बालों पर मस्कारा लगाने के लिए मस्कारा ब्रश को वर्टिकल (खड़े/सीधे) अंदाज में पकड़ें और बरौनियों पर सावधानीपूर्वक हलका-हलका छुआएं ताकि आंखों के आसपास न लगने पाए। एक जगह पर रुकें नहीं। हाथों का संतुलन बनाए रखें, वरना कहीं ज्यादा और कहीं कम लगेगा।

बिना मेकअप दिखें खूबसूरत

संवरने-संवारने की कला स्त्री को जन्मजात मिली है। यह आर्ट उसे सुंदर दिखने को भी प्रेरित करती है। भागदौड़ भरी जिंदगी में रोज अच्छी तरह मेकअप करना तो संभव नहीं, मगर डाइट और लाइफस्टाइल को सही रखकर खुद को आकर्षक बनाया जा सकता है मेकअप एक कला है। कई बार इससे चेहरे पर कमाल हो सकता है। रोज आईने के सामने काफी वक्त बिताती हैं स्त्रियां ताकि वे सुंदर दिख सकें। कई स्त्रियां मानती हैं कि बिना मेकअप के वे सुंदर नहीं दिख सकतीं। हालांकि सादगी का अपना महत्व है और बिना बहुत वक्त या पैसा खर्च किए भी सुंदर बने रहा जा सकता है। एक प्याली गर्म पानी सुबह की शुरुआत के लिए इससे अच्छी कोई आदत नहीं है। सुबह उठने के बाद चाय के बजाय गर्म पानी पिएं। इसमें नींबू की कुछ बूंदें डालें। ओवरवेट होने या डाइबिटीज जैसी समस्या न हो तो थोड़ा शहद भी मिला सकती हैं। इससे ताजगी का अहसास होगा। एसपीएफ युक्त क्रीम उम्र बढन् के साथ-साथ धूप, धूल और समय का प्रभाव चेहरे पर पडने् लगता है। इसलिए सनक्रीम हमेशा साथ रखें। तेज धूप हो या नहीं, इसका इस्तेमाल करें। इसके प्रयोग से आप बहुत सी समस्याओं से बची रह सकती हैं। आदतें सुधारें चेहरे को सिकोड़ते हुए बात करने, माथे पर बल डालने, आखें मिचमिचाने, हथेलियों को गालों पर टिकाने, पिंपल्स नोचने, आंखें मलने जैसी आदतें त्वचा को नुकसान पहुंचाती हैं। चेहरे की त्वचा संवेदनशील होती है, इसलिए इस पर दाग-धब्बे बहुत पड़ते हैं। ये आदतें झुर्रियों को न्यौता भी दे सकती हैं। अति से बचें नियमित फेशियल से चेहरे की मांसपेशियों में कसाव आता है, रक्त संचार ठीक होता है और चेहरा साफ व सुंदर दिखता है, मगर ब्लीच का इस्तेमाल सोच-समझकर करें। ज्यादा मसाज व ब्लीच से संवेदनशील त्वचा को नुकसान हो सकता है। स्क्रबिंग-क्लेंजिंग रोज सोने से पहले क्लेंजिंग मिल्क से चेहरा साफ करें। हफ्ते में एक बार स्क्रबिंग करें। इससे डेड स्किन हटेगी। क्लेंजर से त्वचा बैक्टीरिया रहित होगी, अतिरिक्त तेल व डेड स्किन सेल्स निकलेंगी। ड्राई स्किन के लिए मॉइश्चराइजर वाला क्लेंजर अच्छा है। पानी खूब पिएं रोज सात-आठ गिलास पानी पीना चाहिए। शरीर से हानिकारक तत्व निकालने का यह सर्वोत्तम उपाय है। यह सौंदर्य को बढ़ाता है और त्वचा को समस्या रहित रखता है। मॉइश्चराइजर मुलायम त्वचा के लिए मॉइश्चराइजर जरूरी है। प्रदूषण, मौसम, धूप और धूल से त्वचा को क्षति पहुंचती है। स्किन को सही पोषण और नमी मिले तो रिंकल्स कम पडेंगे् और वह ड्राई होने से बची रहेगी। चेहरे और गर्दन के अलावा हाथों और पैरों पर भी मॉइश्चराइजर का प्रयोग करें। टोनर टोनर से न सिर्फ त्वचा में कसाव आता है, बल्किइससे रोमछिद्र भी भरते हैं और चेहरे से अतिरिक्त तेल बाहर निकल जाता है। शैंपू सप्ताह में कम से कम तीन दिन बालों को किसी अच्छे शैंपू से धोएं और कंडीशनर का इस्तेमाल करें। चिपचिपे-गंदे बाल चेहरे का लुक बिगाड़ देते हैं। दिन में दो-तीन बार और सोने से पहले बालों में कंघी करना न भूलें। 1. बालों की समय-समय पर ट्रिमिंग कराएं, ताकि वे दोमुंहे न हों और खराब न दिखें। 2. नाखून चबाने की आदत से बचें। उन्हें सही ढंग से तराशें और अच्छा शालीन नेल पेंट लगाएं। 3. अत्यधिक कॉफी या चाय पीने से बचें। 4. कम से कम सात घंटे की अच्छी नींद लें। 5. दांतों की सुबह-शाम सफाई करें। कई बार ब्रश करने से दांतों का इनैमल कम होता है और वे पीले दिखने लगते हैं। दिनभर में दो बार ब्रश करना काफी है। 6. उठने-बैठने और चलने-फिरने में अपने बॉडी पोस्चर का ध्यान रखें। 7. तले-भुने खाद्य पदार्थों, मैदे से बनी चीजों का इस्तेमाल कम करें। तरल पदार्थों का सेवन अधिक करें। 8. सही फिटिंग के कपड़े पहनें और ऐसे फैशन ट्रेंड्स का अनुकरण करने से बचें जो आपके व्यक्तित्व पर न फबें। जिस ड्रेस में कंफर्टेबल महसूस करती हों, वही पहनें। -